नववर्ष विशेषांक
जनवरी-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 4
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
सरस्वती साधना
स्वप्नेश्वरी साधना
हेरम्ब गणपति साधना
व्यापार उन्नति साधना
कुल देवता साधना
पूरे परिवार की उन्नति हेतु

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-	हनुमान यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	गणपति यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

संतान सुख की प्राप्ति हेतु : मनोवांछित संतानप्राप्ति प्र.

अपने कार्यों की सफलता हेतु : सफलताप्राप्ति प्रयोग

शत्रु को परास्त करने हेतु : शत्रुनाशक प्रयोग

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

शिष्य धर्म 34
गुरुवाणी 35
नक्षत्रों की वाणी 46
मैं समय हूँ 48
वराहमिहिर 49
इस मास दीक्षा 65
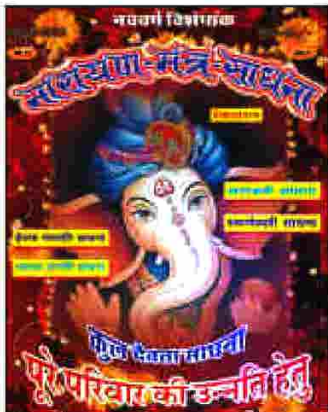
साधनाएँ

व्यापार की उन्नति प्र. 22
साधना में सफलता प्र. 23
सम्मोहन साधना 24
संतानप्राप्ति प्र. 25
शत्रुनाशक प्रयोग 26
शाकंभरी साधना 27
हेरम्ब गणपति साधना 36
कुल देवता साधना 38
सरस्वती साधना 50
स्वप्नेश्वरी साधना 53

ENGLISH

Tripur Sunadari Sad. 63
Kalgyan Sadhana 64

विशेष

अमृत बिन्दु 2
साधनात्मक शब्दार्थ 29
गोम्पा के देश में 30
संगति से गुण-दोष 45
क्रिया योग 57

ज्योतिष

मस्तिष्क रेखा 41

आयुर्वेद

गाजर 43

स्तोत्र

श्री विद्या 54

योग

महिलाओं के लिए 60

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली:110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

ॐ वरै वर्षतु है वदाम्यहे सः श्रियं
स देवान पुत्रो च कीर्तिश्च वै सहः।।

यह वर्ष हमारे लिये मंगलमय हो, वरदायक हो, लक्ष्मीयुक्त हो। हमारे पुत्र योग्य हों, हमारा परिवार कीर्तिमान हो, स्वस्थ हो, सफल हो।

हृदय के भाव ही मुख्य हैं

उस दिन स्वामी विवेकानन्द बीमार थे, ज्वर से पीड़ित होकर शय्या पर लेटे थे। एक सौ चार डिग्री से कुछ ज्यादा ही तापमान था और सारा शरीर ज्वर के ताप से जल रहा था। विवेकानन्द को पीड़ा सहन न हो रही थी। उनके पास ही उनके गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस चुपचाप बैठे विवेकानन्द को निहार रहे थे, परन्तु बोल कुछ भी नहीं रहे थे।

आखिर विवेकानन्द से चुप न रहा गया। बड़ी खीझ में भरकर रूठते हुए वे परमहंस से बोले–

'मैं ज्वर से मरा जा रहा हूँ, और आप कुछ कर ही नहीं रहे हैं? मैं जो कह रहा हूँ, क्या आप सुन नहीं पा रहे हैं?'

–'तू यह सब मुझसे क्यों कह रहा है, मां (काली) को कह दे न!' श्री रामकृष्ण ने सपाट उत्तर दिया।

–'मैं मां से कह तो रहा हूँ, पर...' विवेकानन्द कुछ उदास होकर हुए बोलते-बोलते ही रुक गए।

श्री रामकृष्ण ने बात को वहीं काटते हुए बोले–'**तुम्हारी वाणी में आर्द्रता नहीं है, अपनत्व और दीनता नहीं है। इसीलिए मां तक तेरी आवाज नहीं पहुंच रही है।** अरे! जब तेरी वाणी का असर मुझ पर ही नहीं हो रहा है, तो मां काली के चित्त पर क्या होगा? उसके लिए तो स्वर में दीनता, विह्वलता जरूरी है रे! बालक पूरे अपनत्व से कहे और मां सुने नहीं, ऐसा असम्भव है।'

वस्तुतः मंत्र जप हो या प्रार्थना, उसके प्रभावकारी होने के लिए यह बेहद आवश्यक है, कि वह पवित्र हृदय से की गई हो, पूर्ण मनोयोग से की गई हो। मात्र यंत्रवत् की गई कोई भी साधना या उपासना सफलीभूत नहीं हो पाती, क्योंकि मूल वस्तु तो मन के भाव ही होते हैं, जिससे देवी-देवता या सद्‌गुरुदेव भी कृपा करने को विवश हो जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पुकार हृदय की गहराइयों से की जाए, तो तुरन्त सद्‌गुरुदेव के चरणों में स्वीकार होती है, इसमें कोई संशय नहीं। अतः सफलता हेतु अपने हृदय एवं विचारों को पवित्र बनायें।
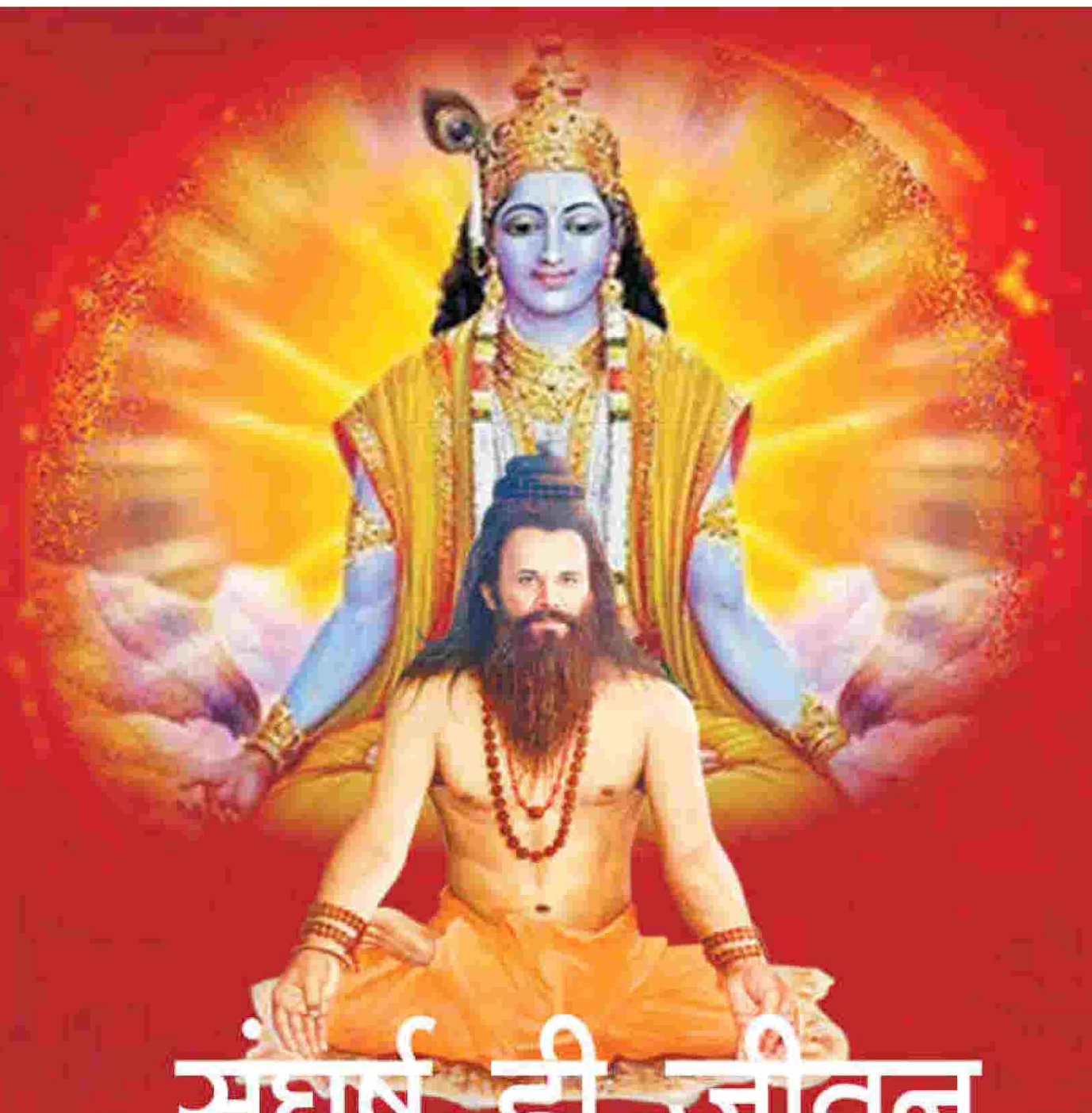
संघर्ष ही जीवन

जीवन में कर्म क्या है और वास्तविक जीवन किसे कहते हैं, संन्यास का वास्तविक तात्पर्य क्या है, जीवन में निरन्तर भय को समाप्त कर उन्मुक्त किस प्रकार रहा जा सकता है जिससे जीवन में विजय प्राप्त हो तथा निरन्तर संघर्ष करने की भावना आ सके। इस संदर्भ में सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में उन्हीं की विशिष्ट शैली में यह महत्वपूर्ण प्रवचन–

श्री कृष्णोपनिषद से मैं अपनी बात प्रारंभ कर रहा हूँ। वेदव्यास ने उन उपनिषदों का संग्रह किया, संकलन किया। उन्हीं में से एक श्री कृष्णोपनिषद का यह श्लोक है :

पूर्ण सदैव विजयं च देवं देव्यो सदा ज्ञान मृतं वदैवं
मृतवत्स पुत्र, भवतां च तुल्यं विजय सदैवं श्रवतां श्री देवः।
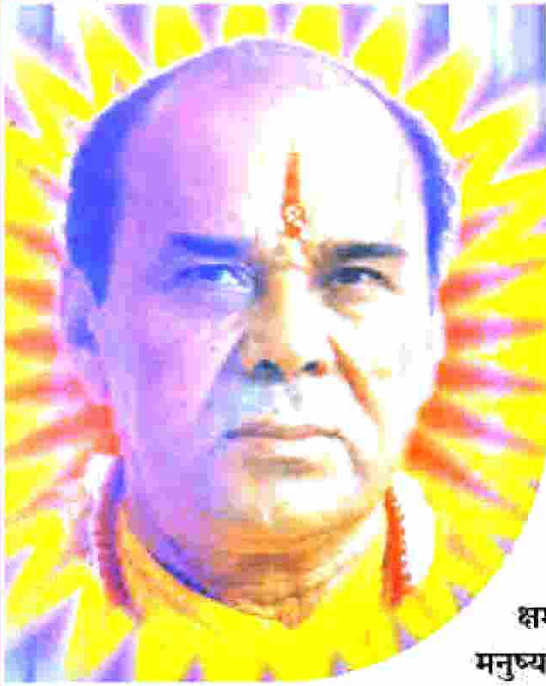
वेदव्यास ने इस श्लोक में यह बात कही है कि मनुष्य का अर्थ है मृत या मरा हुआ, जिंदा केवल इसलिए है कि वह सांस ले रहा है और यह सांस समाप्त हो जाती है तो शरीर के सारे अंग-प्रत्यंग तो उसके होते हैं, मगर फिर भी वह मृत कहलाता है। हाथ, पाँव, आँख, नाक, कान, उनमें कहीं कोई त्रुटि नहीं आती मगर फिर भी वह मृत कहलाता है। और जीवन इसलिए कहलाता है कि सांस लेने की क्रिया उसमें है और सांस लेता भी है, सांस निकालता भी है। अंदर लेता भी है। छोड़ता भी है और तीन कार्य करता है, सांस लेता है, धारण करता है और छोड़ता है।

और वेदव्यास ने मनुष्य को मृत क्यों कहा? क्या सांस लेने या नहीं लेने से ही व्यक्ति जीवित या मृत हो जाता है?

वास्तव में मृत व्यक्ति वही है जिनमें हौसला नहीं है, साहस नहीं है, क्षमता नहीं है और संकटों से मुकाबला करने की क्षमता नहीं है। ऐसे लोग मृत हैं, मनुष्य तो हैं, जिन्दा भी हैं, घूमते-फिरते भी हैं, मगर उसके बाद भी मरे हुए से हैं, इसलिए कि उनमें एक नीरसता है उसमें कोई नवीनता नहीं है कोई नयापन नहीं है, कोई चेतना नहीं है, कोई प्रबुद्धता नहीं है।

और यदि जीवन में संकट नहीं है, बाधाएं नहीं हैं, अड़चने नहीं हैं तो मनुष्य जीवन हो ही नहीं सकता। मनुष्य जीवन उसको कहते हैं कि हर पग पर समस्याएँ आएं, कठिनाइयाँ आएं और हम उन पर विजय प्राप्त करें। वही मनुष्य जीवित रह सकता है जो ऐसा कर सकता है।

और विज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि जिन्होंने संघर्ष किया जो संघर्षशील व्यक्ति हैं या जानवर हैं या जीव हैं वे ही जीवित रहें। जिनमें संघर्ष करने की, समस्याओं से जूझने की क्षमता समाप्त हो गई वे मर गए। आपने बहुत हो-हल्ला सुना होगा कि पहले हमारे बीच में डायनासोर होता था जो संसार का सबसे लंबा-चौड़ा प्राणी था, मगरमच्छ, हाथी या व्हेल मछली तो उसके सामने एकदम तुच्छ प्राणी थे और अभी एक फिल्म भी बनी थी डायनासोर पर। आज से हजारों साल पहले आखिरी डायनासोर की मृत्यु हो गई और एक का भी अस्तित्व नहीं रहा, एक भी डायनासोर जीवित नहीं रहा।

क्यों नहीं रहा।

इतना बड़ा, लंबा-चौड़ा प्राणी तुम्हारे जैसे कम से कम पांच सौ आदमी उसके मुंह में आ सके वह जीवित नहीं रहा और आप जीवित हैं, इसका क्या कारण था? वह क्यों नहीं जीवित रहा?

और आपको मालूम होना चाहिए कि आज से तीस हजार साल पहले भी मेंढक था, और आज भी जीवित है। सबसे पुराने जो जीव हैं केवल दो हैं जो पिछले हजारों सालें से हमारे बीच हैं—एक तो कॉकरोच और दूसरा मेंढक। बाकी सब जातियाँ धीरे-धीरे नष्ट होती गई, बदलती गई या परिवर्तित होती गई। पर, उन दोनों में कुछ परिवर्तन नहीं आया और दोनों आज भी वही है जो आज से तीस हजार साल पहले थे। तीस हजार साल बहुत बड़ी उम्र है, और तीस हजार वर्षों से वे जीवित हैं। ऐसा क्यों है?

ऐसा इसलिए है कि वे प्रत्येक परिस्थिति में जीवित रहने की क्षमता रखते हैं। आपने देखा होगा कि बरसात में मेंढक पानी में तैरते हैं, आवाज करते हैं और जब समाप्त हो जाती है बरसात तो किसी खोखले पत्थर में वह
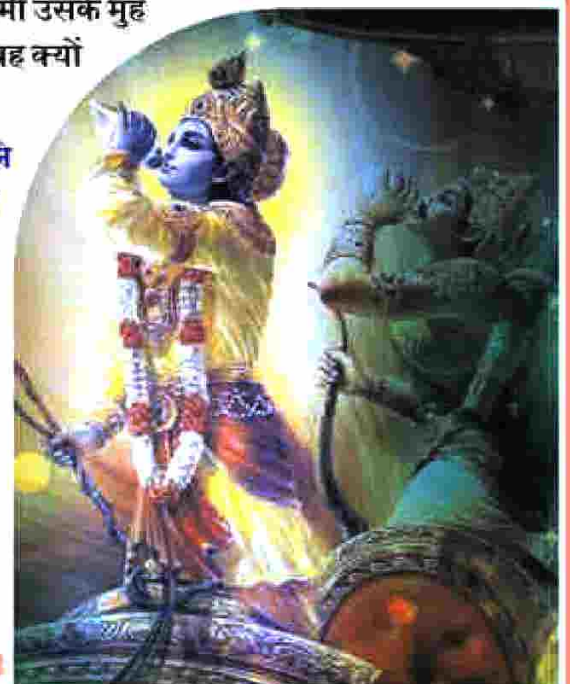
मेंढक घुस जाता है और उसके ऊपर एक परत आ जाती है, वायु की परत हो या रेत की परत हो।

यदि आप भी चार घंटा बाहर बैठ जाए तो आपके ऊपर रेत की परत आ जाएगी और यदि आप सफेद कुर्ता पहन कर चांदनी चौक में निकल जाएं तो आपके ऊपर एक धुएं की, रेत की परत आ जाएगी और कुर्ता काला हो जाएगा और चार दिन तक चलेंगे तो आपके ऊपर मैल की परत चढ़ जाएगी और दस दिन आप स्नान नहीं करें तो आपके शरीर पर मैल इतना चढ़ जाएगा कि आप को चार बार साबुन लगाना पड़ेगा।

आपने खुद चढ़ाया नहीं उस मैल को, मगर मैल चढ़ा, कपड़ों पर भी चढ़ा। मेंढक छः महीने उस पत्थर में रहते है और बाहर से उनको ऑक्सीजन मिलती ही नहीं। उसके बाद भी वे जीवित रहते हैं। तो जो जीव छः महीने बिना ऑक्सीजन के रह सकता है वह मर नहीं सकता, क्योंकि उसमें संघर्ष करने की क्षमता है, एक पॉवर है, एक ताकत है। वह एहसास करता है कि जीवन में एक संघर्ष है कठिनाई है और कठिनाई होते हुए भी वह जीवित रहने की एक क्षमता और ताकत रखता है। इसलिए मेंढक जीवित है इसलिए कॉकरोच जीवित है। इसलिए ऊंट जीवित है कि वह तीस दिन तक बिना पानी के जीवित रह सकता है, हम और तुम नहीं रह सकते। बिना पानी के वह तीस दिन चल सकता है, मरुस्थल में, रेगिस्तान में। यह केवल एक छोटा सा उदाहरण है, मगर यह छोटा उदाहरण इसलिए दे रहा हूं कि आप समझ सकें कि जिंदा वही व्यक्ति रहता है जिसमें संघर्ष करने की पूर्ण क्षमता हो, और संघर्ष वह कर सकता है जिसके सामने समस्याएं आएं।

समस्याएं आएंगी ही नहीं तो संघर्ष करेगा भी क्या? किससे संघर्ष करेगा दीवारों से? पत्थरों से? वह संघर्ष होता ही नहीं। और पति-पत्नी के बीच संघर्ष नहीं होता मतभेद होते हैं? आप मतभेद को लड़ाई-झगड़ा कहते हैं, मैं कहता हूं मतभेद हैं।

वह कहती है कि प्लाजा पर फिल्म देखने जाऊंगी, आप कहते हैं नहीं रिवोली पर पिक्चर देखने जाएंगे। लड़ाई-झगड़ा कोई नहीं है, बस वह एक अलग बात कहती है आप एक अलग बात कहते हैं। और यह एक टकराहट है आपके जीवन की इसलिए घर में एक टकराव की, एक तनाव की स्थिति है। वह आपका संघर्ष नहीं है। आपका संघर्ष पुत्र से भी नहीं है। आपका संघर्ष पत्नी से भी नहीं है और आपका संघर्ष खुद से भी नहीं है। इसलिए आप समाप्त हो जाते हैं धीरे-धीरे क्योंकि कोई संघर्ष नहीं है।

और हमारे ऋषि दो सौ साल, तीन सौ साल जीवित रहे वह हमने सुना और यदि आप उस साधनात्मक लेवल पर हैं तो आप देख सकते हैं कि पांच सौ साल, हजार साल के ऋषि योगी आज भी जीवित हैं और इतनी आयु लिए हुए हैं। और हम केवल साठ साल या सत्तर साल जीवित रह पाते हैं।

ऐसा क्यों हो रहा है कि हम साठ साल की आयु में ही मर जाते हैं। सत्तर साल के होकर मर जाते हैं, बहुत मुश्किल से गिन कर के अस्सी साल के दो चार व्यक्ति आप मुझे दिल्ली में दिखा पाएंगे। सौ साल किसी के होते हैं भारत सरकार उसका अभिनंदन करती है।

क्या सौवां साल प्राप्त करना बहुत बड़ी घटना है? मेंढक ने तो साठ हजार साल आयु प्राप्त कर ली।

आज व्यक्ति सौ साल भी उम्र प्राप्त नहीं कर पाता, व्यक्ति इसलिए टूट जाता है क्योंकि उसके सामने संघर्ष है ही नहीं और संघर्ष नहीं है तो

व्यक्ति का जीवन एक रस हो जाता है, और जहाँ एक रसता है वहाँ मृत्यु है। आज सुबह उठे, स्नान किया, पैंट पहनी, कुर्ता पहना, नाश्ता किया, टिफिन हाथ में लिया और ऑफिस चले गए, फिर ऑफिस से वापस आए, पत्नी की भी सुनी, दो बातें पत्नी को सुनाई, खाना खाया और सो गए। तीस दिन महीने के ऐसे ही होता है। एक संडे के अलावा ऐसा ही होता है। बस संडे को कहते हैं आज संडे है आठ बजे अखबार पढ़ते हैं और पड़े रहते हैं, बैड टी लेते हैं। अगला संडे भी वैसा ही होता है।

जीवन में कोई प्रॉब्लम आई, कोई समस्या, कोई तनाव आया, कुछ ऐसी अनिश्चितता आई कि कल क्या होगा या एक घंटे बाद क्या होगा, किसी ने तलवार लेकर आपके सिर पर रखी? कोई बंदूक की गोली लेकर आपके सामने खड़ा हुआ?

हुआ ही नहीं, आप बस बचते रहें। बचना आपका धर्म है। इसका मतलब यह नहीं कि आप ए.के. 47 के सामने खड़े हो जाए कि गुरुजी ने कहा है, संघर्ष करना। मगर यदि कोई सामने खड़ा हो जाए तो आपमें यह क्षमता होनी चाहिए कि आप उसे धक्का देकर उसके सीने पर खड़े हो सकें। इतनी ताकत आपमें होनी चाहिए और वह ताकत तब आ सकती है जब आप में आत्मबल हो। यदि आत्मबल नहीं है तो आप जीविन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। और ज्योंहि कोई गोली चली आप मर जाएंगे और यदि आत्मबल है तो आप खड़े होकर उसे एक लात मारेंगे, उसकी ए.के. 47 राइफल एक तरफ गिरेगी और वह एक तरफ गिरेगा। आप उसकी छाती पर बैठकर सफलता प्राप्त कर लेंगे।

दोनों स्थितियाँ आपके सामने हैं। प्रत्येक व्यक्ति भयभीत है, जब संसार में पैदा होता है, उस क्षण से लगाकर मृत्यु तक उसके जीवन में और कुछ नहीं होता बस भय होता है, और वह भय पीछा करता है। मां-बाप भय पैदा करते हैं उसके मन में कि बाहर मत जाना सड़क पर एक्सीडेंट हो जाएगा और यह तू मत खाना इससे तकलीफ हो जाएगी और उसको हर क्षण हम कोसते रहते हैं कि तुम्हें यह नहीं करना है, तुम्हें यह नहीं करना है, ऐसा करने से तकलीफ हो जाएगी, ऐसा करने से यह हो जाएगा, ऐसा करने से वह हो जाएगा और हम उसे भय के अलावा कुछ देते ही नहीं क्योंकि हम खुद भी भय से पैदा हुए हैं और हमने उनको भय दिया और भय दिया इसलिए व्यक्ति कायर बना, बुजदिल बना। हम अपने लड़कों को ताकतवान नहीं बना सके, साहसवान नहीं बना सके।

कोई अस्सी किलो का आदमी ही ताकतवान नहीं बनता। गांधी जी तो बयालीस किलो के ही थे सिर्फ और आप और हम से बहुत ज्यादा ताकतवान थे, अंग्रेजों से लोहा लिया, एक संघर्ष किया लाखों लोगों से और उनकी वाणी में इतनी ताकत थी कि हजारों लोग सूली पर चढ़ गए, फांसी पर चढ़ गए, गोलियाँ खा गए। आपके कहने से एक व्यक्ति भी गोली नहीं खाएगा। आपके कहने से एक व्यक्ति भी संघर्ष नहीं करेगा। आपके कहने से एक व्यक्ति भी कॉलेज छोड़ कर सड़क पर नहीं उतरेगा आपके कहने से एक व्यक्ति भी अपनी पत्नी को छोड़ कर जेल में नहीं जाएगा।

आपमें और उस आदमी में ऐसा फिडरेंस क्या था यह तो अभी की घटना है, साठ साल पहले की।

फिडरेंस यह है कि आपमें आत्मबल नहीं है। उस व्यक्ति में आत्मबल था कि मैं ऐसा करके छोड़ूंगा और आपमें आत्मबल नहीं है तो आप सोचते हैं कि होगा या नहीं होगा। आप बस कहते हैं चलो कोशिश कर लेते हैं, देख लेते

हैं, उम्मीद तो नहीं है फिर भी कोशिश कर लेते हैं यहीं से आपका भय स्टार्ट हो जाता है। और जब भय आरंभ हो जाता है तो उस भय के साथ मृत्यु जुड़ी होती है। क्योंकि मृत्यु और भय एक ही शब्द है।

आपने सैनिक को देखा होगा। आर्मी वाले क्या करते हैं कि आर्मी ऑफिसर एक दिन में उनको एक हजार बार एक लाइन बुलवाते हैं। 'जो डरा सो मरा' बस, उनकी यही प्रार्थना होती है, उनकी स्तुति भी यही होती है, कोई ॐ जय जगदीश हरे नहीं करते वो। सुबह उठते ही सबसे पहले यही बोलते हैं कि जो डरा सो मरा। फिर छोड़ते हैं तो भी यही कहते हैं—जो डरा सो मरा। पूरे दिन भर में एक सैनिक को एक हजार बार बुलवाते हैं वो। एक दूसरे से मिलते हैं, बात करते हैं तो नमस्ते नहीं करते वो कहते हैं—जो डरा सो मरा। दूसरा भी कहता है—जो डरा सो मरा। यदि आप आर्मी फील्ड में जाएं तो वहां दीवारों पर कुछ और लिखा नहीं होता, श्री कृष्ण शरणं मम लिखा नहीं होता, भगवान श्री कृष्ण या राम जी की जय ऐसा लिखा नहीं होता। वहां केवल यही लाइन लिखी होती है।

यह क्या चीज है? ऐसा क्यों करते हैं? भय निकालने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसी कोशिश करते हैं इसलिए वह उन हथगोलों और बमों के बीच निर्भीकता से चला जाता है। मर सकता है, जिंदा भी रह सकता है। मगर जिंदा रहने के चांस ज्यादा होते हैं क्योंकि उनमें एक हिम्मत, एक साहस, एक क्षमता पैदा होती है कि देखा जाएगा। जीवन के एक छोर पर जन्म है, एक छोर पर मृत्यु है, हम दोनों के बीच में हैं—मर जाएंगे तो मर जाएंगे। और जिंदा रह जाएंगे तो जिंदा रह जाएंगे।

कृष्ण ने भी अर्जुन को यही कहा था गीता में, कि अर्जुन तुम बहुत कायर, तुम बहुत बुजदिल हो क्योंकि तुम्हें ऐसा ही पैदा किया गया। तुम भयभीत हो, तुममें ताकत और निर्भीकता नहीं है, तुममें क्षमता नहीं है, तुममें हौसला नहीं है और मैं कहता हूं कि तू मरण को प्राप्त कर, तू मर जा पहले। यदि तू मर भी जाएगा तो स्वर्ग मिलेगा आगे जहाँ अप्सराएँ नृत्य करती हैं। जो कृष्ण ने कहा मैं वह बात दोहरा रहा हूँ स्वर्ग है, नर्क है, अप्सराएँ हैं या नहीं हैं मैं इस विषय को नहीं उठा रहा हूँ। जो कृष्ण ने कहा मैं उस बात को कर रहा हूँ। उस अर्जुन को समझाने के लिए श्री कृष्ण ने कहा—कि यदि तू जिंदा रह गया तो विजय प्राप्त करेगा, लोग जय-जयकार करेंगे और आने वाली पांच हजार पीढ़ियां तुम्हें याद करेंगी। दोनों स्थितियों में तुम्हें लाभ ही लाभ है, हानि है ही नहीं। जीत जाओगे तो भी लाभ है, मर जाओगे तो भी लाभ है।

और अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हुआ, धनुष बाण हाथ में लिया गांडीव हाथ में लिया और उन पर शरसंधान कर के तीर संधान करके अपने सामने जितने भी खड़े थे उन्हें समाप्त करके विजय प्राप्त की। यहां तक कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई अभिमन्यु की युद्ध में मृत्यु हो गई। यहां तक की द्रोणाचार्य की भी मृत्यु हो गई उनके गुरुजी, यहां तक की भीष्म की भी मृत्यु हो गई ,मगर फिर भी सारे पांडव—अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर और श्री कृष्ण जीवित रहे, मर नहीं सके। क्या विशेषता थी कि वे मर नहीं सके और दुर्योधन, दुःशासन जो थे वे

मर गए। ऐसा हुआ क्या था? युद्ध तो दोनों में बराबर हो रहा था, बराबरी थी दोनों में, दोनों के गुरु एक ही थे, द्रोणाचार्य उनके, भी गुरु थे और द्रोणाचार्य उनके भी गुरु थे। कौरवों को भी द्रोणाचार्य ने पढ़ाया और पांडवों को भी द्रोणाचार्य ने पढ़ाया। लेकिन कौरवों में भय था कि हम हारेंगे इसमें दो राय नहीं है। हम हार जाएंगे क्योंकि उधर कृष्ण बैठे हैं। और पांडवों को पूर्ण विश्वास था कि हम हार ही नहीं सकते, क्योंकि हमारे साथ कृष्ण खड़े हैं। हम कहां से हारेंगे, हारने का सवाल ही नहीं है।

यह भय और अभय के बीच की स्थिति थी और वह व्यक्ति जिंदा रह सकता है जो संघर्ष कर सकता है। जो संघर्ष करने की क्षमता रखता है, जो संघर्ष को अपने जीवन में निमंत्रण देता है, जो संघर्ष को बुलाता है, जो अपने सामने संघर्ष को उत्पन्न करता है और फिर संघर्ष से जूझता है वही सफलता प्राप्त कर सकता है और जूझ कर सफलता प्राप्त करता है तो आनंद असीम आनंद की अनुभूति होती है। कोर्ट में आप केस लड़ते हैं तो हर बार भयभीत रहते हैं कि हारेंगे या जीतेंगे कहीं हमारा वकील दूसरे के साथ तो नहीं मिल गया क्या है पता नहीं और आपके मन में तनाव और तनाव के अलावा कुछ नहीं होता। मगर जब आप जीत जाते हैं तो आपके चेहरे की प्रसन्नता और मुस्कुराहट उतनी तेज होती है कि शीशा भी एकदम तड़क जाता है।

उस दिन क्या हो गया था और आज क्या हो गया है? पहले आप भयग्रस्त थे जीते तो भय से मुक्त हुए इसलिए यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो जूझना ही पड़ेगा—तनाव के साथ नहीं विश्वास के साथ, दृढ़ता के साथ।

और जब संन्यासी दीक्षा लेता है एक संन्यासी, गृहस्थ नहीं तो निर्भीकता से दीक्षा लेता है। हममें से प्रत्येक संन्यासी है। आप में से कोई गृहस्थ है ही नहीं क्योंकि पत्नी आपकी है नहीं, पुत्र आपका है नहीं, पति आपका है नहीं, बंधु-बांधव आपके है नहीं, मकान-जायदाद आपके हैं नहीं। अगर ये आपके होते तो आपके साथ चिता पर चले जाते ये सब। कोई जाता नहीं है मैंने तो देखा है नहीं, अपने सत्तर साल के इतिहास में मैंने तो देखा नहीं कि पति गया तो पत्नी भी साथ में मरी, मकान को भी जला दिया, नोट के टुकड़े भी अंदर आग में डाल दिए, बक्से भी अंदर डाल दिए, हीरे-मोती भी अंदर डाल दिये। ऐसा मैंने तो देखा नहीं शायद आपने भी नहीं देखा। सुना बस राम नाम सत्य है।

अब आगे तो किसने देखा। और हम स्नान करके वापस घर आते हैं फिर तराजू में दस छटांक कम तोलते हैं और हम दुकानदारी वैसी ही चलाते हैं। फिर अपने बच्चे को कहते हैं कि देख सड़क पर मत जाना एक्सीडेंट हो जाएगा, देख उसका एक्सीडेंट हो गया मदनलाल का, देख किशनलाल का एक्सीडेंट हो गया, देख हरिराम का एक्सीडेंट हो गया। तू बाहर मत जाना।

और हम उनको कायर, हम उनको बुजदिल बनाते हैं।

मैं कह रहा हूँ कि गृहस्थी कोई होती ही नहीं चीज और संन्यास भी नहीं होती चीज। इसलिए संन्यास चीज नहीं होती कि जिसकी आँख में विकार है, जिसकी आँख में गंदगी है, जो लड़की को देखने के बाद कामातुर हो जाता है, आप उसे कैसे संन्यासी, कहेंगे। वह कैसे संन्यासी हुआ। केश रखने में संन्यासी हो गया?

इसलिए गृहस्थ व्यक्ति भी संन्यासी है और संन्यासी व्यक्ति भी गृहस्थ है और गृहस्थ व्यक्ति भी गृहस्थ नहीं है और संन्यासी व्यक्ति भी संन्यासी नहीं है। दोनों एक ही जगह जलते हैं, एक प्रकार की लकड़ियों में जलते हैं और एक ही जगह जाते होंगे। या तो कब्र में उसे गाड़ देते हैं, या नदी में प्रवाहित कर देते है या लकड़ियों में जला देते हैं। तीनों में से कोई एक स्थिति बनती है क्योंकि कोई मरने के बाद उसको रखता ही नहीं।

पत्नी कहती है कि तुरंत ले जाओ और जला दो। मुश्किल से चार घंटे भी आंगन में रख दे तो बहुत बड़ी बात है हां, अंतिम दर्शन करने के लिए बर्फ की सिल्लियाँ चारों तरफ रख करके रख देते हैं क्योंकि नेताजी हैं उनको चौबीस घंटे रखना ही पड़ेगा। तो वे रख देते हैं और 24 घंटे के बाद जला देते हैं। बस इतना ही डिफरेंस होता है। शरीर 24 घंटे नहीं रह सकता। चार घंटे बाद उसमें बदबू आने लग जाती है। आठ घंटे बाद उसमें कीड़े पड़ने लग जाते हैं, चौबीस घंटे बाद उसको उठाने की किसी की हिम्मत नहीं होती। अब आपका शरीर कितना ताकतवान, कितना क्षमतावान, कितना संघर्षवान है इसका आप निर्णय कर सकते हैं।

इस शरीर में ताकत नहीं है और भय के अलावा इस जीवन में कुछ है ही नहीं, प्रारंभ से ही आपके मन में भय है और जहाँ भय है वहाँ मृत्यु है ही, क्योंकि भय और मृत्यु एक ही चीज है।

और कृष्ण भी हमें क्यों याद आ रहे हैं, मुझे क्यों याद आ रहे हैं? और मदनलाल जैसे क्यों नहीं याद आ रहे जो कृष्ण के साथ पैदा हुए थे। इतने कौरव पैदा हुए थे आप में भी कौरव होंगे, पांडव होंगे क्योंकि आपका भी जन्म तो बराबर होता ही रहा है या तो कौरवों की सेना में होंगे या पांडवों की सेना में होंगे। मगर आपका नाम मुझे याद नहीं कि द्वापर में आपका नाम क्या था, मगर **कृष्ण का नाम याद है। इसलिए कि उन्होंने जिंदगी के प्रारंभ से लगाकर अंत तक संघर्ष के अलावा, कुछ किया ही नहीं। सुख नहीं मिला उन्हें जिंदगी में। सुख जैसी चीज उन्होंने देखी ही नहीं। पैदा होते ही कंस ने मारने की कोशिश की, दो महीने का था तो पूतना ने आकर मारने की कोशिश की थोड़े से बड़े हुए तो बकासुर आया, फिर कंस ने एक और राक्षस को भेजा, फिर और किसी प्रकार से मारने का उपक्रम किया, कालिया नाग आया और उनको डसने की कोशिश की। आप मुझे बताइए कि जिंदगी के प्रारंभ से लेकर अंत तक कृष्ण को कौन सा सुख मिला। एक दिन भी एक मिनट भी सुख नहीं मिला।**

मगर कहां हारे जीवन में, कहां अविजित हुए, एक बार भी हारे नहीं, विजयी हुए और उन सारे संघर्षों का सामना करते हुए। इसलिए कृष्ण याद आ रहे हैं, इसलिए मदनलाल याद नहीं आ रहा है। इसलिए हेमराज याद नहीं आ रहा है।

और राम ने कहाँ सुख देखा मुझे बता दीजिए। एक दिन भी सुख देखा हो तो मुझे बता दीजिए, एक दिन भी। पत्नी के साथ जंगल-जंगल भटके एक राजा के बेटे होकर भटके, पिता का दाह-संस्कार नहीं कर सके, कैकेयी के षड़यंत्र का सामना करना पड़ा, कैकयी ने षड़यंत्र किया कि भरत किसी तरह राज गद्दी पर बैठ जाए और वे षड़ंयंत्र उस समय भी चलते थे, आज भी चलते हैं और संघर्ष के अलावा राम ने कुछ देखा ही नहीं इसलिए आज राम याद आ रहे हैं।

मेरा कहने का अर्थ यह है कि अगर हमारे जीवन में संघर्ष नहीं है तो हम मृततुल्य हैं, हममें और एक मरे हुए व्यक्ति में कोई डिफरेंस नहीं है, इसलिए हम मरे हुए व्यक्ति हैं और आश्चर्य यह है, कि मरे हुए व्यक्ति हैं और सांस ले रहे हैं और ऐसे लोगों को देख कर बड़ा आश्चर्य होता है कि ये कैसे मृत व्यक्ति हैं, जो सांस भी ले रहे हैं और चल भी रहे हैं।

एक छोटा-मोटा शिकारी था जिसको कोई खास बंदूक चलाना आता नहीं था। बेटे ने एक दिन कहा कि आप बहुत बड़े शिकारी हैं...उसने कहा–अरे शिकारी! मैंने एक गोली मारी और एक गोली से बीस बाघ समाप्त। शेर का शिकार करना आप सीखें तो मुझसे सीखें।

तो बेटे ने समझा कि बहुत बड़े बहादुर का पुत्र हूँ। उसने कहा पिताजी चलिए। तालाब के किनारे पहुँचे घूमते-घामते। वहीं ऊपर एक चील उड़ रही थी, एक कौआ उड़ रहा था।

बेटे ने कहा–आपने बाघ को मार दिया तो उस कौए को भी मार सकते हैं बंदूक की गोली से।

बाप ने कहा–यह दो मिनट का काम है। उसने बंदूक से गोली चलाई कौआ उड़ गया। बेटे ने कहा–कौआ तो मरा नहीं?

बाप ने कहा–यही तो विशेषता है कि गोली लगने के बाद भी मरा नहीं। आप देखिए लगी उसको, फिर भी उड़ता रहा। यह मंत्र-तंत्र है तुम नहीं समझ पाओगे। यह साधना है।

यह अपने बेटे को भुलावे में डालने के लिए झूठी प्रक्रिया थी। उसको भयभीत करने की प्रक्रिया थी। उसको और गुमराह करने की प्रक्रिया थी। वह खुद तो गुमराह था ही बेटे को भी गुमराह कर दिया और हम जीवन में यही करते हैं–खुद गुमराह होते हैं और दूसरों को भी गुमराह करते हैं। इसके अलावा आप कुछ करते नहीं, कर नहीं सकते।

आप में से अधिकांश मेरे पास आते हैं तो एक ही बात कहते हैं कि बहुत तनाव है, बहुत दुःख है, परेशानी है, बेटी कहना मानती नहीं, मेरे बेटे कहना मानते नहीं, मैं बीमार हूं, मुझे यह तकलीफ है और इसके अलावा आप कुछ बात करते ही नहीं हैं और मैं सोचता हूँ कितना आश्चर्यजनक व्यक्ति है, मरा हुआ है और सांस भी ले रहा है और बात भी कर रहा है। ऐसे व्यक्ति इस पृथ्वी पर ही मिलते हैं हर जगह नहीं मिलते।

निर्भयता जो है वह जीवन की श्रेष्ठता है, सत्यता है, प्रामाणिकता है

और वे व्यक्ति जिंदा रहे, वे पशु जिंदा रहे, वे पक्षी जिंदा रहे, वे कीट-पतंग जिंदा रहे, वह नभचर और जलचर जिंदा रहे, जिन्होंने संघर्ष करने की क्षमता रखी। जो संघर्ष करते रहे, स्ट्रगल करते रहे वही बच पाए।

और आप टालते रहते हैं कि जीवन में यह भी प्रॉब्लम नहीं आए, वह भी प्रॉब्लम नहीं आए। अमृतसर जाना नहीं है, गुरुद्वारे में माथा टेकना नहीं है क्योंकि कभी भी, कहीं भी ए.के. 47 चल जाएगी।

और मैं। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ए.के. 47 की कोई गोली अभी तक आपके लिए बनी ही नहीं है। जब ऐसे कारखाने बने ही नहीं तो आपको लगेगी कहां से और आप पहले से ही डर रहे हैं। गोली बनेगी ए.के. 47 में जाएगी और आपको लगेगी तब देख लेंगे। अभी आप परेशान हो रहे हो, अभी आप क्यों तनावग्रस्त हो रहे हो।

आपके मन में जो भय है यह मिटाना चाहिए और आपमें से अधिकांश व्यक्ति उस भय को लेकर मेरे पास आ रहे हैं, जो घटना घटी ही नहीं आपके जीवन में उससे आप भय खा रहे हैं।

जब लड़का बिगड़ेगा तब बिगड़ेगा, अब आज से ही क्यों तनाव में है कि लड़का बिगड़ेगा, लड़का बिगड़ेगा। छः बजे आना चाहिए साढ़े छः बजे आना चाहिए और पैंट पहननी चाहिए, जीन्स पहनता है। कहना नहीं मानता गुरुजी आप सोच लीजिए कितनी परेशानी है और मेरी बेटी जो है वह सात बजे आती है और उसकी आँखें कह रही हैं कि वह ठीक नहीं है, कहीं गड़बड़ जरूर है, अब गुरुजी आप खुद सोच लीजिए।

अब गुरुजी क्या सोचेंगे? बेटी तुम्हारी। पांच नहीं सात बजे आ रही है, अब गुरुजी बैठे-बैठे क्या करेंगे?

नहीं गुरुजी आप ठीक कर दीजिए।

यह अपनी स्थिति आपके लिए मुझे बताना स्वाभाविक है। आपका विश्वास है कि ये गुरुजी है और मेरी समस्या को दूर करेंगे और समस्याओं को दूर दैविक साधन और सहायता के माध्यम से किया जा सकता है। जहाँ दैविक बल हो उससे ऐसा क्या जा सकता है, मनुष्य के बल से नहीं।

जब देवताओं का बल हमारे साथ हो तो हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं, तब हम निर्भीक बन सकते हैं, युद्ध में विजय प्राप्त करेंगे और समस्याओं को दूर दैविक साधन और सहायता के माध्यम से किया जा सकता है। पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, धनवान बन सकते हैं और जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो हम चाहते हैं।

आप जीवन में धन चाहते हैं और मैं कहता हूँ कि आपको धनवान होना चाहिए।

मैं बुद्ध नहीं हूँ कि आपको कहूं कि धन त्याग दो, बुद्ध शरणं गच्छामि संघ शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि। न मैं महावीर स्वामी हूं कि सब कपड़े खोल देना चाहिए। मैं ऐसी सलाह आपको नहीं दे रहा हूँ।

मैं कह रहा हूँ आपके पास वैभव होना चाहिए, मकान होने चाहिए। ऊंची गाड़ी होनी चाहिए, आपको धनवान होना चाहिए क्योंकि आप मेरे शिष्य हैं, धन होना चाहिए, यश होना चाहिए, मान, पद-प्रतिष्ठा ऐश्वर्य होना चाहिए और वह सब कुछ दैविक बल से प्राप्त हो सकता है आपके प्रयत्नों से प्राप्त नहीं हो सकता। आपके प्रयत्नों से प्राप्त होता तो अब तक आप

करोड़पति होते। क्योंकि प्रयत्न करने में आप कसर रखते ही नहीं। दिन भर परिश्रम करते रहते हैं। प्रत्येक प्रकार से प्रयत्न करते हैं छल, बल, ताकत, युक्ति, चतुराई, चालाकी, मक्कारी, धूर्तता, समझदारी–कोई चीज छोड़ते नहीं आप।

मगर उसके बावजूद भी आप उतनी ही तकलीफ में बंधे रहते हैं आप चाहे तकलीफ फाइनैंशीयल हो, चाहे पुत्र की हो, चाहे पुत्री की, चाहे पत्नी की। जिससे आप शादी करके लाए वही आपके कंट्रोल में नहीं है। डेटिंग वेटिंग करके लाए होंगे, बगीचे में गए होंगे, दो–चार महीने डेटिंग की होगी उसने आपको परखा होगा, आपने उसे परखा होगा लेकिन फिर भी घर लाते ही झगड़ा शुरू और जिंदगीभर फिर लड़ाई–झगड़ा चल रहा है आपका।

यह हुआ क्या? कैसे हो गया?

इसलिए हुआ कि वह भयभीत है कि अगर यह मर गया तो मैं कैसे रहूंगी अभी तक मकान भी नहीं बनाया अभी तक किराए के मकान में रह रहा है, बाद में फिर मैं कहाँ जाऊंगी यह गड़बड़ हो जाएगी, मैं करूंगी क्या?

वह भयभीत इसलिए है। वह कहती है–अच्छा चलो एक मकान तो बनाओ, अरे रहने के लिए कोई स्थान भी नहीं है, तुम कैसे आदमी हो, लोगों ने देखो कितने मकान बना लिए मदनलाल ने बना दिया तुम ने बनाया ही नहीं। वह भयभीत आपसे नहीं है, वह भयभीत आने वाली स्थिति से है।

पति भी भयभीत है कि अगर बीमार पड़ गई तो अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ेगा, डॉक्टर की फीस 1200 रुपये है, फीस है, फिर दवा, क्या है?

वह पत्नी को बहकाता रहता है कि तुम्हें कोई तकलीफ नहीं है, छोटा–मोटा बुखार है, आता ही रहता है और मर भी जाएगी तो कोई फर्क नहीं होगा मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि दूसरी शादी नहीं करूंगा। बस भरोसा रख मेरे ऊपर।

एक पत्नी मरने लगी तो पति का हाथ पकड़ कर कहा–देखना, मैं मर जाऊंगी घंटा, डेढ़ घंटे से ज्यादा जिंदा नहीं रह पाऊंगी। पति ने कहा–मुझे लग रहा है तेरी अंतिम सांसें चल रही है, तू मर जाएगी ऐसा लग रहा है और अभी तो उम्र ही तेरी 40–42 साल की है।

पत्नी ने कहा–आप मेरा कहना मानेंगे?

पति ने कहा–तेरी अंतिम इच्छा है ज्रूर पूरी करूंगा।

पत्नी ने कहा–आप दूसरी शादी कर लेना, बच्चे छोटे–छोटे हैं।

पति ने कहा–चलो तुम्हारी बात मान लूंगा पर छः महीने पहले विश्राम करूंगा, पहले आराम करूंगा बहुत दुःखी हो गया हूँ मैं तुम्हारे साथ रहते–रहते। जब छः महीने विश्राम कर लूंगा तो फिर शादी कर लूंगा। अभी छः महीने तक तो मुझे माफ

करना, उसके बाद देख लूंगा।

आप खुद सोचिए कि पति कितना, दुखी और तकलीफ में है और उसने भी आपको उतना ही भयभीत कर दिया है और आप दोनों ने मिलकर बेटे को कर दिया है। मैं शादी को भयपूर्ण घटना नहीं कह रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ।

'निर्भयो जायते पुत्र निर्भयो जायते सद्यः'

जो निर्भय होता है वह जीवित हो सकता है और निर्भय तब आप हो सकते हैं जब आपके सामने संघर्ष आएंगे और संघर्ष तब आएंगे जब आप बुलाएंगे संघर्ष को, टेन्शन आए, बाधाएं आएं और परेशानियां आए, कठिनाइयाँ आए और नहीं हो पाए तो गुरुजी के पास जाएं और पूछे कौनसी साधना है, कौनसी तरकीब है, कौनसा मंत्र है, दैविक बल हम कहां से प्राप्त करें, जिसके माध्यम से हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

आप किसी के यहाँ नौकर हैं और तीन, चार, आठ हजार रुपये तनख्वाह ले रहे हैं। इसलिये आपके लिए वह तनख्वाह देने वाला महान है।

आपके लिए इसलिए महान् हो गए कि उनके पास एक लाख रुपये है और आपके पास नहीं है। इतना ही तो डिफरेंस है।

अगर लक्ष्मी है तो हमें धनवान बनाने में वह क्षमतावान हो सकती है क्योंकि उस चीज में वह सिद्धहस्त है। अब उस देवी का बल प्राप्त कैसे करें?

वह आपको ज्ञान नहीं है और वह आपको ज्ञान नहीं है इसलिए आप भयभीत है और जिस दिन आपको दैविक बल प्राप्त हो जाएगा तब आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो जाएंगे। पर बिना दैविक बल के संपन्न नहीं हो पाएंगे।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर....

जय कपीश.....

इस प्रकार हनुमान जी आपके शरीर में आ ही नहीं सकते और हनुमान जी कुछ कर ही नहीं सकते क्योंकि आपके लिए कौन सा मंत्र, कौन सी विधि, साधना उपयुक्त है जिसके माध्यम से आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं, यह आपको ज्ञात नहीं है। इसलिए ज्ञात नहीं है कि आपके पास कोई गुरु नहीं है।

और दस लाख में से एक गुरु होता है यह मैं आपको बता देता हूँ। दस लाख व्यक्तियों की गणना करें तो एक गुरु निकलता है बाकी तो पंडे निकलते हैं, बाकी पूजारी निकलते हैं, बाकी पूजा करने वाले निकलते हैं, बाकी घंटा-घड़ियाल बजाने वाले निकलते हैं। वे गुरु नहीं हो सकते और थोक भाव लेने हैं तो गाड़ी से उतरिए हरिद्वार आप, और पांच सौ पंडित एकदम से घेर लेंगे आपको।

क्या वो गुरु हैं?

वहां तो गऊ दान पांच रुपये में करा देते हैं और मैं तो गाय की पूंछ का एक बाल भी नहीं खरीद सकता पांच रुपये में। अब पांच रुपये में गऊदान कहां से करूंगा। मगर वे करा देते हैं दो रुपये में भी करा देते हैं। मैंने भी कराया है।

जब मेरी मां की मृत्यु हुई तो मैं गया तो मुझे पता था यहां गऊदान कराना ही पड़ेगा, यहां वैतरणी पार मां को कराना ही पड़ेगा। क्योंकि वो कहते

हैं कि वैतरणी पार नहीं कराया तो मां यही टिक जाएगी। मुझे पता था यह सब फ्रॉड है, छल है, झूठ है, उनको कुछ ज्ञान है ही नहीं।

हरिद्वार में जाते तो पहली बात यही पूछते हैं कोई मर गया है क्या। मैंने कहा मेरी मां मर गई।

उसने कहा–हां ठीक है, तुम्हारा पंडा मैं हूं।

अब कोई प्रमाण है तुम्हारे पास मैं। कैसे मानूं, तुम पंडे हो, यहां तो इतनी भीड़ है पंडों की कोई धोती खींच रहा है कोई कुर्ता खींच रहा है। तुम हो तो कोई प्रमाण तो दो।

उसने कहा–चलो।

तुम उसके चलते हो और वह बही निकालता है और पढ़ता है कि तुम्हारे दादा जी आए थे और दादाजी का नाम यह था। आप संतुष्ट होते हैं कि दादाजी का नाम सही है।

और वह कहता है–तुम्हारे दादाजी ने सोने की थाली दी।

अब तुम सोचते हो दादाजी के पास पीतल के बर्तन तो थे नहीं वो तो तकलीफ पा रहे थे तो सोने की थालियाँ कहाँ से दे दी।

मगर पंडे को इसलिए कहना पड़ रहा है, कि यह भी कुछ दे तो सही। दादाजी ने तो सोने की थाली दी नहीं पर यह तो पांच सौ रुपये दे।

वह इसलिए कहता है दादाजी आए थे सोने की थालियाँ दीं।

हमारे हिस्से में तो आई नहीं मेरे भाई के हिस्से में भी नहीं आए, दादाजी सब कुछ यहीं देकर समाप्त हो गए। आश्चर्य है घोर आश्चर्य है।

पंडा कहता है–तुम नास्तिक न बनो, तुम नास्तिक हो बच्चे।

मैं आस्तिक हूँ, नास्तिक नहीं हूँ और मुझे अपने दादाजी के बारे में नॉलेज है, सोने की थाली क्या पीतल के बर्तन भी नहीं थे उनके पास। यह मुझे अच्छी तरह से ज्ञात है।

पंडा कहता है–अच्छा चलो छोड़ो तुम, मरा कौन है?

मरी तो मेरी मां है।

चलो नीचे नदी पर फिर।

वहां गए तो कहता है–तुम्हें गऊ दान कराना पड़ेगा, तुम्हारे पास पैसे कितने हैं।

पैसे तो मेरे पास थे। मैं असत्य भी नहीं बोल सकता था तो सत्य भी नहीं बोल सकता था। पंडे थे पांच सौ और मैं था अकेला, मुझे पकड़ते, बांधते और सीधा माताजी के पास भेज देते, गंगाजी में फेंक कर के।

मैंने कहा–मेरे पास पैंतालीस रुपये हैं।

पंडा बोला–कंजूस, पैंतालीस रुपये लेकर मां का श्राद्ध कराने आया है। पैंतालीस रुपये में होगा क्या?

मैंने कहा–मैं तो नौकरी से कमाता हूँ, बस इतने ही हैं और इसमें वापस जाने का किराया भी बाकी है। टिकट लिया नहीं मैंने, कोई रिजर्वेशन

नहीं है मेरा।

कितना किराया लगता है?

मैंने कहा--पंद्रह रुपये।

उसने कहा—अच्छा पैंतालीस में से पंद्रह गए बचे तीस। तीस रुपये ला मैं गऊ दान करा देता हूँ।

मैंने कहा--तीस कैसे दे दूं? सराय के रुपये देने बाकी हैं, पांच रुपये सराय वाले को देते हैं, फिर शाम को रोटी खानी है, सुबह भी रोटी खानी है, रिक्शा करके स्टेशन जाना है।

उसने कहा—यह कैसा कंजूस है। दिनभर में पहला तो यजमान मिला, पहला ही कंजूस। अब इसके पास बस पांच रुपये बचते हैं। अच्छा ला, पांच रुपये ला।

मैंने कहा पांच रुपये देने में मुझे तो कोई आपत्ति है नहीं, मगर सुबह मेरा एक कुर्ता गुम गया, अब कुर्ता नहीं है आप सोचिए क्या पहन कर जाऊंगा। बाजार में तीन रुपयें में कुर्ता आता है।

उसने कहा अच्छा ला, दो रुपये ला तुम्हारी मां को वैतरणी पार करा दूंगा।

अब दो रुपये में मेंढक भी नहीं आता, और वह दो रुपये में गाय खरीद कर वैतरणी पार करा देगा। वे आपके गुरु हैं। वे तिलक लगाए हुए बस बैठे हैं और वे गुरु नहीं हैं तो आपको ज्ञान कहां से दे पाएंगे। इसलिए मैंने कहा कि दस लाख में से कोई एक गुरु होता है। यदि आपको जीवन में ऐसे गुरु मिल जाए तो यह आपका सौभाग्य ही होगा।

और संसार में गुरु शब्द नहीं, टीचर शब्द है, मास्टर शब्द है, जो पैसे लेकर काम करते हैं, वे हैं। मगर गुरु शब्द नहीं है। यह गुरु परंपरा केवल भारत में ही है और आज से नहीं है पिछले पचास हजार वर्षों से है। यह शब्द नहीं मर पाया। बाकी सब शब्द मरे मगर गुरु शब्द नहीं मर पाया। वशिष्ठ के समय भी यही शब्द था आज के समय में भी यही शब्द है क्योंकि गुरु कोई व्यक्ति नहीं है गुरु एक ज्ञान है, गुरु एक चेतना है, गुरु एक प्रबुद्धता है। जिसमें ज्ञान की प्रबुद्धता है वह गुरु है। मैं तुम्हारा गुरु हूँ मैं यह नहीं कह रहा हूँ पर जो मेरा ज्ञान है वह आपका गुरु है।

वह आपको सही ढंग से ज्ञान दे पाएगा, चेतना दे पाएगा कि यह मंत्र है कि जो तुम्हारे लिए सही है, यह साधना सही है। गुरु ही तुम्हें बताएगा और कहेगा तू मुझे दक्षिणा चढ़ा, न चढ़ा, चरण स्पर्श कर या नहीं कर मुझे इसकी जरूरत नहीं है, मगर मैं जो साधना दूंगा वह दैविक बल के लिए जरूरी होगा। वह तुम्हारे लिए जरूरी है।

ब्राह्मण आपको ज्ञान नहीं दे सकते सारे ब्राह्मण, दस पंद्रह को छोड़कर। कहते हैं कि ग्रहण बहुत खराब है ग्रहणकाल में बाहर नहीं जाना चाहिए, ग्रहणकाल में खाना नहीं खाना चाहिए, मटकों का जल फेंक कर मटके उल्टे रखने चाहिए, ग्रहण समाप्त होते ही स्नान करना चाहिए, उसके बाद सब काम करना चाहिए।

वास्तव में ग्रहण कोई खराब शब्द है ही नहीं मगर बाकी सारे गुरु उल्टा कहते हैं और आपके परिवार वाले भी ग्रहण का बुरा मानते हैं क्योंकि उन्होंने अपने बड़ो से यही सीखा और आप भी यही कहते हैं अपने बेटे को कि ग्रहण काल में कुछ नहीं करना चाहिए, ग्रहण काल खराब है। क्योंकि राहु आता है और सूर्य को मुंह में डाल देता है, डालता है तो ग्रहण हो जाता है।
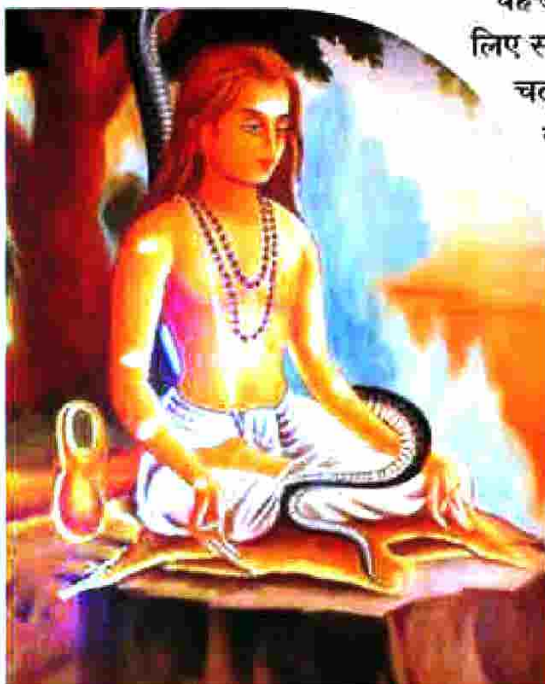
इतना बड़ा सूर्य उसको राहु कैसे मुंह में डालेगा मेरी समझ में नहीं आता। आपकी समझ में शायद आ रहा होगा, पर मेरी समझ में नहीं आता। साइंस इस बात को स्वीकार नहीं करता।

मगर **गीता में कृष्ण कह रहे हैं कि ग्रहण से श्रेष्ठतम कोई समय है ही नहीं, अद्वितीय समय है, एक समय कि उस समय जो कुछ भी किया जाए उसमें सफलता मिलती ही है और इसीलिए महाभारत युद्ध ठीक उस समय शुरू हुआ जब ग्रहणकाल था और पांडव विजयी हुए। पांडवों ने कृष्ण से कहा शंख बजा दें, युद्ध आरंभ करदें। कृष्ण ने कहा–अभी नहीं, अभी ठहर जाओ।**

पांडवों ने कहा–ठहर जाओ? कौरव सामने खड़े हैं, तलवार लिए खड़े हैं, अनेक शंख बज रहे हैं, भीष्म तैयार खड़े हैं और आप कहते हैं ठहर जाओ?

कृष्ण ने कहा–अभी ठहर जाओ। अभी नहीं क्योंकि–

'कालोयं निर्विदा विपुला च लक्ष्मी।'

काल क्षण अपने आप में बहुत मूल्यवान है। मैंने भी थोड़ी देर पहले कहा कि मैं दस मिनट बाद प्रयोग कराऊंगा। आपने सोचा गुरुजी को कोई काम होगा अंदर क्योंकि आप तो तर्कवान हैं न, कुछ न कुछ सोचा ही होगा। अब मेरे साथ तो कमरे में कोई था ही नहीं, बस बैठा था और दस मिनट बाद इसलिए आया कि प्रयोग के लिए वह समय प्रयुक्त हो जहां आपको लाभ मिल सके।

जब राम-रावण युद्ध हुआ तब भी राम ने ज्योंहि ही तीर संधान किया तो हनुमान ने कहा–महाराज ठहर जाइए। युद्ध का अभी सही समय नहीं आया है। युद्ध में यदि विजय प्राप्त करनी है तो आपको रुकना पड़ेगा और मैं तो सेवक हूँ, मैं आज्ञा तो नहीं दे सकता मैं तो विनम्र निवेदन कर सकता हूँ मगर आप विश्वामित्र से पूछिए कि यह समय उपयुक्त है, आप ध्यान में अपने गुरु को लाइए, और उनको आज्ञा चक्र में स्थापित करिए।

यह सब बात इसलिए समझा रहा हूँ कि जब राम कर सकते हैं तो आप भी आज्ञा चक्र में गुरु को स्थापित कर सकते हैं। आप भी हृदय में गुरु को स्थापित कर सकते हैं जब राम अपने गुरु को आज्ञा चक्र में स्थापित कर परमीशन ले सकते हैं तो आप भी ले सकते हैं। राम में और आप में कोई अंतर है ही नहीं जहां तक मैंने सुना है उनके दो हाथ ही थे, दो पांव थे, दो आँखें थीं, दो कान थे। बीस या पचास हाथ उनके थे नहीं आपके भी नहीं हैं।

जन्म से कोई महापुरुष होता ही नहीं है, आज तक नहीं हुआ। वे सब आपके जैसे ही थे, अपने कार्यों से संघर्ष से राम, कृष्ण, बुद्ध और चैतन्य बने। यदि आपने संघर्ष किया है तो आप राम बन सकते हैं, बुद्ध बन सकते हैं, चैतन्य बन सकते हैं और जीवित रह सकते हैं दो हजार, पांच हजार साल तक भी यदि आप में संघर्ष करने की क्षमता है, यदि आप निर्भीक हैं और चुनौतियों को सामने बुलाते हैं, हर समय चुनौतियों का सामना करते हैं, प्रॉब्लम आती है तो उसे फेस करते हैं। यदि आपमें यह भावना, यह क्षमता है तो आप जीवित रह सकते हैं, संघर्षशील हो सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं और उसके लिए दैविक बल जरूरी है।

राम को भी विश्वामित्र की जरूरत थी और जब राम ने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि, थोड़ी देर बीत जाए उसके बाद तुम तीर संधान करना।

अब कहां विश्वामित्र ठेठ अयोध्या के पास एक आश्रम में और कहा राम, ठेठ दक्षिण में रामेश्वरम के पास में और उसके भी आगे। मगर वहां से भी

उनका अपास में संचार होता रहा। आप भी कहीं भी हो, चाहे यहां हो, चाहे दो हजार मील दूर हो आपके आज्ञा चक्र में भी गुरु स्थापित हो सकते हैं और गुरु बता सकते हैं और आप गुरु की आज्ञा प्राप्त कर सकते हैं, **गुरु आपको गाइड कर सकते हैं और आप गुरु से गाइड हो सकते हैं, यदि गुरु से आपका अटैचमेंट है, यदि आपको विश्वास है और यदि आपको गुरु में विश्वास है, उसकी दी हुई साधनाओं में विश्वास है, तो फिर देवता भी आपको जीवन में सफलता दे सकते हैं, और आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।**

और विजय का मतलब है कि जो आपके जीवन में समस्याएँ हैं, उन पर सफलता प्राप्त होनी चाहिए। अभी वह क्षमता प्राप्त हुई नहीं है आपको क्योंकि उस दैविक बल को प्राप्त नहीं कर पाए आप दैविक बल को छोड़ो गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए आप। जब गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए तो देवता कहाँ से आपके जीवन में आ पाएंगे।

इसलिए आपको विजय की जरूरत है, आपको संघर्ष करने की जरूरत है, आपको निर्भय होने की जरूरत है, आपको निडर होने की जरूरत है और आपकी जो भी इच्छा है उसको पूरा करने की जरूरत है और प्रत्येक व्यक्ति के मन में इच्छा रहनी चाहिए। क्योंकि

'इच्छा विहीन पशु।'

जिसकी इच्छा है ही नहीं वह तो मरा हुआ है। आपमें इच्छा ही नहीं है, संघर्ष करने की भावना ही नहीं है, और जब इच्छा नहीं होती तो आदमी मर जाता है, जिंदा होते हुए भी मर जाता है।

संन्यासी को जब दीक्षा दी जाती है तो कहा जाता है–जा मर जा, यह नहीं कहा जाता तू सुखी रह, सम्पन्न रह, सफल हो। ऐसा आशीर्वाद नहीं देते हैं। जब दीक्षा देते हैं तो कहते हैं–तू मर जा। आज तक जितना तुम्हारे अंदर डर था, भय था, समस्याएं थीं, बाधाएं थी, उन्हें मार देता हूँ मैं तुम्हें नया जन्म देता हूँ। आज तुम्हें नवीन चेतना दे रहा हूँ, आज से तुम्हें नवीन तरीके से काम करना है।

संन्यासी को जब भी गुरु दीक्षा देता है तो अंत में यही कहता है जा मृत्यु को प्राप्त हो जा।

और आप सुनेंगे तो कहेंगे–यह कैसे गुरुजी हैं इन्हें तो आशीर्वाद देना चाहिए कि लखपति हों, करोड़पति हों।

मर जाने का मतलब है कि आज तक का तुम्हारा जीवन जितना डरपोक था, गया-बीता था, घटिया था वह समाप्त हो जाए। आप नए मनुष्य के रूप में जन्म ले सकें, आज से आप नए बन सकें, नवीनता का प्रारम्भ हो सके, नवीनता का संचार हो सके। जैसे सूर्य पर ग्रहण लगता है वैसे आपके ऊपर भी ग्रहण लग गया है भय का, डर का, चिंताओं का, बाधाओं का, अड़चनों का कठिनाइयों का। यह सब दूर हो सके और सूर्य की भांति आप चमक सकें, रोशनी कर सकें, पूरे संसार में आपका नाम हो सके।

ऐसा तब हो सकेगा जब आपके पास दैविक बल होगा और दैविक बल तब हो पाएगा जब आप गुरु के सान्निध्य में हो सके और गुरु का सान्निध्य तब हो पाएगा जब गुरु का आप पर विश्वास हो पाएगा। और गुरु का विश्वास तब हो पाएगा जब आप उन पर पूर्ण विश्वास कर पाएंगे।

इसलिए जीवन में आप संघर्षशील बनें, विजयी बनें और मैं कह रहा हूँ आपके पास इच्छाएँ होनी चाहिए, रोज नयी इच्छाएँ होनी चाहिए और प्रत्येक इच्छा पर विजय प्राप्त करें। अब एक साल में होगी, दो साल में होगी या दस में होगी मगर इच्छाओं पर विजय प्राप्त होनी ही चाहिए। जहाँ भी कृष्ण है वहाँ विजय है-ऐसा गीता में कहा गया है।

जब गुरु है वहां विजय होगी ही होगी। क्योंकि जब गुरु होगा तो एक भय का संचार मिटेगा और गुरु प्राप्त होगा तो दैविक बल प्राप्त होगा क्योंकि गुरु समझा पाएगा कि आपका जीवन क्यों बना है, वह बता पाएगा आपके लिए कौन सी साधना जरूरी है और इसके लिए गुरु शिष्य के बीच एक एग्रीमेंट होना चाहिए विश्वास का क्योंकि यह चीज तर्क की नहीं है, यह श्रद्धा की है। तर्क में तो न मैं आपसे जीत सकता हूँ, न आप मुझसे जीत सकते हैं। यह चीज तर्क की नहीं है, श्रद्धा की है।

जब आपने मान लिया कि यह व्यक्ति सत्य बोल रहा है और मेरा हितचिंतक है तो आपको विश्वास कर लेना पड़ेगा। आप शादी करके आते हैं, उस अनजान लड़की से जिसे आपने देखा नहीं, और सत्रह साल की लड़की पहली बार आपके घर आती है, उससे कोई परिचित भी नहीं है, अभी कोई उसे जानता भी नहीं, और एकदम से संदूक की चाबी उसे दे देते हैं यह क्या है? आप पड़ोसी को इतने साल से जानते हैं उसे देते नहीं मगर उसे क्यों दे देते हैं?

क्योंकि आपको विश्वास है कि यह पैसे बरबाद नहीं करेगी। विश्वास एक क्षण में पैदा हो गया। और जहाँ अविश्वास नहीं होगा वहां रात को भी चाबी तकिए के नीचे रखेंगे आप।

विश्वास गुरु के प्रति होना चाहिए अपने प्रति होना चाहिए, संघर्षशील होना चाहिए और आप जीवन में सफलता प्राप्त कर पाए और निश्चय ही आप जीवन में विजयी हो पाएं, दैविक बल प्राप्त कर पाएं, पूर्ण रूप से सफल हो पाएं ऐसा ही मैं आपका आशीर्वाद दे रहा हूँ।

-सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी

(डॉ. नारायण दत्त श्रीमालीजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

405/-

जिस तरह आज शिक्षा बढ़ती जा रही है, जागरूकता बढ़ती जा रही है, उसी दर से मानवीय मूल्यों में वृद्धि नहीं हो रही है। यही कारण है कि आज पति और पत्नी दोनों पढ़े-लिखे और शिक्षित होने के बावजूद भी एक दूसरे से प्रेम पूर्ण संबंध दीर्घ काल तक बनाये नहीं रख पाते हैं। शहरी जीवन में घरेलू तनाव एक आम बात सी हो चुकी है, पति कुछ और सोचता है तो पत्नी कुछ और। पति-पत्नी एक गाड़ी के दो पहिये होते हैं, दोनों में असंतुलन हुआ तो असर पूरे जीवन पर पड़ता है और आपसी क्लेश का विपरीत प्रभाव बच्चों के कोमल मन पर पड़ता है, जिससे उनका विकास क्रम अवरुद्ध हो जाता है। यदि पति-पत्नी में आपसी समझ न हो तो आये दिन नित्य क्लेश की स्थिति बनी रहती है। इस प्रकार के घरेलू कलह का दोष किसी एक व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता। अतः इस यंत्र का निर्माण ही इस प्रकार से हुआ है, कि मात्र इसके स्थापन से वातावरण में शांति की महक बिखर सके, संबंधों में प्रेम का स्थापन हो सके और लड़ाई-झगड़ों से मुक्ति मिले तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य की उन्नति हो।

गृहक्लेश निवृत्ति यंत्र

यंत्र स्थापन विधि

किसी मंगलवार के दिन इस यंत्र को दूध मिश्रित जल से स्नान कराने के पश्चात प्रातःकाल अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। नित्य प्रातः यंत्र पर कुंकुम व अक्षत चढ़ाएं तथा दिन दिनों तक नित्य 3 माला मंत्र जप करें फिर माला किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

।। ॐ क्लीं क्लेश नाशय क्लीं ऐं फट्।।

फिर उपरोक्त मंत्र का नित्य 11 बार उच्चारण करें, तीन माह तक ऐसा करें, उसके बाद यंत्र किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

श्रीयंत्र अष्टमी : 05.02.21

व्यापार की उन्नति हेतु

व्यापार में उन्नति प्रत्येक व्यापारी की आकांक्षा होती है और प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा होती है कि वह उन्नति करे और तीव्रता के साथ उन्नति करे।

व्यापार तो ऐसा क्षेत्र है जहाँ पल में तोला पल में माशा होता रहता है।

ऐसी स्थिति में व्यापारी किसी भी प्रकार से पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता

क्योंकि आज यदि वह धन–धान्य से पूर्ण है, तो कल वह कर्ज में भी डूब सकता है।

व्यापार के संबंध में कोई भी निश्चित तथ्य नहीं कहा जा सकता।

जो अपने व्यापार को दिनों–दिन उन्नति की ओर अग्रसर करते रहना चाहते हैं, वे अवश्य ही कोई ऐसा मार्ग अपनाते हैं, जो कि उन्हें सहयोग प्रदान कर सके। इसके लिए प्रस्तुत प्रयोग अवश्य ही आपकी इस आकांक्षा को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगा। 05.02.21 के दिन या किसी भी बुधवार को श्रीयंत्र का पूजन कर उस पर चावल चढ़ायें फिर लक्ष्मी माला से 5 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ श्रीं परमज्ञ सिद्धि व्यापार वृद्धि ह्रीं ॐ।।

OM SHREEM PARMAGYA SIDDHI VYAAPAAR VRIDDHI HREEM OM

यह प्रयोग तीन दिनों तक करें। आखिरी दिन प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र व्यापार स्थल में स्थापित कर दें।

न्यौछावर – 450/–

साधना में सफलता प्राप्ति हेतु

साधनाओं को साधक इसलिए सम्पन्न करता है कि उसे शीघ्रता से अपने कार्यों के हेतु का पूर्ण कर लेना होता है, परंतु कुछ कारणों से साधनाओं में भी सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है।

साधक छोटी-छोटी न्यूनताओं के कारण साधनाओं में भी सफल न होने के कारण अपनी दैनिक जीवन में उपस्थित होने वाली समस्याओं से नहीं निकल पाते हैं और फिर जीवन स्तर को ऊंचा उठाने की बात तो दूर है। यह तो एक सामान्य सी प्रक्रिया है यदि व्यक्ति अपने जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं से निजात नहीं पा सकेगा, तो बड़ी समस्याओं पर कैसे विजय प्राप्त कर सकेगा। कोई भी व्यक्ति नित्य प्रति छोटी-छोटी घटनाओं से जितना तनावयुक्त रहता है, उतना बड़ी समस्याओं से प्रभावित नहीं होता हैं जीवन में घटित होने वाली छोटी-छोटी घटनायें व्यक्ति को निरंतर तनाव ग्रस्त बनाएं रखती हैं।

प्रस्तुत है लघु प्रयोग जो साधनाओं में सफलता दिलाने में सहायक होगा।

एक थाली में हल्दी से स्वस्तिक का निर्माण करें, उस पर सर्व सिद्ध गुटिका को स्थापित करें, गुटिका का पूजन करें। गुटिका के पूजन के पश्चात चावल का एक-एक दाना गुटिका पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 108 बार जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ऐं ॐ ॥

OM HREEM AYEIM OM

यह प्रयोग 21 दिन का है, 21 दिन बाद आप गुटिका को तथा सभी चावल के दानों को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर - 150/-

सम्मोहन हेतु

सम्मोहन साधना

जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों के मध्य कुछ पल ऐसे आते हैं, जब हम यह विचार करने को बाध्य हो जाते हैं कि इस पल हमारे पास कोई अन्य शक्ति होती,

तो हम इन परिस्थितियों का और अधिक दृढ़ता से सामना कर सकते थे, लेकिन सामान्य जीवन में यह संभव नहीं हो पाता है, क्योंकि हमारे पास कोई ऐसी दिव्य शक्ति नहीं है, जिसके माध्यम से हम अपना इच्छित कार्य सम्पन्न करवा लें। यह संभव हो सकता है, यदि हम अपने जीवन में सम्मोहन साधना को उतार लें, फिर हम सामने वाले व्यक्ति से अपने अनुकूल कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं। प्रस्तुत प्रयोग में सम्मोहन की वह प्रक्रिया प्रस्तुत है, जिनको सम्पन्न कर उपरोक्त तथ्यों को आप अपने जीवन में उतार सकते हैं।

किसी भी बुधवार को पीला वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से रंगे चावल से नेत्र की आकृति बनाएं उसके मध्य में 'सम्मोहन यंत्र' स्थापित करें, यंत्र का पूजन कुंकुम, पुष्प से करें, यंत्र पर इत्र भी लगाएं। वीरासन में बैठकर निम्न मंत्र का यंत्र को देखते हुए 5 माला जप सम्मोहन माला से करें। यह प्रयोग सात दिन तक करें।

मंत्र

।। ॐ सं सर्व संमोहनाय वशमानय ॐ फट ।।

OM SAM SARVA SAMMOHANAAY VASHMAANAY OM PHAT

सात दिन के पश्चात यंत्र को विसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 450/-

पुत्रदा एकादशी : 24.1.21

मनोवांछित संतानप्राप्ति हेतु

संतान होने की जितनी प्रसन्नता होती है, वैसा आनन्द वैसी प्रसन्नता व्यक्ति को अन्यत्र कहीं से नहीं प्राप्त होती है।

उस पर भी यदि व्यक्ति मनोवांछित संतान की प्राप्ति कर ले, तो वह क्षण उसके जीवन का सर्वोच्च आनन्दमय क्षण बन जाता है पर कुछ दंपति संतान सुख ही प्राप्त कर पाते हैं। मनोवांछित संतान की प्राप्ति हेतु यदि दैविक कृपा हो, तो व्यक्ति अपनी इच्छित संतान भी प्राप्त कर सकता है, न केवल इच्छित संतान ही वरन वह संतान अत्यंत मेधावी, योग्य, श्रेष्ठ भी होती है। यदि आप दैविक कृपा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह प्रयोग आपके लिए ही है।

संतान गोपाल यंत्र को एक थाली में पीले पुष्प की पंखुड़ियां डाल स्थापित करें। यंत्र का पूजन पुष्प, कुंकुम व अक्षत से करें। यंत्र के दोनों और घी के दीपक लगा दें। फिर निम्न मंत्र का जप 21 दिन तक नित्य प्रात: काल 5 माला पुत्र जीवा माला से करें –

मंत्र

।। ॐ हरिवंशय पुत्रम्
देहि देहि नम:।।

OM HARIVANSHAY PUTRAM
DEHI DEHI NAMAH

21 दिन बाद यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर -450/-

शत्रुनाशक प्रयोग
युग की वर्तमान प्रवृत्तियां इस प्रकार की हो गई है कि
को क्षमताओं का
एक बड़ा भाग शत्रु संकट से निपटने में ही व्यर्थ हो जाता है।
यह जीवन की एक अमधुर स्थिति होती है, जो जीवन की अन्य उपलब्धियों का अर्थ समाप्त कर देती है।
प्रस्तुत है एक ऐसी साधना जो साधक के जीवन में ऐसी स्थिति आ जाने पर उसका सहज समाधान स्वयं ही संभव कर देती है। साधक को चाहिए कि वह एक 'काल भैरव गुटिका' प्राप्त कर उसे लाल वस्त्र पर रखे हुए, किसी ताम्रपत्र में स्थापित करें, रविवार को रात्रि में दस बजे के पश्चात् उसके ऊपर थोड़ा काला तिल चढ़ायें फिर काली हकीक माला से 11 माला मंत्र जप करें
मंत्र
॥ ॐ हूं काल भैरवाय फट् ॥
OM HROOM KAAL BHAIRAVAAY PHAT
मंत्र जप करते हुए उस व्यक्ति का नाम मानस में रखें जो विशेष कष्ट दे रहा हो। साधना की समाप्ति पर गुटिका तथा तिल को लाल वस्त्र में लपेट कर घर से दूर दक्षिण दिशा में फेंकें।
न्यौछावर - 390/-

28.01.2021

इस वर्ष श्रेष्ठतम प्रयोग

आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

शाकंभरी जयंती 28.01.2021 को है

यह अपने आप में श्रेष्ठतम पर्व है और इसी दिन देवराज इन्द्र ने

आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग स्तोत्र

के माध्यम से सम्पन्न किया था, और इसी की वजह से सम्पूर्ण भोगों को भोगते हुए वे देवराज इन्द्र कहलाये।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि संसार में जितने भी लक्ष्मीप्रदायक प्रयोग है, उन सभी प्रयोगों में यह अद्वितीय सिद्धिदायक प्रयोग है, यह अत्यंत सरल होते हुए भी तुरंत और अचूक फल देने वाला है, इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति निश्चय ही धन लाभ प्राप्त करता है, उसका कर्जा मिट जाता है, व्यापार वृद्धि होने लगती है, और स्वप्न में स्वयं देवी शाकंभरी उसे कुछ ऐसे निर्देश देती है, कुछ ऐसा रास्ता बताती है, जिसकी वजह से वह आर्थिक पूर्णता प्राप्त कर सके।

कई बार साधना काल में ही व्यक्ति को रात्रि में आकस्मिक धनप्राप्ति के उपाय दिख जाते हैं, या कोई मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है, जिस पर चल कर वह व्यापार में पूर्ण सफलता प्राप्त करे, उसकी जबान में और चेहरे पर कुछ ऐसा ओज आ जाता है, जिससे कि वह जिस किसी अधिकारी से बात करता है, तो उसकी बात का प्रभाव पड़ता है और वह जिस प्रकार से चाहे, अपना कार्य सम्पन्न करा देता है।

विष्णु पुराण में भगवती लक्ष्मी के प्रति देवराज इन्द्र द्वारा किये गये इस स्तोत्र का श्रेष्ठ महत्व है और बताया गया है कि इसके माध्यम से साधक को शीघ्र ही लक्ष्मी प्राप्ति और आकस्मिक धन प्राप्ति होती देखी गयी है, कई बार तो प्रयोग सम्पन्न होते होते ही उसे अनुकूल समाचार प्राप्त हो जाते है।

साधना प्रयोग

28.01.2021 को दिन को या रात्रि को कभी भी आसन पर बैठ कर एक छोटी सी तस्तरी में चन्दन से अष्टदल कमल बनावे और उसके मध्य में 'आकस्मिक धन प्राप्ति शाकंभरी यंत्र' को स्थापित कर दे और उसके सामने ही शुद्ध धृत का दीपक लगावे, फिर उस दीपक का पूजन करे, यंत्र पर एक पुष्प चढ़ावे और साधक एकाग्रतापूर्वक दीपशिखा पर ध्यान केन्द्रित करता हुआ निम्न स्तोत्र का इक्कीस बार पाठ करें।

तीन दिन इस स्तोत्र का पाठ करे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

दुर्लभ सिद्ध आकस्मिक धन प्राप्ति

स्तोत्र–पराशर उवाच

सिंहासन–गत शुक्रः सम्प्राप्य त्रि–दिवं पुनः।
देव–राज्ये स्थितो देवीं तुष्टाब्ज–करां ततः।।

इन्द्र उवाच

नमस्ते सर्व–भूतानां जननीमब्धि–संभवाम्। श्रियमुन्निद्र–पद्माक्षीं विष्णु–वक्षः स्थल–स्थितां।।
पदमालयां पद्म–करां–पद्म – पत्र–निपेक्षणम्। वन्दे पदम–मुखीं देवी पद्म–नाम–प्रियामहम्।।
त्वं सिद्धस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोक–पावनी। सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिमेधा श्रद्धा सरस्वती।।
यज्ञ विद्या महा–विद्या गुह्य–विद्या च शोभने। आत्म–विद्या च देवि! त्वं विभुक्ति–फल–दायिनी।।
आन्विक्षिकी त्रयी वार्ता दण्ड–नीतीस्त्वमेव च। सौम्या सौम्यैंर्जगद्–रूपैस्त्वयैतद् देवि! पूरितम्।।
का त्वन्या त्वामृत देवि! सर्व–यज्ञ–मयं वपुः। अध्यास्ते देव–देवस्य योगी–चिन्त्यं गदा–भृतः।।
त्वा देवि ! परित्यक्तं सकलं भुवन–त्रयम्। विनष्ट–प्रायम्भवत् त्वयेदानीं समेधितम्।।
दाराः पुत्रास्तथाऽऽगार–सुहृद्धान्य–धनादिकम्। भ्रत्येतन्महाभागे! नित्यं त्वद्–वीक्षणान्नृणाम्।।
न ते वर्णायितुं शक्ता गुणान जिहवापि वेधसः। प्रसीद देवि पद्माक्षि! नास्मांस्त्याक्षीः कदाचन।।

इस प्रकार इस स्तोत्र का केवल तीन दिन इक्कीस–इक्कीस बार पाठ करने हैं, इससे अनुष्ठान पूर्ण हो जाता है, यह अनुष्ठान 28,29,30 जनवरी को करना है।

साधना सामग्री–300/–

आकस्मिक धन प्राप्ति शाकंभरी यंत्र

यह यंत्र मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है, इस यंत्र को गुरुदेव ने इस दीपावली पर विशेष रूप से सिद्ध किया है

साधनात्मक शब्दार्थ

अक्सर यह देखा गया है, कि लोग आम बोल-चाल की भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु उसका सही अर्थ उन्हें ज्ञात नहीं होता है। यही बात साधनात्मक क्रिया-विधियों से सम्बन्धित अनेकानेक शब्दों के साथ लागू होती है। यदि कोई जिज्ञासावश आपसे पूछ ले, कि 'अंगन्यास' क्या होता है, तो आपके पास स्पष्ट रूप में एक सरल परिभाषा होनी चाहिए, जिससे उस शब्द विशेष का अर्थ स्पष्ट हो सके। साधना क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में साधनात्मक शब्दार्थ एक प्रयास है, आशा है साधकों एवं पाठकों को इससे अवश्य लाभ होगा।

- **पवित्रीकरण–** बाएं हाथ में जल लेकर उसे दाएं हाथ से ढक कर 'पवित्रीकरण मंत्र' द्वारा अभिमंत्रित कर दाहिने हाथ की उंगलियों से वह जल पूरे शरीर पर छिड़कने की क्रिया को पवित्रीकरण कहा जाता है। इससे साधक की आन्तरिक एवं बाह्य शुद्धि होती है।
- **आचमन–** मन, वाणी, अन्तःकरण की शुद्धि के लिए पंचपात्र (वह बर्तन जिसमें पूजन हेतु जल रखते हैं) से आचमनी (चम्मच) द्वारा दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार मंत्रोच्चारण करते हुए उसे पी लेते हैं। फिर हाथ धो लें।

- **शिखा बंधन–** शिखा (सिर के ऊपर मध्य भाग में ब्रह्मरन्ध्र के स्थान पर केश) में गांठ बांधकर दैवी शक्ति का स्थापन करने की क्रिया (दाहिने हाथ से शिखा स्थान पर स्पर्श कर भी यह क्रिया की जाती है।)
- **दिशा बंधन–** विशेष मंत्र बोलते हुए बाएं हाथ में अक्षत या जल लेकर दाहिने हाथ से सभी दिशाओं में छिड़कने की क्रिया, जिससे साधना निर्विघ्न पूर्ण हो।
- **न्यास–** शरीर के विभिन्न अंगों को मंत्रोच्चारण के साथ हाथ से स्पर्श कर चैतन्यता प्रदान करने की क्रिया।
- **करन्यास–** दोनों हाथ के अंगूठे से मंत्रोच्चारण करते हुए उस उंगली को स्पर्श करने की क्रिया जिसका मंत्र में निर्देश होता है।
- **अंगन्यास–** हाथ से शरीर के विभिन्न अंगों का मंत्रोच्चारण करते हुए स्पर्श करने की क्रिया जिसका मंत्र में निर्देश हो।
- **संकल्प–** दाहिने हाथ से शंखमुद्रा (हथेली खोल कर पहली उंगली (तर्जनी) को अंगूठे के मूल में स्पर्श कराएं) बनाकर जल, अक्षत एवं कुंकुम लेकर विशेष मंत्रों द्वारा अपना नाम, गोत्र आदि बोलते हुए अपनी उस मनोकामना को बोलें जिसके लिए आप साधना कर रहे हैं।
- **नैवेद्य (प्रसाद)–** साधना में देवता को अर्पित करने हेतु मिष्ठान।
- **पंचामृत–** दूध, दही, घी, शक्कर (चीनी) एवं मधु (शहद) का मिश्रण।
- **अक्षत–** चावल के दाने जो टूटे हुए न हों।
- **आवाहन–** विशेष मंत्रों द्वारा देवता को आदरपूर्वक निमंत्रित (बुलाना) करना।
- **आसन–** साधना हेतु जिस वस्त्र पर साधक बैठता है, उसे 'आसनी' कहते हैं, तथा जिस मुद्रा में साधक बैठता है उसे 'आसन' कहते हैं।
- **बाजोट–** लकड़ी की चौकी (तख्ता, पीढ़ा, पटरा) जिस पर पूजन हेतु यंत्र तथा देवी-देवताओं के चित्र स्थापित किए जाते हैं।

गोम्पा के देश में

विचित्र आख्यानों की खान है यह देश, जो हिमालय के उत्तर में, सिक्यांग के पूर्व में और चीन के दक्षिण में फैला हुआ है। दुर्गम और विकट यात्राओं के इस देश के विषय में शेष दुनिया को अधिक जानकारी अभी तक नहीं हो पाई है, पर यहां के सिद्ध पुरुष, लामा, ध्यान-साधना, जड़ी-बूटियों व सहज-शांत जीवन सदियों से आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। स्मृति में छाये इसी रहस्यमय बिम्ब को लेकर मैं निकल पड़ा था तिब्बत भ्रमण पर..... पर क्या वह यात्रा पूरी हो पाई ? पढ़िये एक अद्भुत लामा से मिलने की अनोखी दास्तान...

सिद्ध महापुरुष का दर्शन तब तक सम्भव नहीं, जब तक उनकी सवयं की इच्छा न हो। तलाश करने से गुरु नहीं मिलते अपितु गुरु स्वयं ही शिष्य को खोज निकालते हैं। सद्गुरु यदि सामने आ भी जायें, तो भी हमारी सांसारिकता का आवरण उन्हें देखने नहीं देता, क्योंकि आध्यात्मिक स्तर पर मानसिक तरंगों की एकरूपता प्राप्त हुए बिना अदृश्य जगत का अवलोकन सामान्य मानव के लिए सम्भव ही नहीं। इस विषय में मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं, कि मेरा जन्म ही नगाधिराज हिमालय की उपत्काया में हुआ। संत साहचर्य अपने आपमें ही चमत्कारपूर्ण होता है। मुझे अपने प्रभुसम गुरुदेव में जो सहज भव परिलक्षित होता था, वास्तव में वह किसी चमत्कार से कम नहीं। अपनी असीम अनुकम्पा से उन्होंने मुझे अनेक सिद्धियों से समृद्ध किया और उनकी आज्ञा से ही मैं हिमालय के दुर्गमतम तीर्थों से तपोलीन योगियों और संतों का सान्निध्य का लाभ प्राप्त कर सका। वे सभी तपस्वी सत्य के अनन्य साधक थे, जिनका एक ही परम गुण था-समग्र सृष्टि के

उसी समय मेरे मानस में तिब्बत भ्रमण की तीव्र लालसा उत्पन्न हुई। गुरूदेव से अनुमति प्राप्त कर में नेपाल के बुरांग कस्बे की ओर बढ़ा जहां से तिब्बत की राजधानी ल्हासा लगभग डेढ़ हजार मील पूर्व में स्थित थी।

सामान ढोने के लिए मैंने कए खच्चर ले रखा था, पर वह बिगड़ैल खच्चर यात्रा के पहले पड़ाव में ही न जाने कहां भाग खड़ा हुआ और विपरीत दिशा से आने वाली बर्फीली हवा मुझे झकझोरती हुई आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास करने लगी, किंतु मेरा उत्साह और जोश समस्त विरोधी तत्त्वों का सामना करने के लिए उद्यत था। संयोगवश बारगा क्षेत्र में ही मुझे तीर्थयात्रियों का एक दल मिल गया, ये सभी शैव मतावलम्बी थे, जो कैलाश-मानसरोवर की यात्रा पर निकले थे। हम सभी ने कैलाश-मानसरोवर की परिक्रमा में भाग लिया और अपने-अपने गंतव्य की ओर चल पड़े।

अब मैं अकेले ही पहाड़ के पथरीले चढ़ाव पर पैर जमाते हुए आगे बढ़ रहा था। भय का तो मेरे मन में नामोनिशान भी नहीं था, पर होनी में भी अपनी ताकत है, आने वाली विपदा का मुझे तनिक भी आभास नहीं था। निर्द्वन्द्व चलते हुए अकस्मात् मेरा पांव फिसल गया..... नीचे गहरी खाई थी, पर रात्रि के अंधकार में नजर नहीं आ रही थी। अपने जीवन का इतना भयवाह अंत समीप अनुभव कर मैं भयाक्रांत स्वर में चीख उठा। एकाएक ऐसा लगा, किसी ने मुझे अपनी गोद में ले लिया है, दूसरे ही क्षण मैं वापस पगडण्डी पर था और सामने खड़े थे एक अत्यन्त तेजस्वी लामा संन्यासी, उनके शरीर से निःसृत प्रकाशपुंज से वह स्थान आलोकित हो उठा था।

''तो तुम्हीं हो योगी अभयानन्द.... अनजान राहोंप र ध्यान से कदम रखना चाहिए...'' वे लामा संन्यासी मुझे मीठी झिड़की दे रहे थे। भावातिरेक में मैं उनके चरणों में झुका ही था, कि उन्होंने कंधों से पकड़कर उठा दिया। उनके स्पर्श मात्र से ही शरीर में जैसे बिजली दौड़ गई, मैं रोमांचित सा अपनी सुध-बुध खो बैठा। कुछ क्षणों के पश्चात् चैतन्य होने पर मैंने स्वयं में एक नवीन शक्ति का अनुभव किया, निश्चय ही उन्होंने अनुग्रह करके मुझ पर शक्तिपात किया था।

सम्मोहित सा मैं अब उनके पीछे चल पड़ा। दो दिवस पर्यन्त निरन्तर चलते रहने के बाद भी न तो थकावट का कोई चिह्न उत्पन्न हुआ, न ही भूख-प्यास का अहसास। काफी ऊंचाई पर चढ़ने के बाद एक खंडहर की दीवार दिखाई पड़ी। कुछ प्रसन्नता, कुछ उत्सुकता के साथ तिब्बती शैली में निर्मित उस खण्डहर में दरवाजे के भीतर प्रविष्ट हुआ ही था, कि अत्यन्त मोहक सुगन्ध नथूनों में प्रवेश कर गई।

वह एक गहरी अंधेरी गुफा थी, जिसमें हाथ को हाथ भी नहीं सूझ रहा था। लामा के शरीर से निकलती प्रकाश किरणों में मैंने दीवार पर तथागत की जीवन से सम्बन्धित एक थंका टंगा देखा, एक ओर बुद्ध की छोटी सी प्रतिमा स्थापित थी। वह लामा पीछे मुड़कर हंसे- ''यही मेरा साधना कक्ष है। जान-बूझ कर मैंने यहां प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं की है, अंधकार में मैं स्वयं को परम सत्ता के, अपने आराध्य के अत्यंत समीप अनुभव करता हूं... पर तुम अभी इस स्तर पर नहीं हो... चलो तुम्हें गोम्पा के दर्शन करा लाऊं।''

गोम्पा देश में-

गोम्पा बौद्ध अनुयायियों के वृहदाकार मंदिर होते हैं, जिनमें पूजागृह, सभागृह, लामाओं के निवास स्थान, साधना कक्ष, ध्यान कक्ष और एक केन्द्रीय प्रकोष्ठ बुद्ध की प्रतिमा लिये हुए होता है। ये प्रतिमाएं बौद्ध साक्य थुबा या भविष्य में अवतरित होने वाले महात्मा बुद्ध, जिसे चंबा या बुद्ध मैत्रेय कहा जाता है, की प्रतिमूर्ति होती है। केन्द्रीय प्रकोष्ठ में ही अथवा दूसरे कक्षों में

मंजुश्री, वज्रपाणि, तारा या शक्ति तथा महाकाली की प्रतिमाएं होती हैं। नंगे पर्वतों की श्रृंखलाओं पर स्थित पाषाणखण्डों से निर्मित ये गोम्पा की किलेनुमा इमारतें ज्ञान का अजस्र भंडार और उच्चतर शिक्षा का माध्यम कही जा सकती हैं।

योगीराज मुझे अपने साथ सुदूर पहाड़ों पर स्थित एक गोम्पा में ले गये। कुछ सौ सीढ़ियां चढ़ने पर हमें मंत्रलिखित प्रार्थना चक्रों की कतार दिखाई दी, जो हिलाने पर अपनी धुरियों पर घूम जाते थे। प्रांगण के मध्य में एक बड़ा सा धर्म-ध्वज फहरा रहा था। केन्द्रीय प्रकोष्ठ में गौतम बुद्ध की लगभग तीस फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित थी, जिसके ध्यानावस्था में अर्धनिर्मीलित नेत्रों के माध्यम से तेजस्विता की अजस्र धारा प्रवाहमान प्रतीत हो रही थी। मूर्ति के शिखर पर एक पांच पत्तियों वाला ताज था, जिनमें पांच ज्ञाण बुद्ध प्रतिमूर्तित किये गये थे।

सीढ़ियों के दूसरी ओर प्रार्थना सभागृह था, जिसमें वरिष्ठ लामा चांडाया की ध्यानावस्था में एक मूर्ति स्थापित थी। योगीराज ने मुझे उनके समक्ष एक मक्खन का दीपक प्रज्वलित करने को कहा और वहां अनुष्ठानरत कई लामाओं से मेरा परिचय कराया। अब वे एक संकीर्ण मार्ग से मुझे दूसरे प्रकोष्ठ में ले गये, जहां बायीं ओर चामुण्डा देवी की ग्यारह मुखी प्रतिमा स्थापित थी, दूसरी ओर महाकाली का विग्रह था, जिसका मुख वर्ष में मात्र एक अवसर पर ही खोला जाता था। कोष्ठ की सभी दीवारों पर 'ऊँ मणि पद्मे हुम्', 'वज्रपाणि होम्' और 'ऊँ वागेश्री होम्' इत्यादि बौद्ध मंत्र खुदे हुए थे।

दिन भर गोम्पा में भ्रमण करने के पश्चात् संध्या होते ही हम पुनः अंधेरी गुफा में लौट आये। पर मेरे मानस में तो गोम्पा की भित्तियों पर अंकित रहस्यमय तांत्रिक चित्र ही घूम रहे थे, लामाओं का निश्छल सादगीपूर्ण जीवन मुझे अभिभूत कर गया था। ''ये बाह्य जगत की विषमताओं और नारकीय जीवन से कितने दूर हैं।

इस साधना में अपनी देह को पूर्णतः सिद्ध एवं पारदर्शी बनाया जाता है। शाम्भवी दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत तीन वर्षों तक गुरू के साहचर्य में रहने पर ही ऐसा सम्भव है। तत्पश्चात् कुण्डलिनी जागरण और मातृका तंत्र से त्रिपुरसिद्धा सिद्ध की जाती है, जिससे कि वायुमार्ग से गतिशील होकर हिमालयस्थ दिव्य आश्रमों की यात्राएं की जा सकें।

काश! मैं यहीं पर सदा के लिए रह जाऊ।''-मैं इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था, कि योगीराज की वाणी मेरे कानों में ध्वनित हुई-''शीघ्र ही तुम्हें वापस लौटना है और उच्चकोटि की साधनाओं को सम्पन्न भी करना है।''

''परन्तु मैं तो सम्पूर्ण तिब्बत का भ्रमण करने को निकला हूं। इतनी कठिनाई से यहां तक पहुंचा हूं, अभी कैसे लौट सकता हूं?''-मैंने अधीर होकर प्रतिवाद करने का प्रयास किया।

योगीराज हंसकर बोले-''साधक के लिए कुछ कठिन नहीं होता। साधना के बल पर वह सम्पूर्ण प्रकृति को अपने वशवर्ती कर सकता है। तू भी पहले लोकान्तर साधना सम्पन्न कर ले, फिर वायुवेग से गतिशील होकर सृष्टि के प्रत्येक अद्भुत स्थान की सशरीर यात्रा कर सकेगा अन्यथा इन चर्म चक्षुओं से तो ब्रह्माण्ड के दिव्य धामों का दिग्दर्शन सम्भव ही नहीं, भले ही सारी जिन्दगी पैदल ही चलता रहे।''

मुझे ऊहापोह में देखकर योगीराज मेरी जिज्ञासा दूर करते हुए बोले-''इस साधना में अपनी देह को पूर्णतः सिद्ध एवं पारदर्शी बनाया जाता है। शांभवी दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत तीन वर्षों तक गुरू के साहचर्य

में रहने पर ही ऐसा सम्भव है। तत्पश्चात् कुण्डलिनी जागरण और मातृका तंत्र से त्रिपुरसिद्धा सिद्ध की जाती है, जिससे कि वायुमार्ग से गतिशील होकर हिमालयस्थ दिव्य आश्रमों की यात्राओं की जा सके।"

वायु में विलीन होता उनका पारदर्शी शरीर-

"मैं तुझे इस क्रिया का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन करा देता हूं।"... और मुझे अचम्भे में डालकर वे लामा संन्यासी मेरे समक्ष ही ध्यानावस्था में प्रवेश कर गये। फिर अर्धनिर्मीलित नेत्रों को पूर्णतः बन्द कर उन्होंने अपनी कुण्डलिनी को कपाल में स्थित किया और ऐसा करते ही उनका पूरा शरीर कांच सा पारदर्शी बन गया। मैं विस्फारित आंखों से उनके शरीर के आर-पार देख पा रहा था। उनके वक्षस्थल की ओर दृष्टि डालने पर सूक्ष्म शरीर के सभी चक्र साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। कुछ ही क्षणें में वे वायुतुल्य हो गये और उनका शरीर संकुचित होने लगा। धीरे-धीरे वे पृथ्वी से ऊपर उठे और देखते ही देखते शून्य में अदृश्य हो गये, ऐसा लगा, जैसे वे सशरीर बहुत दूर चले गये हों।

आवाक् होकर मैं उस लामा की विलक्षण सिद्धियों पर विचार कर ही रहा था, कि वे पुनः शून्य मार्ग से उतरते दिखाई दिये, उनके मुखमण्डल पर विद्यमान अपूर्व तेज इस तथ्य का सूचक था, कि वे किसी दिव्य धाम की यात्रा पर आये हैं। पृथ्वी पर उतरते ही उनका पारदर्शी शरीर

सामान्य अवसथा में आ गया।

मेरे विदा लेने का क्षण आ पहुंचा था। मुझे किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा खड़ा देखकर योगीराज ने स्मित हास्य के साथ कहा-"जाने से पहले मेर आराध्य को नहीं देखना चाहोगे ?"

मेरे सहमति में सिर हिलाने पर उन्होंने अपने पीछे आने का संकेत किया। इतनी अलौकिक क्षमताओं से सम्पन्न उस लामा के आराध्य देव के दर्शनों को मैं स्वयं उत्सुक था। मंथर गति से पीछे-पीछे चल पड़ा। कुछ कदम चलने पर हम एक ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहां बूंद-बूंद पानी झर रहा था, अत्यन्त सुखद अनुभूति थी, मैं स्वयं को पुष्पवत् हल्का अनुभव कर रहा था। एकाएक वहीं रूक कर योगीराज ने सामने की ओर इंगित किया। सिर उठाकर सामने नजर दौड़ाई, तो मेरी प्रसन्नता का ओर-छोर नहीं रहा... एक अत्यन्त मोहक गुलाब पुष्पों से निर्मित आसन पर परम पूज्य गुरूदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का भव्य चित्र स्थापित था।

"यही हैं मेरे आराध्य"... कहकर वे हंस पड़े..."तू इन्हें छोड़कर कहां इधर-उधर भटक रहा है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तो इनके भीतर ही निहित है... जा वापस चला जा।"

अब मेरे पूछने को कुछ शेष था ही नहीं। चलते वक्त मैं पुनः उनके चरणों में झुक गया, स्पर्श करते ही रोम-रोम में सनसनाहट फैल गई। मेरे वरिष्ठ गुरू भाई अपना दाहिना हाथ उठाकर मुझे आशीर्वाद प्रदान कर रहे थे....
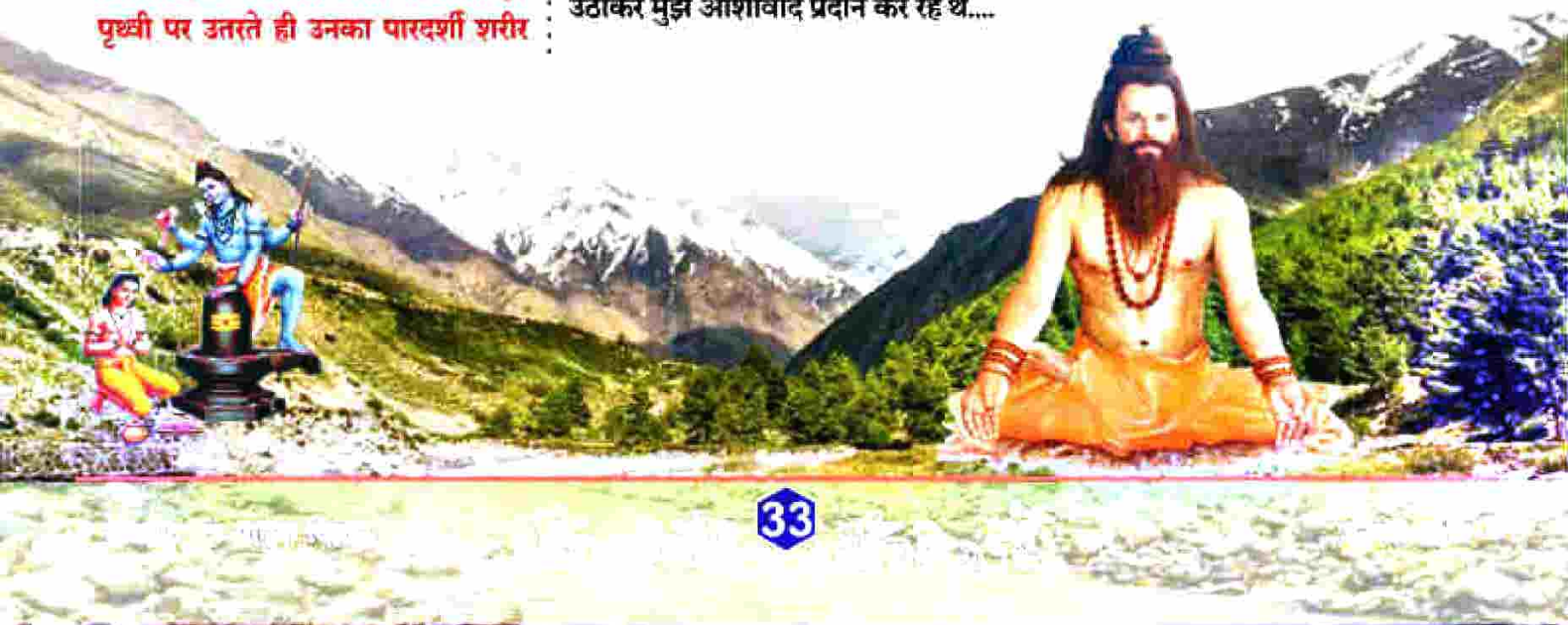
शिष्य धर्म

त्वं विवितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- शिष्य और गुरु का संबंध देहगत नहीं है, वह तो आत्मा का संबंध है, हृदय का संबंध है। शिष्य के लिए आवश्यक है कि उसके हृदय में सदगुरुदेव का बिंब सदा विद्यमान रहे जिससे वह आत्मिक रूप से सदा गुरु के सम्पर्क में रहे।
- गुरु चाहे कहीं भी हो शिष्य सदा उनका चिंतन मनन करता ही रहता है और जब वह ऐसा करता है तो स्वयं एक आत्मीय संबंध बनता है और उस तार से जुड़ने से वह सद्गुरुदेव के सूक्ष्म निर्देशों को पकड़ पाता है तथा उन पर अमल कर पाता है।
- जब गुरु हृदय में स्थापित है तो कुछ अन्य हृदय में प्रवेश कर ही नहीं सकता। फिर बाहर की दूषित हवा, दूषित वृत्तियाँ शिष्य पर हावी नहीं हो सकती क्योंकि गुरु रूपी अमृत निरंतर उस विष को अमृतमय बनाता ही रहता है। इसलिए शिष्य के हृदय पटल पर एक ही नाम अंकित हो–गुरु। उसके मुख पर एक ही शब्द हो–गुरु।
- गुरु कोई तानाशाह या कठोर हृदय वाला व्यक्तित्व नहीं वह तो सदा शिष्य की कमियों को दूर करता हुआ, उसकी त्रुटियों को सहन करता हुआ उसे सही मार्ग पर गतिशील करता रहता है। पर शिष्य का भी कर्तव्य है, धर्म है कि अगर उससे कोई गलती हो जाए, अपयश हो जाए तो वह नि:संकोच गुरु को बता दे और उनसे आत्मिक बल प्राप्त करे जिससे फिर वह गलती दोबारा न हो। ऐसा करने से गुरु के आगे अपने अपराध की क्षमा मांगने से समस्त पाप धुल जाते हैं अगर शिष्य की भावना शुद्ध हो और उसमें समर्पण का भाव हो तो।

- जहाँ शिष्य के लिए जरूरी है कि वह समर्पित और गुरु सेवा में संलग्न रहे वहीं गुरु का भी यह कर्त्तव्य है कि वह शिष्य को पूर्णता के साथ अपनाए, उसको ज्ञान और चेतना दे, जहाँ उसके जीवन में बाधाएं, कठिनाइयां आए उनको दूर करे और उसे साधना मार्ग में आगे बढ़ाये।
- शिष्य और गुरु एक ही शब्द हैं, दो अलग-अलग नहीं हैं। न इनमें भेद किया जा सकता है।
- अध्यात्म जीवन की ऐसी पगडंडी है, एक ऐसा रास्ता है जिस पर गुरु के प्रति समर्पण एवं श्रद्धा के सहारे ही चला जा सकता है। यहां पर दूसरी कोई युक्ति काम नहीं करती।
- पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्ण मादाय, पूर्ण मेवा व शिष्यते।।
- शिष्य तभी पूर्ण होगा जब अपने अंदर में कुछ रखें नहीं, सब गुरु चरणों में न्यौछावर कर दें। खाली दिये में तेल भरा जा सकता है, जो पहले से भरा हुआ है– काम, क्रोध, घमण्ड, लोभ, मोह से उसमें किसी भी प्रकार ज्ञान रूपी तेल की बूंद नहीं डाली जा सकती।
- यह शिष्य धर्म है कि वह जीवन के अंतिम क्षण तक सचेष्ट, प्रत्येक क्षण गुरु सेवा में व्यतीत करे। ऐसा ही जीवन जीने पर किसी भी प्रकार की साधना में पूर्णता प्राप्त हो सकती है, उच्च से उच्च दीक्षा प्राप्त हो सकती है।
- इस रास्ते पर न चापलूसी चलती है, न आज्ञा उलंघन चलता है, न निम्न पात्रता चलती है, न न्यूनता चलती है और न समर्पण में किसी प्रकार की कमी चलती है। ऐसा ही जीवन का दृढ़ निश्चय हो और दृढ़ निश्चय ही न हो यह क्रियान्वित हो तभी आप जीवन में वह चीज प्राप्त कर पाएंगे जो कि पूर्णता का सूचक है।
- अगर गुरु में पूर्ण रूप से समर्पण एवं श्रद्धा है तो गुरु बाध्य हो जाता है कि शिष्य को सफलता प्रदान करें। फिर शिष्य किसी भी हालत में असफल नहीं हो सकता। क्योंकि गुरु स्वयं उसकी सफलता का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेते हैं।
- जब शिष्य पूर्ण समर्पण करता है तो वह गुरु से एकाकार हो जाता है तब गुरु की समस्त शक्तियाँ उसे ऊपर उठाने की ओर प्रयत्नशील हो जाती हैं।

गण+ईश, अर्थात् जो गणों के स्वामी हैं; परंतु आम व्यक्ति गणों से तात्पर्य लगाता है शिव के भूत-प्रेतों से, जबकि वास्तव में यहाँ गण का अर्थ है इन्द्रियां और इन्द्रियों के स्वामी होने के कारण ही हमने इन्हें गणेश कहा है।

अपने जीवन से यदि दुःख दारिद्रय, कठिनाइयों को समाप्त करना है, तो इसका एक ही उपाय है

हेरम्ब गणपति
प्रयोग

'कलौ चण्डी विनायकौ'

अर्थात् कलियुग में चण्डी एवं गणपति की साधना शीघ्र एवं पूर्ण फलदायक है, ऐसा विद्वानों का मानना है, ऐसा उनका चिंतन है।

चाहे कुछ भी हो, यह तो अकाट्य सत्य है, कि प्रत्येक पूजन कार्य में, प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान अथवा क्रिया में सर्वप्रथम गणपति की ही पूजा की जाती है . . . सर्वप्रथम उन्हीं की अर्चना की जाती है।

हेरम्ब गणपति

गणेश को पार्वती ने अपने शरीर में लगे उबटन से निर्मित किया था, जो कि वास्तव में पृथ्वी तत्त्व है। यही कारण है, कि कुण्डलिनी योग में गणेश को प्रथम चक्र (मूलाधार, जो पृथ्वी तत्त्व से संबंधित है) का अधिष्ठाता माना गया है।

और चूंकि प्रथम चक्र एवं मूल के स्वामी गणेश ही हैं, अत: अब यह रहस्य नहीं रहा, कि इनकी पूजा सर्वप्रथम क्यों होती है। गणेश का अर्थ होता है - गण+ईश, अर्थात् जो गणों के स्वामी हैं, परंतु आम व्यक्ति गणों से तात्पर्य लगाता है शिव के भूत-प्रेतों से, जबकि वास्तव में यहाँ गण का अर्थ है इन्द्रियां और इन्द्रियों के स्वामी होने के कारण ही हमने इन्हें गणेश कहा है।

यह सही ही है, इन्द्रियों से जो हमें अधिकतर अनुभूतियां प्राप्त होती हैं, वे स्थूल शरीरगत होती हैं और स्थूल शरीर का अर्थ ही पृथ्वी तत्त्व है। अत: स्थूल शरीर से ऊपर उठने के लिए गणेश की साधना आवश्यक है, क्योंकि वे विघ्नहर्ता हैं और अगर प्रसन्न हो जाए, तो व्यक्ति के रास्ते के सभी विघ्न समाप्त कर उसके जीवन को उर्ध्वमुखी बनाने में सहायक होते हैं।

अत: गणेश साधना में पवित्र मन से तत्पर होना चाहिए और सभी नियमों का पालन करना चाहिए। गणेश के तांत्रिक क्षेत्र में कई स्वरूप प्रचलित हैं और मूल रूप में ये तांत्रिक देवता ही हैं, जिसका अर्थ है -

पूर्ण जाग्रत, चैतन्य एवं शीघ्रातिशीघ्र फल देने वाले। गजानन, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष आदि इनके कुछ नाम हैं... और इन्हीं में से एक नाम है

'हेरम्ब गणपति'।

प्राचीन काल में ही हेरम्ब गणपति की साधना का प्रचलन रहा है और सभी ने इस बात को एक मत होकर स्वीकारा है, कि चाहे कैसी ही परेशानी क्यों न हो, चाहे किसी भी प्रकार का विघ्न क्यों न उपस्थित हो जाए, इस साधना को सम्पन्न करते ही सभी प्रकार की चिंताएं जड़ समेत नष्ट हो जाती हैं।

आजकल के परिवेश में सामान्यत: जो लोगों की परेशानियां हैं, वे हैं – दारिद्रय, रोग, पीड़ा, शत्रु भय, मुकदमा, असफलता आदि। अगर किसी प्रकार से इन सबमें सफलता प्राप्त हो सकती है, तो वह मात्र हेरम्ब गणपति साधना ही है, क्योंकि यह साधना स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध कोई भी सम्पन्न कर सकता है, साथ ही इसके लिए कोई सम्प्रदाय आदि का विचार भी नहीं है, इस साधना को सुगमतापूर्वक कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना अत्यधिक सरल है और शीघ्र फल देने वाली है। अत: प्रयास करके व्यक्ति को इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए।

अब नीचे इस साधना से संबंधित कुछ तथ्य स्पष्ट किये जा रहे हैं, जो साधना करते ही व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट हो जाते हैं -

1. साधक का कारोबार दिनों दिन बढ़ता है और उसके घर में धन का आगमन होता है, इस प्रकार उसकी दरिद्रता समाप्त होती है।
2. अगर व्यक्ति नौकरीपेशा हो, तो उसकी पदोन्नति होती है और वह अधिकारियों का प्रिय पात्र बनता है।
3. उसके समस्त शत्रु परास्त होते हैं, मुकदमे आदि में उसकी विजय होती है और उसके विपक्षी मित्रवत हो जाते हैं।
4. उसका पारिवारिक जीवन आनन्दप्रद होता है और मनचाहा जीवन साथी मिलता है।
5. समाज में उसे मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उसके जीवन में उसकी सफलता के रास्ते में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं और वह ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होता रहता है।
6. इस साधना से व्यक्ति का मूलाधार चैतन्य हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर भी अग्रसर रहता है।

ऊपर बताई गई स्थितियां साधना सम्पन्न करने के बाद साधक के जीवन में स्वत: ही उत्पन्न हो जाती हैं और जब इनका प्रादुर्भाव उसके जीवन में होता है, तब वह पूर्ण आनन्द के साथ, बिना किसी भी चिन्ता या मानसिक तनाव के श्रेष्ठता के पथ पर अग्रसर होने लगता है।

साधना विधान

यह एक तांत्रिक साधना है, तीक्ष्ण और शीघ्र फलदायी। यह एक दिवसीय साधना है और इसे रात्रि में ही सम्पन्न करना चाहिए। साधक दिनांक 28.1.21 या किसी भी बुधवार को रात्रि को पीली धोती धारण कर पीले आसन पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठे और अपने समक्ष पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर 'हेरम्ब गणपति यंत्र' स्थापित कर उसका विधिपूर्वक पूजन सम्पन्न करें। फिर 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र का 75 माला मंत्र जप करें -

मंत्र **॥ ॐ गं गणपतये गं नम: ॥**

Om Gam Ganpataye Gam Namah

साधना वाले दिन किसी से अनावश्यक बात न करें, एक समय भोजन करें जिसमें बेसन से बनी वस्तु अवश्य हो एवं ब्रह्मचर्य का पालन करें। साधना समाप्त होने के पश्चात् किसी गणेश या शिव मंदिर में यंत्र तथा माला को कुछ दक्षिणा के साथ अर्पित कर दें।

ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है और साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, उसके समस्त विघ्न दूर होते हैं और वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

साधना सामग्री : 450/-

किसी भी अमावस्या को

रक्ष रक्ष कुलदेवी

कुलदेवता साधना

जीवन की छोटी मोटी तकलीफें तो यों ही दूर हो जाती हैं, जब साधक अपने

कुल देवता या कुल देवी

की पूजा करता है

और इसके उपरांत यदि गुरु द्वारा

कुलदेवता की साधना विधि

प्राप्त हो जाए, तो जीवन में कुछ असंभव रह ही नहीं जाता, पूरे परिवार की उन्नति, सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हर प्रकार के सुख और समृद्धि से जीवन जगमगा उठता है।

व्यक्ति की पहचान सर्वप्रथम उसके कुल से होती है।

प्रत्येक व्यक्ति का जिस प्रकार नाम होता है, गोत्र होता है, उसी प्रकार कुल भी होता है।

कुल अर्थात् खानदान या उसकी वंश परम्परा।

जिस वंश से संबंधित होता है, वह वंश तो हजारों-लाखों वर्षों से चला आ ही रहा है, लेकिन आज सामान्य व्यक्ति अपने कुल की तीन-चार पीढ़ियों से अधिक नाम नहीं जानता। यह कैसी विडम्बना है? यदि किसी व्यक्ति से उसके परदादा के भाइयों के नाम पूछे जाएं, तो वह बता नहीं पाता है। यह न भी याद रहे तो भी अपने कुल और गोत्र का सदैव ध्यान रखना तो आवश्यक ही है। क्योंकि प्रत्येक कुल परम्परा में उस कुल के पूजित कोई देवी-देवता अवश्य होते हैं। इसलिए वार, त्यौहार, पर्व आदि पर स्वर्गीय दादा, परदादा के साथ ही कुल देवता अथवा कुलदेवी को भोग अर्पण अवश्य ही किया जाता है।

कुल देवता का तात्पर्य है - जिस देवता की कृपा से कुल में अभिवृद्धि हुई है, परिवार को सदैव एक अभय छत्र प्राप्त होता रहा है।

आज की तीव्र जीवनशैली में हम अपनी मूल संस्कृति से उतना अधिक सम्पर्कित नहीं रह सके हैं, परंतु यदि कुल की परम्पराओं और कुल के अस्तित्व को देखना हो, तो आज भी भारत के कुछ प्रमुख नगरों को छोड़कर शेष सभी स्थानों में खास कर ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर भारतीय देव संस्कृति आज भी कई रूपों में जीवित है। कुल के देवताओं का अलग से मंदिर होता है, उनकी पूजा होती है और मात्र इसी से कई प्राकृतिक आपदाओं और बीमारियों से उनकी रक्षा होती है।

वाल्मीकि रामायण में देखने को मिलता है कि विश्वामित्र के आश्रम में विद्या अर्जित कर पुन: अयोध्या लौटने पर भगवान राम ने अपने कुल के सभी देवी देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए साधना की थी। राजमहल के अन्दर ही एक मंदिर में सभी देवी-देवताओं की दिव्य जाग्रत मूर्तियां थीं। उन्हीं की साधना करने से भगवान राम को सभी कुल देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था, जिसके कारण वे आने वाले समय में युगपुरुष सिद्ध हो सके।

यदि ध्यान दिया जाए, तो विशेष साधनाओं के पूर्व जिस प्रकार गणपति पूजन, गुरु पूजन, भैरव स्मरण आदि आवश्यक रूप से सम्पन्न किया जाता है, उसी प्रकार संक्षिप्त रूप में 'कुलदेवताभ्यो नम:' प्रभृत शब्दों का भी उच्चारण किया जाता है। यह कुलदेवता के प्रति अभिवादन है, जिससे उनका आशीर्वाद प्राप्त हो एवं साधना में सफलता प्राप्त हो सके। वस्तुत: कुल देवता ही साधक को समस्त प्रकार के वैभव, उन्नति, शक्ति, प्रतिष्ठा, सुख, शांति प्रदान करने में सक्षम होते हैं, यदि उन्हें साधना द्वारा प्रसन्न कर लिया जाए तो।

कुलदेवताओं और कुलदेवी की पूजा-साधना अनेक रूप से गाँवों, कस्बों और उच्च कुलीन परिवारों में भी प्रचलित रही है। अलग-अलग कुल में अलग-अलग कुलदेवता एवं देवियां हैं।

कुलदेवता-कुलदेवी साधना विधि

यह दो सप्ताह की साधना है, जो किसी भी अमावस्या से प्रारंभ की जा सकती है। अर्थात् यदि साधना सोमवार को प्रारंभ की जाए, तो पन्द्रह दिन बाद सोमवार को ही उस साधना का समापन भी किया जाना चाहिए। इस साधना में मात्र तीन वस्तुओं की आवश्यकता होती है – 'कुलदेवता यंत्र', 'कुलदेवी भैषज' एवं 'प्रत्यक्ष सिद्धि माला', इसके अलावा साधना में कोई विशेष कर्मकाण्ड नहीं होता है।

प्रात: अथवा रात्रि में स्नान आदि कर पूर्व की ओर मुख कर अपने सामने गुरु चित्र रख कर दैनिक साधना विधि पुस्तक से गुरु पूजन कर लें। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अपने कुल देवता और कुल देवी को प्रसन्न करने के लिए इस साधना को सम्पन्न कर रहा हूँ और उनकी कृपा प्राप्त करने की प्रार्थना कर रहा हूँ, जिससे वे मुझे जीवन में हर प्रकार की सफलता एवं समृद्धि प्रदान करें तथा विपत्तियों से मेरी रक्षा करें। इस भाव को मन में धारण कर निम्न संकल्प का उच्चारण करें –

ॐ अद्य अमुक गोत्रीय: (अपना गोत्र बोलें) **अमुक शर्माऽहं** (नाम बोलें) **स्व कुलदेवता प्रीत्यर्थ सकल मनोकामना पूर्ति निमित्तं कुलदेवता साधना करिष्ये।**

जल को भूमि पर छोड़ दें। फिर कुलदेवता यंत्र को जल से धोकर पोछ दें और किसी पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें। फिर यंत्र पर कुंकुम, अक्षत व नैवेद्य चढ़ाएं।

कुलदेवी भैषज को मौली से लपेट कर यंत्र के मध्य भाग में स्थापित करें, फिर निम्न मंत्र को पांच बार बोलते हुए भैषज पर कुंकुम से पांच बार बिन्दी लगाएं –

ॐ एतोस्मानं श्री खण्डचन्दनं समर्पयामि ॐ कुल देवतायै नम:।

इसके बाद 'प्रत्यक्ष सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की 21 माला नित्य पन्द्रह दिन तक करें –

कुलदेवता मंत्र

।। ॐ ह्रीं कुल देवतायै मनौवांछितं साधय साधय फट्।।

Om Hreem Kul Devataayei Manovaanchhitam Saadhay Saadhay Phat

अंतिम दिन यंत्र के समक्ष घर का बना हुए नैवेद्य (मिष्ठान्न) अर्पित करें। साधना समाप्ति पर समस्त सामग्री को नैवेद्य के साथ किसी कपड़े में लपेट कर मंदिर में अर्पित कर दें। शीघ्र ही साधना के परिणाम सामने आते हैं एवं साधक को अपने कुलदेवता और कुलदेवी के दर्शन होते हैं या उनकी कृपा प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट – 510/-

जिस प्रकार माँ-बाप स्वत: ही अपने पुत्र-पुत्रियों के कल्याण के प्रति चिंतित रहते हैं, ठीक उसी प्रकार कुलदेवता या कुलदेवी अपने कुल के सभी मनुष्यों पर कृपा करने को तत्पर रहती है। ठीक माता-पिता और एक कुशल अभिभावक की तरह जब अपने कुल के मनुष्यों को उन्नति करते, समृद्धि और साधन से युक्त होते हुए उस कुल के देवता देखते हैं, तो उन्हें अपूर्व आनन्द होता है।

मूल रूप से कुलदेवता अपनी कृपा कुल पर बरसाने को तैयार रहते हैं, परन्तु देवयोनि में होने के कारण बिना माँगे स्वत: देना उनके लिए उचित नहीं होता है। जो दे वो देवता, परन्तु यह देने की क्रिया तभी होती है, जब साधक माँग करता है। इसलिए प्रार्थना, आरती, पूजा का विधान होता है।

इस साधना द्वारा निश्चय ही कुलदेव की कृपा से जीवन संवर जाता है और भौतिक सफलता के लिए तो यह शीघ्र प्रभावी साधना है।

मस्तिष्क रेखा

जीवन और मस्तिष्क का आपस में गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि बिना बुद्धि या मस्तिष्क के जीवन व्यर्थ-सा हो जाता है। जीवन में यश, मान, प्रतिष्ठा आदि बुद्धि के द्वारा ही प्राप्त होता है, अतः हथेली में जितना महत्त्व जीवन रेखा का है, लगभग उतना ही महत्त्व मस्तिष्क रेखा का भी है।

विद्वानों के अनुसार हथेली में मस्तिष्क रेखा का पुष्ट, सुदृढ एवं स्पष्ट होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यदि मस्तिष्क रेखा जरा-सी भी विकृत होती है, तो उसका पूरा जीवन लगभग बरबाद-सा हो जाता है।

आइये देखें मस्तिष्क रेखा से सम्बन्धित अन्य तथ्य-

1. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई पतली रेखा गुरु पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने वाला तथा बुद्धिमान होता है।
2. यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट और निर्दोष हो, तो वह व्यक्ति तुरन्त निर्णय लेने वाला, क्रियाशील मस्तिष्क का धनी तथा बुद्धिमान होता है।
3. यदि मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा का उद्‌गम अलग-अलग हो, तो ऐसा व्यक्ति स्वच्छन्द प्रकृति का होता है। वह अपने तरीके से काम करता है और किसी दबाव में कार्य नहीं करता।
4. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकल कर गुरु पर्वत के अन्त तक पहुँच जाती है, तो वह व्यक्ति देश का श्रेष्ठ साहित्यकार अथवा कलाकार होता है। वह अपना जीवन शालीनता से व्यतीत करने में समर्थ होता है।
5. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के बीच में जाकर नीचे की ओर झुक जाती है, तो ऐसा व्यक्ति धन के प्रति बहुत अधिक मोह रखने वाला होता है, उसकी इच्छा ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने की होती है, परन्तु परिस्थितियों के कारणवश वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता।
6. यदि मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा से लिपटती हुई-सी आगे बढ़ती है, तो ऐसा व्यक्ति क्रोध में अपनी पत्नी या प्रेमिका की हत्या कर देता है।
7. मस्तिष्क रेखा का झुकाव जिस पर्वत की ओर विशेष होता है, उस पर्वत के गुणों में वृद्धि हो जाती है। उदाहरणार्थ यदि इसका झुकाव गुरु पर्वत की ओर होता है, तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ साहित्यकार या तत्त्वज्ञानी होता है।
8. यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो ऐसा व्यक्ति दार्शनिक अथवा चिन्तक होता है।
9. यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत की ओर झुकती हुई दिखाई दे, तो वह व्यक्ति अत्यन्त उच्च पद प्राप्त करता है।

10. यदि मस्तिष्क रेखा लहराती हुई आगे बढ़ती हो, तो ऐसे व्यक्ति का चित्त अस्थिर होता है तथा उसकी कथनी और करनी में समानता एवं एकरूपता नहीं रह पाती।
11. यदि मस्तिष्क रेखा आगे चलकर चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे, तो निश्चय ही वह व्यक्ति कवि होता है और जीवन में कई बार जल-यात्रा करता है।
12. यदि मस्तिष्क रेखा चन्द्र पर्वत की ओर से उसके ऊपर से होती हुई मणिबन्ध तक पहुँच जाती है, तो ऐसा व्यक्ति जीवनभर दु:खी, दरिद्री और निकम्मा रहता है।
13. यदि मस्तिष्क रेखा मणिबन्ध तक पहुँच कर रुक जाती है और इसके आगे क्रॉस का चिह्न होता है, तो वह व्यक्ति निश्चय ही आत्महत्या करता है।
14. मस्तिष्क रेखा जिस स्थान पर भी हृदय रेखा को काटती है, जीवन की उस उम्र में व्यक्ति को बहुत बड़ी स्वास्थ्य हानि होती है।
15. यदि दोहरी मस्तिष्क रेखा सीधी और सपाट हो; तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति कूटनीति में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
16. यदि मस्तिष्क रेखा जंजीर के समान हो, तो उसे जीवन में मस्तिष्क सम्बन्धी रोग रहते हैं।
17. शनि पर्वत के नीचे यदि मस्तिष्क रेखा पर द्वीप का चिह्न दिखाई दे, तो 24वें वर्ष में उसे पागलखाने जाना पड़ता है।
18. यदि बुध पर्वत के नीचे इस रेखा पर द्वीप बन जाए, तो विस्फोट के कारण उस व्यक्ति की मृत्यु होती है।
19. यदि मस्तिष्क रेखा घूमकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे, तो वह व्यक्ति उन्नति करता है तथा स्त्रियों में अत्यधिक लोकप्रिय होता है।
20. यदि मस्तिष्क रेखा पर सफेद बिन्दु दिखाई दे, तो वह व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
21. यदि इस रेखा पर वृत्त का चिह्न हो, तो व्यक्ति अदूरदर्शी तथा मूर्ख होता है।
22. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के आर-पार जाती हुई दिखाई दे, तो उस व्यक्ति की स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है, और वह जीवन में मेधावी कहा जाता है।
23. यदि बुध पर्वत विकसित हो, परन्तु मस्तिष्क रेखा कमजोर हो, तो उसे जीवन में बहुत बड़ा विश्वासघात सहन करना पड़ता है।
24. यदि मस्तिष्क रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो वह व्यक्ति संकुचित विचारधारा का होता है।
25. यदि जीवन रेखा मस्तिष्क रेखा के ऊपर से उद्गम करती हुई आगे बढ़ती हो और साथ में कई छोटी-मोटी रेखाएँ हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक शक्तिशाली होता है।
26. यदि यह रेखा चन्द्र पर्वत पर जाकर समाप्त होती हो, तो वह व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।
27. यदि यह रेखा जीवन रेखा से मिलकर हृदय रेखा की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति अंधा होता है।
28. यदि स्वास्थ्य रेखा और मस्तिष्क रेखा दोनों ही लहरदार हों, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त कमजोर होता है।
29. यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत से निकलकर मस्तिष्क रेखा को काटती हो, तो उसका गृहस्थ-जीवन बरबाद हो जाता है।
30. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकलकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हो तो उसका प्रेम जीवन भर गुप्त बना रहता है।
31. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा निकलकर शनि पर्वत की ओर जाती हो तो वह जीवन में उच्चकोटि का धार्मिक व्यक्ति होता है।
32. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा सूर्य पर्वत की ओर जाती हो, तो उसे आकस्मिक धन-लाभ होता है।
33. यदि सूर्य पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों, तो उसे राष्ट्रव्यापी सम्मान मिलता है।
34. यदि बुध पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों, तो वह व्यक्ति करोड़पति होता है।
35. यदि मंगल पर्वत बलवान हो और इस रेखा के अन्त में त्रिकोण बना हुआ हो, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी की हत्या अवश्य करता है।
36. यदि यह रेखा मध्यमा उंगली पर चढ़ जाए, तो उस व्यक्ति की डूबने से मृत्यु होती है।
37. यदि यह रेखा सभी दृष्टियों से दोषमुक्त हो, तो व्यक्ति का चुम्बकीय व्यक्तित्व होता है।

आयुर्वेद सुधा

गाजर

गाजर में शरीर के लिए पोषक-तत्व होते हैं। इनमें कोषों एवं धमनियों को संजीवन करने की क्षमता होती है। गाजर के रस में जीवनदायिनी शक्ति है। जिनमें मीठा लेना निषेध होता है, जैसे डायबिटिज आदि को छोड़कर गाजर प्राय: हरेक रोग में सेवन की जा सकती है।

गाजर की आरोग्य शक्ति–सदा काम करते रहने से शरीर क्षीण होता है। इस क्षीणता की पूर्ति गाजर में निहित तत्वों से हो जाती है। फलत: रोग अनायास ही दूर हो जाते हैं। गाजर का रस पीने से पाचन संस्थान मजबूत होता है। मल में दुर्गन्ध और विषैले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

गाजर में विटा-केरोटिन औषधीय तत्व है। यह कैंसर पर नियंत्रण करने में उपयोगी है। लम्बी बीमारी भोगने के बाद उसकी क्षतिपूर्ति करने में गाजर का रस बहुत ही प्रभावकारी है। रोगी चुस्त और शक्तिशाली बनता है।

गाजर प्राय: पूरे भारतवर्ष में पाई जाती है इसको प्राय: सभी लोग जानते हैं अत: अधिक वर्णन की आवश्यकता नहीं है अत: जब तक गाजर उपलब्ध हो तब तक गाजर का सेवन करते रहना चाहिए।

इसको लगभग सभी भाषाओं में गाजर के नाम से ही जाना जाता है।

गुण–यह मधुर, तीक्ष्ण, गरम, रोग नाशक, वात नाशक, अग्निवर्धक, हृदय के लिए हितकारी और कुष्ठ, बवासीर, दमा, शूल आदि में फायदा पहुंचाती है। पेशाब एवं दस्त को साफ करती है। शरीर को मोटा करती है। शहद में तैयार मुरब्बा कामशक्ति बढ़ाता है। इसके बीज मूत्रल, कामोद्दीपक एवं गर्भाशय को साफ करने वाले होते हैं।

विटामिन्स–गाजर के रस में विटामिन 'ए' सर्वाधिक मिलता है। विटामिन बी,सी,डी,ई,जी और के भी मिलते हैं। गाजर के रस में सोडियम, पोटेशियम, केलशियम, मैग्नेशियम तथा लोह तत्त्व होते हैं। गाजर से मज्जातंत्र (नर्वस सिस्टम) की रक्षा होती है।

स्मरण-शक्तिवर्धक–प्रात: सात बादाम खाकर ऊपर से सवा-सौ ग्राम गाजर का रस आधा किलो गाय के दूध में मिलाकर पीने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

नेत्र-शक्तिवर्धक–गाजर में विटामिन 'ए' होने से इसका रस आँखों की कमजोरी, रतौंधी अर्थात् रात में न दिखना दूर करता है और बुढ़ापे में भी बिना ऐनक पढ़ सकते हैं। नेत्र ज्योति बढ़ती है।

दूध की वृद्धि–दूध पिलाने वाली माताओं को गाजर का रस पिलाने से दूध बढ़ता है।

पेट के रोग–गाजर में विटामिन बी कम्पलेक्स मिलता है जो पाचन-संस्थान को शक्तिशाली बनाता है। भोजन न पचना, पेट में वायु पैदा होना इससे दूर हो जाता है। इससे आँतों की गैस, ऐंठन, शोथ, घाव, जलोदर, एपेन्डीसाइटिस, वृहदान्त्र शोथ, सड़ांद, खराश दूर हो जाती है और मल में बदबू नहीं आती। इसका रस पीते ही आराम प्रतीत होता है। बलगमी बीमारियों में लाभ करती है। दस्त साफ लाती है। भूख बढ़ाती है। मुँह की बदबू दूर होती है।

बच्चों की दुर्बलता–दुर्बल बच्चों को दो-तीन चाय की चम्मच गाजर का रस नित्य तीन बार पिलाने से बच्चे हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं। स्वस्थ बच्चों को पिलाने से भी बच्चे बलिष्ठ हो जाते हैं। बच्चे की माँ भी गाजर खाये या रस पीये तो उत्तम स्वास्थ्यवर्धक है। जिन शिशुओं को जन्म से ही गाजर का रस दिया जाता है वे कदापि बीमार नहीं पड़ते। दूध के साथ गाजर का रस पिलाने से बच्चे का विकास तेजी से होता है।

कष्टार्तव, अनार्तव–यदि मासिक धर्म न आता होतो दो चम्मच गाजर के बीज और एक चम्मच गुड़ एक गिलास पानी में

उबाल कर नित्य सुबह-शाम दो बार गर्म-गर्म पीयें तो इससे मासिक धर्म में होने वाला दर्द भी ठीक हो जायेगा।

गर्भावस्था–माताओं को गाजर का रस नित्य प्रातः पीना चाहिए। इससे उनके दूध की गुणवत्ता बढ़ती है। गर्भावस्था में गाजर का रस पीते रहने से सेप्सिस रोग नहीं होता। गाजर का रस पीते रहने से शरीर में केलशियम की कमी नहीं रहती। केलशियम की गोलियाँ खाने की आवश्यकता नहीं रहती।

मोटापा–गाजर का रस पीते रहने से मोटापा बढ़ता है।

कैंसर–गाजर का रस पीने से कैंसर में लाभ होता है। ल्युकेमिया (ब्लड कैंसर) और पेट के कैंसर में ज्यादा लाभदायक है।

यकृत–यकृत रोगग्रस्त, पित्तदोषग्रस्त व्यक्तियों को बार-बार गाजर खानी चाहिए। यह यकृत को ताकत देती है।

पीलिया–गाजर पीलिया की प्राकृतिक औषधि है। योरोप में पीलिया के रोगियों को गाजर का रस, गाजर का सूप या गाजर का गर्म काढ़ा देने का रिवाज है।

हृदय की धड़कन बढ़ना तथा रक्त गाढ़ा होने की बीमारी में गाजर लाभ करती है। हृदय कमजोर होने पर नित्य दो बार गाजर का रस पीयें।

घी, तेल, चिकनी चीजें न पचने पर गाजर का रस 310 ग्राम पालक का रस 185 ग्राम मिलाकर पीयें।

तिल्ली–गाजर का आचार बनाकर खिलाने से तिल्ली कम हो जाती है।

बड़ी आँत की सूजन में गाजर का रस 185 ग्राम, चुकन्दर का रस 150 ग्राम, खीरा का रस 160 ग्राम मिलाकर पीयें।

दस्त–इससे पुराने दस्त और अपच के दस्त, संग्रहणी ठीक हो जाते हैं।

कृमि–गाजर का रस आधा पाव नित्य प्रातः भूखे पेट दो सप्ताह तक पीने से पेट के कृमि निकल जाते हैं। कच्ची गाजर खाना भी लाभदायक है।

अम्लरक्ता–गाजर का रस इसे ठीक कर देता है।

चर्म-रोग–गाजर का रस कीटाणुनाशक और संक्रमण को दूर करता है। इससे रक्त की उत्तेजना, सड़ांध दूर हो जाती है। रक्त शुद्ध होकर खुजली, फोड़े-फुंसी में लाभ पहुंचता है। रक्त विकार ठीक हो जाता है। इसका रस पीते रहने से मुँहासे मिटते हैं। चेहरा सुन्दर हो जाता है और रोगी के पीले चेहरे का रंग गुलाब के फूल जैसा हो जाता है। गाजर का रस चर्म-रोगों में लाभदायक है।

चर्म की शुष्कता–विटामिन 'ए' की कमी से चर्म शुष्क हो जाता है। सर्दियों में चर्म में शुष्कता अधिक रहती है। सर्दियों में गाजर बहुत मिलती है। गाजर में विटामिन 'ए' बहुत मिलता है। अतः गाजर खा कर शुष्कता को दूर कर सकते हैं।

दाद–गाजर का बुरादा, बारीक टुकड़े कर लें। इस पर सैंधा नमक डाल कर सेकें। फिर गर्म-गर्म ही दाद पर बाँध दें। आराम मिलेगा।

फोड़े-फुन्सियाँ–गाजर की गर्म पुल्टिन बाँधने से फोड़े-फुन्सियों में लाभ होता है। यह फोड़े-फुन्सियों के जमे हुए रक्त को पिघला देती है।

सीने का दर्द–गाजरों को उबालकर उनका रस निकालें। उसमें शहद मिलाकर पिलाने से दर्द दूर हो जाता है।

पेशाब में सफेदी आना–250 ग्राम गाजर का रस नित्य तीन बार पीयें।

श्वास में दुर्गन्ध–गाजर, पालक, खीरा, प्रत्येक का रस 125 ग्राम मिलाकर पीयें।

नेत्र ज्योति कम होना–पालक और गाजर, प्रत्येक का रस 125 ग्राम मिलाकर पीयें।

रक्त में लाल कणों कमी–गाजर कर रस 250 ग्राम, पालक का रस मिलाकर पीयें।

सिर-दर्द-दाद, दमा, बुखार–गाजर का रस 185 ग्राम, चुकन्दर का रस 250 ग्राम, खीरा या ककड़ी का रस 125 ग्राम मिलाकर पीयें।

दमा–नित्य एक गिलास सुबह एक गिलास दोपहर में गाजर का रस पीते रहने से दमा में शीघ्र लाभ होता है। 10-15 दिन नियमित पीने से आशातीत लाभ होता है। मात्रा बढ़ा भी सकते हैं। दो की जगह तीन बार भी पी सकते हैं।

गाजर का रस 310 ग्राम, पालक का रस 125 ग्राम मिलाकर पीने से जहरबाद, हर प्रकार का रक्त चाप, गुर्दे के रोग, जैसे पेशाब बूँद-बूँद आना, पेशाब कम होना, पेशाब में सफेद-सा पदार्थ आना, श्वास नली की सूजन (ब्रोन्काइटिस), कैंसर, मोतियाबिंद, सर्दी, जुकाम, कण्ठमाला (घेंघा), बवासीर दूर हो जाते हैं।

सेवन विधि–गाजर के रस का एक गिलास प्रातः भूखे पेट नाश्ते से पूर्व और शाम को दो बार नित्य पीना चाहिए। इसे दूध में मिलाकर भी पी सकते हैं। गाजर का मिश्रित रस दिन में तीन बार पीना चाहिए।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

संगति से गुण दोष

एक राजा घोड़े पर सवार होकर वन में अकेले जा रहा था। जब वह भीलों की झोंपड़ी के पास से निकला, तब एक भील के द्वार पर पिंजड़े में बंद तोता पुकार उठा – 'दौड़ो! पकड़ो! मार डालो इसे! इसका घोड़ा छीन लो! इसके गहने छीन लो!'

राजा ने समझ लिया कि वह डाकुओं की बस्ती में आ गया है। उसने घोड़े को पूरे वेग से दौड़ा दिया। डाकू दौड़े सही; किंतु राजा का उत्तम घोड़ा कुछ ही क्षण में दूर निकल गया। हताश होकर उन्होंने पीछा करना छोड़ दिया।

आगे राजा को संतों का आश्रम मिला। एक कुटी के सामने पिंजड़े में बैठा तोता उन्हें देखते ही बोला – 'आइये राजन्! आपका स्वागत है। अरे! अतिथि पधारे हैं! अर्घ्य लाओ! आसन लाओ!

कुटी में से संत बाहर आ गये। उन्होंने राजा का स्वागत किया। राजा ने पूछा – 'एक ही जाति के पक्षियों के स्वभाव में इतना अंतर क्यों?'

संत के बदले तोता ही बोला – राजन्! हम दोनों एक ही माता-पिता की संतान हैं; किंतु उसे डाकू ले गये और मुझे ये संत ले आये। वह हिंसक भीलों की बातें सुनता है और मैं संतों के वचन सुनता हूँ। आपने स्वयं देख ही लिया कि किस प्रकार संगति के कारण प्राणियों में गुण या दोष आ जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि अच्छे लोगों की संगत करना चाहिए।

सद्गुरुदेव ने सिद्धाश्रम दिल्ली में स्टाफ को प्रात:काल के समय दिये प्रवचन में यही बात आज से 24वर्ष पूर्व कही थी कि तुम सभी को बुरी संगति से दूर रहना चाहिए, बुरी संगति तुम्हारे जीवन को बर्बाद कर देगी और मैं फिर कहता हूँ कि बुरी संगत तुम्हारे जीवन को बर्बाद कर देगी ऐसा उन्होंने तीन बार कहा था।

तीन बार उनके श्रीमुख से निकले यह शब्द अपने आप में कितना गुढ़ अर्थ समेटे हुये हैं।

आज यह आख्यान पढ़ने के बाद सद्गुरुदेव के वही शब्द मेरे मस्तिष्क में फिर से गूंजने लगे। और मैं उन्हीं में खो गया अत: हम सबको इस पर गहनता से विचार करना चाहिए।

- राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष–माह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, धन लाभ होगा, उन्नति के अवसर मिलेंगे, समाज में सम्मान मिलेगा, विकास के अवसर हैं। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखने का समय है। घरेलू उलझनें बढ़ सकती हैं, जिससे मानसिक तनाव में वृद्धि होगी। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। वाहन चालन में सावधानी रखें। चोटादि का खतरा है। माह के मध्य में जमीन-जायदाद के मामलों में परेशानी आयेगी। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में व्यस्त रहेगा। सरकारी कर्मचारियों की उन्नति के अवसर हैं। उत्तरार्ध के समय दौड़-धूप एवं खर्च की अधिकता रहेगी। चिड़चिड़ेपन से बचें। अंत में परिवार का सहयोग मिलेगा। आप इस माह शाकंभरी साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 6, 7, 8, 10, 13, 18, 22, 26

वृष–माह का प्रारम्भ मन में खिन्नता लेकर आयेगा। आय से अधिक व्यय होंगे, कार्य बनते-बनते बिगड़ जायेंगे। पारिवारिक समस्यायें परेशान करेंगी। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। किसी मित्र से गलतफहमी के कारण झगड़ा भी हो सकता है। अतः संयम बरतें, विवाद प्रेम से सुलझायें। विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। कोई अशुभ समाचार भी मिल सकता है। माह के मध्य के बाद समस्यायें दूर होंगी। पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। संतान के कार्यों पर ध्यान रखें। वाणी पर संयम रखें। प्रोपर्टी के कार्य में लाभ के अवसर हैं। आप इस माह गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 11, 12, 21, 22, 23

मिथुन–माह का प्रारम्भ शुभ है। जीवन में भागदौड़ रहेगी। रुके हुये कार्य प्रारम्भ होंगे, खर्च की अधिकता रहेगी। संतान पक्ष की ओर से शुभ समाचार मिलेंगे। किसी भी निर्णय को लेने के पूर्व सोच-विचार कर लें। लापरवाही से लिया निर्णय हानिप्रद होगा, स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। कोई पेट की समस्या हो सकती है। किसी अपने से टकराव भी हो सकता है। शत्रु शांत रहेंगे। दूसरों के वाद-विवाद में न पड़े, जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कुछ नये लोगों से मुलाकात होगी जो भविष्य में आपको सहयोग करेंगे। इस माह गर्म वस्त्र एवं अन्न का दान करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 12, 13, 14, 22, 23, 24, 25

कर्क–माह का प्रारम्भ उत्साह लेकर आयेगा। जीवन में मिश्रित प्रभाव रहेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। आपके अन्दर आध्यात्मिक कार्यों में रुचि पैदा होगी। आय के साधनों में वृद्धि होगी। पारिवारिक मामलों में तनाव हो सकता है। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। खर्च पर नियंत्रण रखें। संतान पक्ष पर ध्यान दें, घर के कार्यों के लिए भी समय निकालें, मानसिक तनाव एवं क्रोध की भावना से दूर रहें। माह के अंत में विघ्न-बाधाएं कम होंगी। आप इस माह भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 3, 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24, 25, 30, 31

सिंह–माह का प्रारम्भ मध्यम है। कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो कर सकते हैं। भाग्योन्नति के अवसर हैं, नवीन योजनायें बनेंगी, आर्थिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा परन्तु घबरायें नहीं। परिश्रम से आगे बढ़ें, साधना का मार्ग अपनाएं। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य ठीक रहेगा, रिश्तेदारों से मतभेद हो सकता है। शत्रु पक्ष परेशान करने की कोशिश करेगा। कोर्ट-कचहरी की समस्या भी परेशान कर सकती है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। माह के अंत में कोई आकस्मिक व्यय हो सकता है। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। आप अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 8, 9, 10, 17, 18, 25, 26, 27, 28

कन्या–इस माह का प्रारम्भ अनकूल नहीं है, समस्याओं और अड़चनों का सामना करना पड़ेगा। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी परन्तु रुकावटों के कारण कार्य रूप देने में विलम्ब होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, कोई यात्रा भी हो सकती है। कोई शुभ समाचार मिल सकता है। अत्यधिक खर्च

और घरेलू उलझनें तनाव पैदा कर सकती हैं। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। संतान की ओर से चिंता रहेगी। स्वास्थ्य की ओर से सावधान रहें, लापरवाही न बरतें। वाहन चालन में भी सावधानी की आवश्यकता है। वाद-विवाद में न पड़ें। माह के आखिर में बनते कार्यों में विघ्न आ सकता है। आप इस माह विघ्न विनाशक गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 3, 6, 7, 13, 14, 15, 24, 25, 26, 31

तुला–माह का प्रारम्भ मध्यम स्थिति में रहेगा। घरेलू समस्याओं के कारण तनाव रहेगा। कार्य एवं व्यवसाय के लिए नई योजनायें बनेगी लेकिन सफलता कम ही मिलेगी। माह के मध्य में कोई व्यक्ति के सहयोग से आपको आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें, कोई पुरानी बीमारी परेशान कर सकती है। जीवनसाथी से तनाव हो सकता है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। संतान की गतिविधियों पर ध्यान रखें। घर में कोई बुजुर्ग की बीमारी आपको परेशान कर सकती है। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में व्यस्त रहेंगे। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माह के अंत में रुके हुये कार्यों में सफलता मिलेगी एवं निर्वाह योग्य धनप्राप्ति के साधन बनेंगे। आप शनि साधना करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 14, 15, 16, 21, 27, 28

वृश्चिक–माह का प्रारम्भ अच्छा है परन्तु परिवार में उलझनों एवं परेशानियों के कारण मन परेशान रहेगा। आर्थिक परेशानियां भी रहेगी। हालात कठिन रहेंगे परन्तु धन प्राप्ति के अवसर अवश्य ही आयेंगे। नौकरीपेशा लोग अधिकारियों से मोलजोल बनाकर चलें। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में पूर्ण प्रयास करना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी। परिवार में कुछ मनमुटाव रहेगा। जीवनसाथी से नोक-झोंक हो सकती है। परिवार को समय दें। किसी भी प्रकार के प्रेम-प्रसंगों से दूर रहें। विरोधियों से सावधान रहें। व्यवसायिक कार्यों में अड़चनों के बाद भी सफलता मिलेगी। आर्थिक उन्नति के समाचार मिलेंगे। आप इस माह शाकंभरी साधना सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 19, 20, 26, 27, 28, 31

धनु–यह माह आपके लिए अनुकूल नहीं है। कार्य एवं व्यवसाय में परेशानियां बढ़ेंगी। सामाजिक प्रतिष्ठा कमजोर होगी। आलस्य त्याग कर कार्य में उत्साह से लगे कोई आकस्मिक परेशानी आने पर जीवनसाथी से सलाह लें। शत्रुओं से सावधान रहने का समय है। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, शारीरिक कष्ट आ सकता है। व्यर्थ के खर्च बढ़ेंगे नौकरीपेशा लोगों को अपने अधिकारी वर्ग से संयम का बर्ताव करना चाहिए। इस समय व्यवसाय में अत्यन्त कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तभी उन्नति होगी, अहंकार से दूर रहें। मित्रों का सहयोग माह के अंत में प्राप्त होगा और सफलता प्राप्त होगी। आप भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 3, 4, 5, 6, 14, 15, 16, 21, 22, 30

मकर–माह का प्रारम्भ संघर्षपूर्ण स्थिति लायेगा फिर धीरे-धीरे जीवन सामान्य होगा। यह पुरुषार्थ का माह है जितनी

सर्वार्थ सिद्धि योग	-	जनवरी 6, 10, 21, 25, 30
रवि योग	-	जनवरी 5, 10, 18, 22, 23, 24, 27
अमृत सिद्धि योग	-	जनवरी 25, 28
गुरु पुष्य योग	-	जनवरी 28 (प्रातः 7.28 से रात्रि 3.30 तक)

सजगता से पुरुषार्थ करेंगे उतना ही आपको लाभ होगा। खर्च बढ़ेंगे, जिससे घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। परिवार में तनाव की स्थिति रहेगी, जीवनसाथी से अनबन भी हो सकती है। खर्च सोच-समझकर ही करें। नौकरीपेशा लोगों के लिए कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, अहंकार से दूर रहें अन्यथा किसी समस्या में फंस सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग की पढ़ाई में रुचि रहेगी। माह के अंत में जीवन सामान्य हो जायेगा। आप भैरव साधना करें।

शुभ तिथियाँ- 3, 4, 5, 6, 16, 17, 24, 25, 26

कुम्भ–माह का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा है। धनप्राप्ति के योग बन रहे हैं, जीवन में अड़चनें रहेंगी परन्तु सफलता भी मिलेगी किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क बढ़ेंगे, जिसके सहयोग से धन प्राप्ति के नये स्रोत बनेंगे। जीवनसाथी एवं परिवार का सहयोग मिलेगा। सुख साधनों पर धन व्यय होगा। माह के मध्य में कुछ आकस्मिक खर्च आ सकते हैं। इस माह में यात्रा का प्रोग्राम भी बन सकता है। कुछ शत्रु परेशान कर सकते हैं। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी सिर्फ संयम रखें। क्रोध से दूर रहें। इस माह आप सर्व कार्य सिद्धि दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 7, 8, 9, 16, 17, 18, 26, 27, 28, 31

मीन–माह का प्रारम्भ मिला-जुला फल देगा। कठिन परिश्रम का समय है। जीवन निर्वाह हेतु आलस्य का त्याग कर परिश्रम करें। खर्चों की अधिकता रहेगी, जिससे मानसिक तनाव भी हो सकता है। माह के मध्य में समय बदलकर आपके पक्ष में आयेगा। आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। साधनाओं में सफलता के अवसर हैं। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, घर में वातावरण सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधनी रखें, माह के अन्तिम सप्ताह में धन लाभ होगा। किसी मित्र की सहायता से रुका कार्य पूर्ण होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा समय है। इस माह आप भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 3, 11, 12, 13, 21, 28, 29

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

6.1.21	बुधवार	कालाष्टमी
9.1.21	शनिवार	सफला एकादशी
13.1.21	बुधवार	पौष अमावस्या
14.1.21	गुरुवार	मकर संक्रांति
24.1.21	रविवार	पुत्रदा एकादशी
28.1.21	गुरुवार	शाकम्भरी जयंती
28.1.21	गुरुवार	गुरु पुष्य योग

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है: जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जनवरी-3, 10, 17, 24)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (जनवरी-4, 11, 18, 25)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (जनवरी-5, 12, 19, 26)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (जनवरी-6, 13, 20, 27)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरूवार (दिस-31, जनवरी-7, 14, 21, 28)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (जनवरी-1, 8, 15, 22)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (जनवरी-2, 9, 16, 23)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जनवरी 21

11. आज प्रातः गाय को रोटी खिलाने के बाद भोजन करें।
12. किसी गरीब को दक्षिणा के साथ अन्न दान करें।
13. प्रातः पूजन के बाद पक्षियों को दाना डालें।
14. आज प्रातः भगवान सूर्य को अर्घ्य दें, सम्भव हो तो सूर्य साधना करें।
15. आज थोड़ा दही खाकर कार्य पर जायें।
16. आज पीपल के पेड़ में जल अर्पित करके तीन परिक्रमा करें।
17. आज गायत्री मंत्र की एक माला जप करके जाएं।
18. पारद शिवलिंग पर जल चढ़ायें।
19. हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डुओं का भोग लगायें।
20. आज प्रातः घी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं-

    ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

21. आज सद्गुरुदेव जन्म दिवस पर अपनी किसी गलत आदत को छोड़ने का संकल्प लें।
22. किसी देवी मन्दिर में एक दीपक लगायें।
23. आज सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
24. आज निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
25. किसी शिव मन्दिर में सफेद पुष्प अर्पित करें।
26. अपने पूजा स्थान में हनुमान यंत्र स्थापित करके हनुमान चालीसा के 11 पाठ करें, मनोकामना पूर्ण होगी।
27. दो गोमती चक्र (न्यौ. 60/-) पीले चावल की ढेरी पर स्थापित करके 'ह्रीं' मंत्र का 108 बार उच्चारण कर लाल वस्त्र में बांध करके रखें।
28. आज गुरु पुष्य योग है, प्रातः 7.28 के बाद कोई साधना करें।
29. तांत्रोक्त नारियल (न्यौ. 150/-) पर सिंदूर लगायें और फिर घर में घुमाकर किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।
30. आज प्रातः गुरु मंत्र के बाद 11 बार भैरव मंत्र का जप करें।
31. प्रातःकालीन गुंजरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।

फरवरी 21

1. प्रातः 5 मिनट तक शिवोऽहं शिवोऽहं का जप करें।
2. हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करें, विघ्न दूर होंगे।
3. तुलसी के पौधे का पूजन कर दीप जलायें।
4. प्रातः गाय को रोटी खिलायें।
5. आज श्रीयंत्र का पूजन करें एवं निम्न मंत्र का 21 बार जप करें- ॐ श्रीं ॐ।
6. आज किसी दुर्गा मन्दिर में आरती करें।
7. किसी ब्राह्मण को अन्न दान करें।
8. ॐ नमः शिवाय का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
9. हनुमान मन्दिर में सुबह-शाम गुड़ चने का भोग लगायें।
10. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. श्रवण करके जाएं।

बसंत पंचमी ❀ 16.02.2021

बसंत पंचमी के अवसर पर जब गुरु गोरखनाथ ने सरस्वती सिद्ध की

बसंत पंचमी जहां बसंत के आगमन का द्योतक है, वहीं पर यह दिन 'सरस्वती दिवस' भी कहलाता है, इस वर्ष बसंत पंचमी या सरस्वती जन्म दिवस 16.02.2021 को सम्पन्न हो रहा है।

इस दिन सरस्वती सिद्ध कर मंत्र साधना में सिद्धि प्राप्त की जाती है, साधना में सफलता प्राप्त की जाती है, कण्ठ में सरस्वती को स्थापित किया जाता है और बच्चों की जीभ पर सरस्वती स्थापन कर उन्हें शिक्षा, ज्ञान और सफलता के क्षेत्र में पूर्णता प्रदान की जाती है। जिस प्रकार से गुरु गोरखनाथ इस पर्व पर अद्वितीय साधना सम्पन्न कर उच्चकोटि के सिद्ध और सरस्वती के वरद पुत्र कहलाये, वही गोपनीय साधना आगामी पंक्तियों में पत्रिका-पाठकों के लिए स्पष्ट की जा रही है।

बसंत पंचमी

आनन्द का पर्व है,

साधकों के लिए तो यह दिन वरदान स्वरुप है और जो उच्चकोटि के साधक हैं वे इस दिन की प्रतीक्षा पूरे वर्षभर करते रहते हैं।

'गोरक्ष संहिता' में एक अत्यन्त गोपनीय प्रयोग प्रकाशित है, जिसमें बताया गया है कि गोरखनाथ को उनके गुरु ने जिस प्रकार इस बसंत पंचमी पर्व पर विशेष साधना के द्वारा उनके कण्ठ और उनकी जीभ पर सरस्वती को स्थापित किया, जिसकी वजह से उन्हें सभी वेद, उपनिषद, कण्ठस्थ हो सके, वे श्रेष्ठतम प्रवचन देने में समर्थ हो सके और पूरे संसार में गुरु गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हो सके।

साधना-फल

यह साधना अत्यन्त संक्षिप्त होते हुए भी परम गोपनीय रही है और मेरा स्वयं का यह अनुभव है कि इस दिन इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति अच्छा भाषण देने वाला बन जाता है, वह जो भी बात कहता है, सुनने वाले मन्त्र मुग्ध होकर उसके प्रवचन या भाषण को सुनते रहते हैं, उसे हजारों श्लोक और मन्त्र कंठस्थ हो जाते हैं, घर के बालकों को यह प्रयोग सम्पन्न कराने से उनका ध्यान पढाई में लगता है, मन को एकाग्रता होती है, वह जो भी पढता है, वह स्मरण हो जाता है और परीक्षा में श्रेष्ठ अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हो पाता है।

वास्तव में ही यह दिन परिवार के सभी सदस्यों के लिए अत्यधिक उपयोगी है, देवताओं तक ने इस दिवस का उपयोग सरस्वती सिद्ध करने में सम्पन्न किया, शंकराचार्य ने इसी दिन सरस्वती साधना सिद्ध की और भारत के श्रेष्ठ योगियों ने इस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त की।

साधना-रहस्य

प्रात:काल साधक जल्दी उठ जाय और स्नान आदि से निवृत्त होकर बासन्ती वस्त्र धारण करे या पीले वस्त्र पहने फिर घर के किसी स्वच्छ कमरे में या पूजा स्थान में अपने परिवार के साथ बैठ जाय, यदि संभव हो तो सामने

सरस्वती का चित्र स्थापित कर दें।

इसके बाद एक थाली में 'सरस्वती यंत्र' का अंकन निम्न प्रकार से करे, यह सरस्वती यन्त्र अंकन चांदी की शलाका से करें, साधकों को चाहिए कि वह पहिले से ही चांदी की एक शलाका या चांदी का एक तार बनवा कर अपने पास रख लें।

इसके बाद एक कटोरी में 'अष्टगंध' घोल दें, अष्टगन्ध में आठ महत्वपूर्ण वस्तुओं का समावेश होता है, जो कि अत्यन्त दिव्य होती है, कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण के शरीर से अष्टगन्ध प्रवाहित होती रहती थी इसके बाद सामने थाली में इस अष्टगन्ध से ही निम्न प्रकार से सरस्वती यन्त्र चांदी की शलाका से अंकित करें।

सरस्वती यंत्र
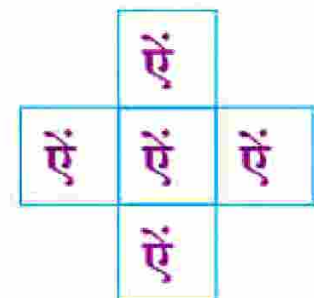
फिर इस यन्त्र पर सरस्वती यन्त्र (धारण) रखें। ये यन्त्र मन्त्र सिद्ध प्राण

वास्तव में ही यह बसंत का दिन परिवार के सभी सदस्यों के लिए अत्यधिक उपयोगी है,
देवताओं तक ने इस दिवस का उपयोग सरस्वती सिद्ध करने में सम्पन्न किया, शंकराचार्य ने इसी दिन
सरस्वती साधना
सिद्ध की और भारत के श्रेष्ठ योगियों ने इस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त की।

प्रतिष्ठायुक्त चैतन्य मन्त्र से सिद्ध होने चाहिए।

ये यन्त्र आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं, सरस्वती यन्त्र पर न्यौछावर मात्र 240/- रु. है, आप अपने लिए अथवा अपने पुत्रों और पुत्रियों के लिए अपनी पत्नी या सम्बन्धियों के लिये यन्त्र पत्रिका कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

आप हमें सूचित करें कि आपको कितने सरस्वती यन्त्रों की आवश्यकता है, साथ ही साथ जिस बालक या बालिका के लिए सरस्वती यन्त्र की आवश्यकता हो उसका नाम भी हमें लिख भेजें, जिससे कि उनके नाम से यन्त्र सिद्ध कराया जा सके।

इसके बाद अलग पात्र में इन यन्त्रों को कच्चे दूध से धोकर फिर जल से धोवें ओर पोंछ कर जिस थाली में सरस्वती यन्त्र अंकित किया था, उस पर इन सभी यन्त्रों को रख दें और उन पर अष्टगन्ध का तिलक करें, पुष्प चढावें, सामने अगरबत्ती और दीपक लगावें और दूध का बना प्रसाद समर्पित करें, सभी यन्त्रों के लिए केवल एक ही दीपक जलाना पर्याप्त है।

इसके बाद सरस्वती मन्त्र का जप 108 बार घर का मुखिया करे या जितने भी बालक-बालिकाएं हैं, वे सभी मात्र 108 बार सरस्वती मन्त्र जप करें।

सरस्वती मन्त्र

।। ॐ ऐं सरस्वत्यै ऐं नमः।।

इसके बाद सरस्वती चित्र की संक्षिप्त पूजा करें और उसके सामने पुष्प चढावें, यदि सम्भव हो तो स्वयं और अपने बालकों को भी पीले पुष्पों की माला पहिनावे।

इसके बाद घर का मुखिया चांदी की शलाका से अष्टगन्ध के द्वारा प्रत्येक साधक अथवा बालिका या पत्नी की जीभ पर 'ऐं' (सरस्वती बीज मन्त्र) लिखे और फिर अपनी स्वयं की जीभ पर भी इस बीज मन्त्र को अंकित करें, इसके बाद चांदी की शलाका को धो कर रख दें।

मुहूर्त

बालक-बालिकाओं आदि की जीभ पर सरस्वती बीज मन्त्र का अंकन बसंत पंचमी के दिन अमृत काल में प्रातः 06.00 से 08.24 के मध्य करें।

फिर कोई धागा या चैन उस यन्त्र में पिरोकर प्रत्येक के गले में सरस्वती यन्त्र पहिना दें, साधकों और बालकों को चाहिए कि उस दिन यह यन्त्र गले में पहिने रहें, यों वे चाहे तो आगे भी यह यन्त्र गले में पहिने रख सकते हैं अथवा दूसरे दिन इन यन्त्रों को उतार कर अपने कमरे में जहां वे पढते हैं या पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

यह प्रयोग दिखने में भले ही छोटा और सामान्य प्रतीत हो रहा हो, परन्तु यह अपने आप में अत्यन्त तेजस्वी और दिव्य प्रयोग है, मैंने जीवन में जिस जिस पर भी इस प्रयोग को आजमाया है, अपने आप में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

वास्तव में ही बसंत पंचमी पर्व हमारे जीवन का सौभाग्य है और हमें चाहिए कि इस अद्वितीय साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता, साधना में सिद्धि और सभी दृष्टियों से सफलता प्राप्त करें।

सरस्वती यंत्र (धारण)-240/-

सरस्वती चित्र- 20/-

स्वप्नेश्वरी साधना का प्रयोग

साधना में सफलता और असफलता की कसौटी उसमें सिद्धि ही है।

लेकिन क्या साधना सही रूप से हो रही है या नहीं और क्या मैं सही मार्ग पर आगे बढ़ रहा है, इसका उत्तर साधक को साधना के दौरान होने वाली अनुभूतियों के द्धारा ही मिलता है।

यह अनुभूति किसी न किसी रूप में अवश्य ही अनुभव होती है, बस आवश्यकता है कि हम अपनी आंतरिक शक्तियों को उतना जाग्रत कर दें।

स्वप्न में प्रत्येक व्यक्ति को कुछ विशेष दिशा निर्देश अवश्य ही प्राप्त होते हैं परंतु हर व्यक्ति इन निर्देशों को ग्रहण नहीं कर सकता। स्वप्न में अपने प्रश्नों के सही-सही उत्तर जानने के लिए 'स्वप्नेश्वरी साधना' एक प्रमुख है। इस साधना को किसी भी शुक्रवार से संध्या के समय प्रारंभ किया जा सकता है। यह दो दिन की साधना है नित्य 51 माला मंत्र जप करना है। इसमें स्वप्नेश्वरी माला का प्रयोग करें। इस साधना में साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने 'स्वप्नेश्वरी यंत्र (ताबीज रूप में)' का पंचोपचार पूजन करें। फिर गुरु पूजन कर स्वप्नेश्वरी मंत्र जप करें।

मंत्र

।।ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरी विचार्य विद्ये वद वद स्वाहा।।

साधना के बाद किसी विशेष प्रश्न का उत्तर जानने के लिये रात्रि में सोते समय एक माला मंत्र जप करें एवं प्रश्न लिख कर अपने सिरहाने रख दें और स्वप्नेश्वरी यंत्र को अपनी भुजा पर बाँध लें। रात्रि में साधक को अपने प्रश्न का उत्तर अवश्य ही प्राप्त होता है, और उस समय अचानक साधक की आँख खुल जाती है। उस उत्तर पर विचार कर साधक अपने सद्गुरुदेव को प्रणाम कर पुन: शयन करें, और जैसा स्वप्न में उत्तर मिला है उसी अनुसार कार्य करें उसके गुण अवगुणों पर विचार न करें।

साधना सामग्री : 510/-

षोडशी श्रीविद्या स्तोत्र

• भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा रचित

यह स्तोत्र अपने आप में गोपनीय और महत्वपूर्ण रहा है, दूसरे शब्दों में इसे

लक्ष्मी स्तोत्र, महालक्ष्मी स्तोत्र, कनकवर्षा स्तोत्र, कल्याणवृष्टि स्तोत्र भी कहा जाता है।

यह महाविद्या है और इसको सिद्ध करने के लिए ऊँचे से ऊँचे साधक लालायित रहते हैं, भारतवर्ष के आधे से अधिक साधक षोडशी श्रीविद्या के उपासक हैं। उनके लिए यह स्तोत्र अमृत के समान है।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र में कुल सोलह अक्षर हैं और इस स्तोत्र में भी सोलह पद हैं तथा प्रत्येक पद का प्रारम्भ मन्त्र के प्रत्येक अक्षर से है, यदि इन सोलह पदों के पहले अक्षरों को मिला कर पढ़ें तो वह **'षोडशी मंत्र'** बन जाता है।

इस प्रकार यह एक अद्भुत, आश्चर्यजनक और दुर्लभ स्तोत्र है, जो साधक नित्य इसका पाठ करते हैं, उनके जीवन में आर्थिक बाधा तो रह ही नहीं सकती, वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सुख-सौभाग्य युक्त एवं समृद्ध होता है।

कल्याणवृष्टि - भिरिवामृतपूरिताभि
लक्ष्मीस्वयंवरण - मंगलदीपिकाभि:
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्।।1।।

अर्थ–हे अम्बे! अमृत से परिपूर्ण कल्याण की वर्षा करने वाली एवं लक्ष्मी को स्वयं वरण करने वाली मंगलमयी दीपमाला की भांति आपकी सेवाओं में आपके चरण कमलों में भक्ति भाव रखने वाले मनुष्यों के मन में क्या नहीं कर दिया, अर्थात् उनके समस्त मनोरथों को पूर्ण कर दिया।

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगते च नेत्रे
सानिध्यमुद्यदरूणायत - सोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽ प्लुतस्य।।2।।

अर्थ–जननि! तेरी तो बस यही स्पृहा है, कि परमोत्कृष्ट सुधा से परिप्लुत तथा उदीयमान अरूण-वर्ण सूर्य की क्षमता करने वाले आपके अरूण श्रीविग्रह के सन्निकट पहुँचकर आपकी वन्दनाओं के समय मेरे नेत्र अश्रुजल से परिपूर्ण हो जाय।

ईशित्वभाकलुषा: कति नाम सन्ति
ब्रह्मादय: प्रतियुगं प्रलयाभिभूता:।
एक: स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
य: पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति।।3।।

अर्थ–मां! प्रभुत्वभाव से कलुषित ब्रह्मा आदि कितने देवता हो चुके हैं, जो प्रत्येक युग में प्रलय से अभिभूत (विनष्ट) हो गये हैं, किन्तु एक वही व्यक्ति स्थिरसिद्धियुक्त विद्यमान रहता है, जो एक बार आपके चरणों में प्रणाम कर लेता है।

लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारूण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम्
कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाज:
सम्मोहयन्ति तरूणीर्भुवनत्रयेषु।।4।।

अर्थ–त्रिपुरसुन्दरि! आप में भक्ति भाव रखने वाले भक्तजन एक बार भी आपके करुणा से अंकुरित सुशोभन कटाक्ष को पाकर कामदेव-सदृश सौन्दर्यशाली हो जाते हैं और त्रिभुवन में युवतियों को सम्मोहित कर लेते हैं।

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनैत्रे।
यत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालै:।।5।।

अर्थ–त्रिकोण में निवास करने वाली एवं तीन नेत्रों से सुशोभित माता त्रिपुरसुन्दरि। वेद 'ह्रीं' कार को ही आपका नाम बतलाते हैं, वह नाम जिनके संस्करण में आ गया है, वे भक्तजन यमदूतों के भय को त्याग कर लोकपालों के साथ नन्दवन में क्रीड़ा करते हैं।

हन्तु: पुरामधिगलं परिपूर्यमाण:।
क्रूर: कथं न भविता गरलस्य वेग:।
आश्वासनाय किल मातरिदं तवार्थ
देहस्य शश्वद मृताप्लुतशीतलस्य।।6।।

अर्थ–माता! निरन्तर अमृत से परिप्लुत होने के कारण शीतल बने हुए आपके शरीर का यह अर्धभाग जिनके साथ संलग्न था, उन त्रिपुरहन्ता शंकर जी के गले में भरा हुआ हलाहल विष का वेग उनके लिये अनिष्ट कारक कैसे होता।

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरूहो: प्रणाम:।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च वसुधा महतीं ददाति।।7।।

अर्थ--देवि! आपके चरण कमलों में किया हुआ प्रणाम सर्वज्ञता और सभा में वाक्चातुर्य उत्पन्न करता ही है, साथ ही उद्भासित मुकुट, श्वेत छत्र दो चामर और विशाल पृथ्वी का साम्राज्य भी प्रदान करता है।

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु ,
कारूण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षै।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं,
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम्।।8।।

अर्थ–मां त्रिपुरसुन्दरि! मैं आपकी भक्ति से परिपूर्ण हूँ और आपकी ओर ही दृष्टि लगाये हूँ, अत: आप मुझे अनाथ की और मनोरथों को पूर्ण करने में कल्पवृक्षसदृश एवं करूणासागरस्वरूप अपने कटाक्षों से देख तो लें।

हन्तेतरेश्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव।।9।।

अर्थ–देवि! खेद है, कि अन्यान्य जन आपके अतिरिक्त अन्य निम्न देवताओं में भी मन लगाकर उनकी भक्ति करते हैं, किन्तु मैं मन और वचन से आपका ही स्मरण करता हूँ, आपको ही प्रणाम करता हूँ, क्योंकि जगत् में आप शरणदात्री हैं।

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित्।
नूनं मयापि सदृशं करूणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते च।।10।।

अर्थ–त्रिपुर सुन्दरि! यद्यपि आपके नेत्रों के लिये देखने के बहुत से लक्ष्य वर्तमान है, तथापि किसी प्रकार आप मेरी ओर दृष्टि डाल दें, क्योंकि निश्चय ही मेरे समान करूणा का पात्र कोई पैदा हुआ है और न हो रहा है और न पैदा होगा।

ह्रीं ह्रीं मिति प्रतिदिनं जपतां जनानां
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे
मालाकिरीटमदवारणमाननीयां –
स्तान सेवते मधुमति स्वयमेव लक्ष्मी।।11।।

अर्थ–त्रिपुर में निवास करने वाली माँ! 'ह्रीं' इस प्रकार (आपके बीजमन्त्र का) प्रतिदिन जप करने वाले मनुष्यों के लिए इस जगत् में क्या दुर्लभ है, माला किरीट और उन्मत्त गजराज से युक्त उन माननीयों की तो स्वयं मधुमती लक्ष्मी ही सेवा करती है।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरूहाक्षि
त्वद्वन्दनानि दुरितौधहरोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम्।।12।।

अर्थ–कमलनयनि! आपकी वन्दनाएँ सम्पत्ति प्रदान करने वाली, समस्त इन्द्रियों को आनन्दित करने वाली, साम्राज्य प्रदान करने में कुशल और पाप समूह को नष्ट करने में उद्यत रहने वाली हैं हे माता! वे निरन्तर मुझे ही प्राप्त हो, दूसरे को नहीं।

कल्पोपसंहरणकल्पिततताण्डवस्य ,
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य।
पाशांकुशैक्षवशरासन पुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरिका।।13।।

अर्थ–कल्प के उपसंहार के समय ताण्डव नृत्य करने वाले खण्डपरशु देवदेवाधिदेव परमेश्वर शंकर के लिए पाश, अंकुश, ईख का धनुष और पुष्पबाण को धारण करने वाली आपकी एकमात्र मूर्ति साक्षी रूप से सुशोभित होती है।

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्ध
तेजः परं बहुलकुंकुमपंकशोणम्।
भास्वत्किरीट मृतांशुकलावतंसं
मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम्।।14।।

अर्थ–माता! आपका यह अर्धांग, जो परम तेजोमय, अत्यधिक कुंकुमर्पक से युक्त होने के कारण, चमकदार किरीट से सुशोभित, चंद्रकला से विभूषित, अमृत से परमार्द्र व त्रिकोण के मध्य में प्रकट है, सदा शिवजी से मग्न रहे।

ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
त्वत्तेजसानपरिणतं वियदादिभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः।।15।।

अर्थ–कमल पर निवास करने वाली सुन्दरि! 'ह्रीं' कार ही आपका धाम है, वही आपका रूप है, वही आपका नाम है और वही आपके तेज से उत्पन्न हुए आकाशादि से क्रमशः परिणत–जगत् का आदिकारण है जो ब्रह्मा विष्णु आदि की रचित-पालित वस्तु बनकर परम सुख देता है।

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मंत्रेण संदी पत
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मंत्रवित्
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घवयः।।16।।

इति श्री मदाद्यशंकराचार्यविरचितं कल्याण–
वृष्टिस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।16।।

मां! जो मन्त्रज्ञ तीन 'ह्रीं' कार से सम्पुटित महान् मन्त्र से संदीपित इस स्तोत्र का प्रतिदिन आपके समक्ष जप करता है, उसके राजा लोग वशीभूत हो जाते हैं, उसकी लक्ष्मी चिरस्थायिनी हो जाती है, उसकी वाणी निर्मल सूक्तियों से परिपूर्ण हो जाती है और वह दीर्घायु हो जाता है।

समाधि की पूर्णता के लिए आवश्यक है

क्रिया योग

जब दो विचारधाराओं में द्वन्द्व होने लगता है, मंथन होने लगता है, तो व्यक्ति यह विचार नहीं कर पाता कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। ऐसी ही किन्हीं परिस्थितियों में यह प्रश्न उठता है, कि क्या हमारा जीवन केवल क्षुद्रमय जीवन ही व्यतीत करने के लिए है या जीवन को पूर्णता देने के लिए है। हम उन ऋषियों की संतान हैं, जिनको हमने वशिष्ठ, विश्वामित्र, कश्यप आदि कहा है, जिनका नाम हम गोत्र रूप में उच्चारण करते हैं। हमारी धमनियों में उन महान ऋषियों का खून प्रवाहित हो रहा है, जो ज्ञान और चेतना से युक्त थे, जो अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सके थे।

इसीलिए हमारे मन में बार-बार यह विचार आता है, कि हमें अपने जीवन में साधनाओं को स्थान देकर इसे पूर्णता तक पहुँचाना चाहिए, जिससे कि हम अपने जीवन में जो जड़ स्वरूप हैं, पूर्ण चैतन्य युक्त बनें और हमारे सारे शरीर के अंग, हमारे सारे शरीर की इन्द्रियां और हमारे सारे शरीर के अणु-परमाणु निश्चित हों, जिससे कि हम केवल एक छोटे से क्षेत्र में ही सीमित नहीं रहें, अपितु 'अणुतो महीयम्' शब्द को पूर्णता देते हुए एक अणु में महान बनने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो सकें और जीवन में कुछ ऐसा कर सकें, जिसके माध्यम से हम अणु रूप में पैदा होकर एक महान रूप में अपने जीवन को पूर्णत्व दे सकें . . .और हमें अवश्य ही ऐसा करना चाहिए, जीवन में ऐश्वर्य, यश, कीर्ति, मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, इष्ट दर्शन, सिद्धाश्रम प्राप्ति, विजय, पूर्णता आदि प्राप्त करनी ही चाहिए।

एक कला से सोलह कलाओं तक पहुँचने का, अणु से पूर्णता तक पहुँचने का जो रास्ता है,उस रास्ते पर तीव्रता से बढ़ने की क्रिया को 'क्रिया योग' कहते हैं।
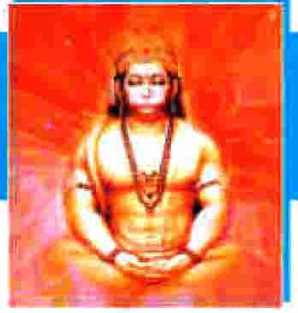
मनुष्य जब जन्म लेता है, तब वह एक कला पूर्ण होता है। उसमें प्राण का होना एक कला है, हर जीवित प्राणी एक कला पूर्ण है। ज्ञान प्राप्ति के साथ ही उसकी कलाओं में वृद्धि होती रहती है। महावीर सात कला पूर्ण पुरुष थे, बुद्ध आठ कला पूर्ण पुरुष थे, राम बारह कला पूर्ण पुरुष थे, केवल श्रीकृष्ण ही सम्पूर्ण सोलह कलाओं से पूर्ण थे।

. . .और एक कला से सोलह कलाओं तक पहुँचने का, अणु से पूर्णता तक पहुँचने का जो रास्ता है, उस रास्ते पर तीव्रता से बढ़ने की क्रिया को 'क्रिया योग' कहते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हमारा शरीर लगभग निष्क्रिय सा है, इस शरीर का मात्र आठ प्रतिशत हिस्सा ही क्रियाशील हो पाता है, शेष बान्वे प्रतिशत हिस्सा निष्क्रिय ही रहता है और आश्चर्य तो इस बात का है, कि हमें इसका ज्ञान ही नहीं है कि इस निष्क्रियता को सक्रियता में किस प्रकार बदला जाए।

जिस प्रकार माला में 108 मनके होते हैं, 108 उपनिषद् हैं, उसी प्रकार हमारे शरीर में 108 इन्द्रियां होती हैं; लेकिन हमें पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां - केवल दस इन्द्रियों का ही ज्ञान हैं, शेष 98 इन्द्रियों का हमें ज्ञान ही नहीं है, फलत: ये सभी इन्द्रियां निष्क्रिय हैं।

इन्हीं 108 इन्द्रियों में से एक सहस्रार है, जो एक हजार नाड़ियों से बना है, लेकिन वर्तमान में यह सुप्तप्राय है, क्योंकि हमने इसका पूर्ण उपयोग करना बन्द कर दिया या हमें इसका ज्ञान ही नहीं है, फलस्वरूप हम इसके गुणों से वंचित हो गए।

इसके जाग्रत होने पर व्यक्ति भूत, भविष्य और वर्तमान अर्थात् काल के किसी भी क्षण को देखने में समर्थ हो जाता है, वह पाँच हजार वर्ष पहले की घटनाओं और आगे आने वाले समय की घटनाओं को भी ज्यों का त्यों देख सकता है, त्रिकालदर्शी हो सकता है।

साथ ही ब्रह्म से साक्षात्कार होने की क्रिया भी सहस्रार जागरण के पश्चात् ही संभव है। इस सहस्रार को स्पन्दन युक्त करने की क्रिया का नाम 'क्रिया योग' है।

भारतवर्ष के महान व्यक्तित्व महात्मा गांधी की भी इच्छा क्रिया योग से दीक्षित होने की थी और जब वे महर्षि योगानन्द से मिले, तो उन्होंने यही प्रार्थना की, कि यदि आप प्रसन्न हैं, तो मुझे क्रिया योग की दीक्षा प्रदान करें।

वशिष्ठ ने भी ब्रह्मा से यही प्रार्थना की थी, कि यदि आप प्रसन्न हैं, तो मुझे क्रिया योग का ज्ञान दें। शंकराचार्य ने भी कहा है, कि क्रिया योग के समान अन्य कोई दूसरी विद्या नहीं है।

क्रिया योग के तीन मूल आधार हैं -

(1) धारणा, (2) ध्यान और (3) समाधि।

1. धारणा

मनुष्य और ब्रह्म के बीच माया विद्यमान रहती है जो ब्रह्म पर एक आवरण डाले रहती है और मनुष्य अपने मूल स्वरूप 'अहं ब्रह्माऽस्मि' को भूल कर 'जीवोऽहं' रूपी अज्ञानता के अंधकार में खोया रहता है। माया के इस आवरण को तोड़ने के लिए जिसको धारण किया जाता है, उसे 'धारणा' कहते हैं।

. . .और यह धारणा मात्र गुरु की ही हो सकती है। गुरु ही एकमात्र ऐसे समर्थ व्यक्तित्व होते हैं, जो प्राणी मात्र के अंतर्मन में ज्ञान का प्रकाश बिखेर कर उसे उसके मूल स्वरूप का बोध कराते हैं। अत: ध्यान और समाधि के सोपान पर पहुँचने के लिए गुरु को धारण करने की क्रिया का नाम 'धारणा' है।

ब्रह्म से साक्षात्कार होने की क्रिया भी सहस्रार जागरण के पश्चात् ही संभव है। इस सहस्रार को स्पन्दन युक्त करने की क्रिया का नाम 'क्रिया योग' है।

योग के तीन भाग हैं - तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान।

शरीर एवं मन द्वारा कष्ट सहने का अभ्यास तपस्या है, अपने धर्म ग्रंथों का अध्ययन और गुरु से प्राप्त मंत्र का जप ही स्वाध्याय है, ईश्वर प्रणिधान का अर्थ है - सदैव इष्ट में ही अपने चित्त को लगाकर अपने समस्त कर्मों के फल को उसके चरणों में समर्पित कर देना। लेकिन श्रेष्ठ योगीजन अपने इष्ट को कर्मफल अर्पण न करके मूल रूप से कर्म को ही अर्पित कर देते हैं। इसके अभ्यास से व्यक्ति कर्म के बंधनों से मुक्त होता है तथा चित्त की शुद्धि होती है। यही श्रेष्ठ योग है।

ज्योंहि हम गुरु को धारण करते हैं, उनके ज्ञान के प्रकाश से हमारा अंतर्मन आलोकित हो उठता है और माया का आवरण छिन्न-भिन्न हो जाता है। गुरु हमारे मूल स्वरूप का बोध कराते हुए हमें उस रास्ते पर अग्रसर कर देते हैं, जो ध्यान और समाधि का रास्ता है, जो पूर्णता का रास्ता है।

गुरु की धारणा में भी एक गुप्त रहस्य है। गुरु को मात्र आज्ञा चक्र में ही धारण किया जा सकता है, अतः जब हम गुरु की धारणा करते हैं, तो स्वतः ही हमारा आज्ञा चक्र जाग्रत हो जाता है और वे सभी क्षमताएं व्यक्ति को प्राप्त हो जाती हैं, जो आज्ञा चक्र के जागरण से संभव हैं।

अतः क्रिया योग का यह प्रथम चरण है, कि व्यक्ति गुरु चरणों में उपस्थित होकर उनसे क्रिया योग में दीक्षित होने की प्रार्थना करे और जब गुरु प्रसन्न होकर दीक्षा प्रदान करें, तो फिर उनकी धारणा करे . . .और यह संभव होता है सेवा और समर्पण द्वारा।

2. ध्यान

धारणा के बाद 'ध्यान' होता है। 'ध्यान' शब्द ढाई अक्षरों से बना है - 'ध', 'या' और 'न'।

'ध्या' का अर्थ है - चेतना, ज्ञान, जागृति।

'न' का अर्थ है - नहीं होना।

अर्थात् अपने इष्ट के चिंतन में इतना खो जाना, लीन हो जाना, कि फिर बाहरी संसार का, अपनी देह का भी ज्ञान न रहे, इस इष्ट चिंतन के अलावा मन में कोई विचार न रहे। उस समय यदि कोई आपको सुई भी चुभो दे, तो आपको उसका पता नहीं चले और न ही आपको किसी प्रकार का दर्द अनुभव हो।

ध्यान आनन्द की प्राप्ति का पहला पड़ाव है। इस क्रिया से मन सभी तनावों और परेशानियों से मुक्त हो जाता है।

ध्यान की महत्ता के बारे में 'मण्डूकोपनिषद्' कहता है, कि मात्र 24 मिनट का ध्यान लगाने से व्यक्ति की आयु एक वर्ष बढ़ जाती है, अतः नित्य 24 मिनट का ध्यान लगाकर व्यक्ति वृद्धता और मृत्यु को परे धकेलने की क्रिया कर सकता है और इच्छा मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

3. समाधि

ध्यान के बाद तीसरी अवस्था है 'समाधि'। हम अंदर के सारे चक्रों को पूर्ण रूप से जाग्रत करते हुए अंदर पूर्ण रूप से चैतन्य रहें, जाग्रत रहें, परंतु बाहर से सुप्त हो जायें, बाहर की कोई स्थिति हमारे ऊपर हावी नहीं रहे, ऐसी स्थिति को 'समाधि' कहते हैं।

इस क्रिया में असीम आनन्द की प्राप्ति होती है और चेहरे के चारों ओर एक आभामण्डल सा बन जाता है। समाधि को 'अमृत्यु का द्वार' भी कहा जाता है। समाधि क्रिया के द्वारा ही ब्रह्म से साक्षात्कार कर अपने मूल स्वरूप को पहिचाना

जा सकता है। इस क्रिया के द्वारा साधक शून्य में अवस्थित हो सकता है, वायु गमन कर सकता है तथा वह सूक्ष्म रूप से पूरे ब्रह्माण्ड में भ्रमण करने में समर्थ हो जाता है।

वस्तुतः क्रिया योग को अपने जीवन में स्थापित करना इस मानव जीवन का सौभाग्य है। क्रिया योग के अभ्यास के द्वारा व्यक्ति सोलह कला पूर्ण होता हुआ, अणु से महान बनता हुआ अपनी कुण्डलिनी को मूलाधार से सहस्रार तक पूर्ण रूप से जाग्रत करता हुआ ब्रह्म से साक्षात्कार कर उस आनन्द को प्राप्त कर लेता है, जिसे सत् चित् आनन्द कहा गया है, जिसे अखण्ड आनन्द कहा गया है। ऐसा योगी अपने जीवन को निरंतर ऊर्ध्वगामी बनाता हुआ काल की परिधि से ऊपर उठ जाता है, काल का उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वह इच्छा मृत्यु को प्राप्त होता है, मृत्युंजयी बन जाता है।

लेकिन इस क्रिया का ज्ञान सदगुरु ही दे सकते हैं। उनकी ही धारणा कर व्यक्ति ध्यान और समाधि में पूर्णता प्राप्त कर सकता है, सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व बन सकता है।

महिलाओं के लिए ये योगासन

आज के युग में पुरुषों और स्त्रियों के लिए सुन्दर स्वास्थ्य ईश्वर की तरह है, पर अनुभव के आधार पर यह प्रमाणित हुआ है, कि चेहरे और शरीर की त्वचा को तरोताजा, स्वस्थ एवं चमकदार केवल योगासन ही रख सकते हैं।

इसीलिये हमारे तपस्वियों ने सर्वप्रथम अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए 'योग' का सहारा लिया। योग के माध्यम से तन और मन दोनों पर नियंत्रण रखा जा सकता है, तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आज चिकित्सक भी इस तथ्य को स्वीकार कर चुके हैं कि योग द्वारा तनावमुक्त एवं निरोगी काया प्राप्त की जा सकती है और यौवन को निखारा जा सकता है।

मानव जीवन भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने की भाग-दौड़ में बहुत ही अव्यवस्थित हो गया है। परिणामस्वरूप जीवन में तनाव है एवं शरीर पर भी बुरा असर पड़ता है। आज समाज में महिलाओं को घर एवं बाहर जाकर भी कार्य करने पड़ते हैं अत: आज के समय में योग का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। योग के माध्यम से आप न केवल शारीरिक रूप से स्वास्थ्य प्राप्त कर सकती हैं अपितु मानसिक स्वस्थता भी अनुभव कर सकती हैं।

योग की पुस्तकों में सैकड़ों योगासन दिये हुए हैं पर यह निर्णय सरल नहीं है कि हम किन आसनों को छोड़ें और किन आसनों का प्रयोग करें अत: इस बात को ध्यान में रखते हुए कुछ विशेष आसन दिये जा रहे हैं जो आप को शारीरिक स्वस्थता देने में अत्यन्त प्रभावशाली हैं।

सावधानियां

योगासन करते समय कुछ सावधानियां भी बरतनी चाहिए–1. भोजन करने के तुरन्त बाद योगासन नहीं करना चाहिए। 2. गर्भवती स्त्रियों को योगासन वर्जित है। 3. योगासन करते समय तंग और कसे हुए वस्त्र धारण नहीं किए हुए हों। 4. रजस्वला समय में एवं बीमारी की अवस्था में योगासन नहीं किये जाने चाहिये। 5. कुछ विशेष बीमारियों, उदाहरणार्थ–कैंसर, दमा, हृदयरोग आदि रोगियों को भी चिकित्सक की सलाह के बाद ही योगासन प्रारम्भ करने चाहिए।

नीचे जो योगासन दिये जा रहे हैं, वे सभी स्त्रियोचित बीमारियों में समान रूप से लाभदायक हैं, यदि इनका प्रारम्भ आप कल से ही करें तो मात्र दस दिनों में आप इसके चमत्कारिक परिणाम अनुभव कर सकते हैं, ये योगासन ही नहीं, अपितु मानव जीवन को वरदान स्वरूप हैं।

1. नौकासन

पीठ के बल लेटिये, सिर और पांवों को एक साथ जमीन से चार अंगुल ऊपर उठाइये और श्वांस रोककर आंखों से पंजों को बराबर देखते रहने का प्रयास कीजिये।

हृदय रोगियों के लिए यह आसन लाजवाब है, यह आसन छाती, हृदय और फेफड़ों को मजबूत बनाता है, तथा पेट के समस्त रोगों को दूर करता है, एक बार में एक मिनट तक ऐसा आसन करना चाहिए, पांच मिनट नित्य दिये जायं, तो हितकर रहता है।
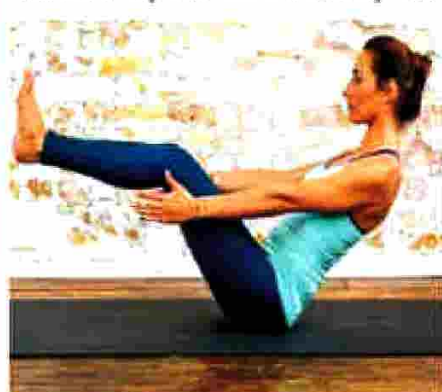
ऊपर महिलाओं के लिए उन आठ आसनों का वर्णन दिया है, जिससे पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है, और कुछ ही दिनों में काया कंचन की तरह दमकने लग जाती है।

2. हलासन

पीठ के बल लेट जाइये और फिर दोनों पैरों को मिलाकर सिर के पीछे तक ले जाकर जमीन पर टिका दीजिये इतना ध्यान रहे कि घुटने मुड़ने न पावे तथा दोनों हाथ पीठ के समानान्तर जमीन पर टिके रहें। बढ़े हुए लीवर तिल्ली या डाइबिटीज के मरीजों के लिए तो यह आसन सर्वश्रेष्ठ एवं अद्वितीय है, यदि गर्भ से सम्बन्धित कोई तकलीफ हो तो निसन्तान युवा स्त्रियों को यह आसन नित्य करना चाहिए, इससे गर्भाशय सम्बन्धी सभी कमियाँ दूर हो जाती हैं।

शरीर को स्वस्थ एवं सुदृढ़ बनाने के लिए नित्य योगासन कीजिए

3. भुजंगासन

पेट के बल लेट कर अपनी दोनों हथेलियों को दोनों बगल में छाती के समानान्तर रखिये, दोनों कुहनियां पीठ की बगल से सटी रहें, सिर जमीन पर हों, पंजे गिरे हुए हों और दोनों पैर सटे हुए हों, फिर धीरे-धीरे सांस लेते हुए सिर और छाती को हाथों पर बल देते हुए ऊपर उठाइये, प्रयत्न करिये कि जितना ज्यादा छाती और सिर पीछे की ओर झुके, उतना झुकाइये, पर कमर तथा पेट जमीन पर यथावत बना रहे, इस आसन में यथासम्भव श्वांस को रोकिये।

खांसी, दमा, ब्रोनकाइटिस तथा पाचन शक्ति को व्यवस्थित रखने के लिए यह आसन सर्वोत्तम है, आँखों के लिए यह लाजवाब टॉनिक है।

4. धनुरासन

पेट के बल लेट जाइये, दोनों घुटनों को मोड़कर पैरों को पीठ के समानान्तर ऊपर उठाइये तथा फिर अपने दोनों हाथ पीछे की ओर ले जाकर दोनों पैरों को टखने के पास मजबूती से पकड़ लीजिये, फिर दोनों जांघों, सिर व छाती को जमीन से ऊपर उठाइये, पैरों को आगे की ओर तथा हाथों को पीछे की ओर खींचने की कोशिश कीजिये इससे पूरे शरीर का आकार धनुष की तरह हो जाता है।

यह आसन कई रोगों में लाभदायक है, विशेषकर किडनी से सम्बन्धित रोग, डिसेन्टरी तथा आंतों की बीमारी में तो आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है, वक्ष स्थल को पुष्ट करने के लिए यह सर्वोत्तम आसन कहा जाता है।
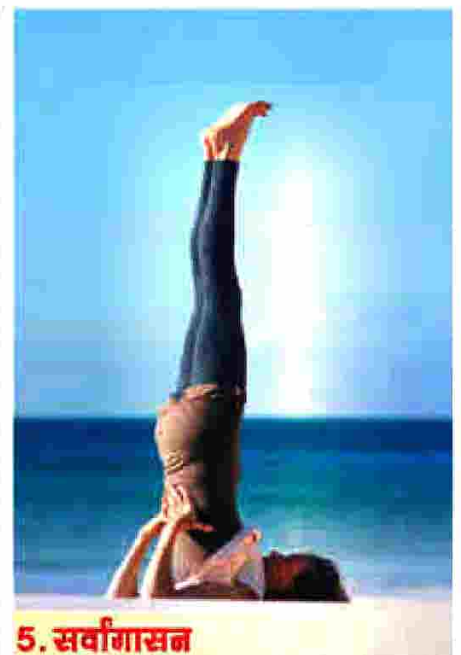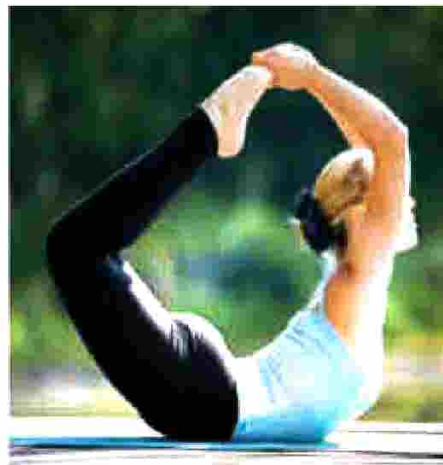
5. सर्वांगासन

पीठ के बल लेट जायें और दोनों पैर धीरे-धीरे ऊपर उठाइये अपनी दोनों कुहनियों को समानान्तर जमीन पर टिका कर दोनों हाथों के पंजों से कमर पकड़े रखिये, इस प्रकार दोनों पैर जंघाएं व कमर ऊपर उठा दीजिये, जमीन पर केवल सिर, गर्दन व कंधे ही टिके रहेंगे।

स्त्रियोचित्त बीमारियों को दूर करने में यह सर्वोत्तम आसन है, स्मरण शक्ति की कमी, स्वप्नदोष, शरीर के विकास में न्यूनता, डाइबिटीज, बहरापन आदि रोगों में तो यह आसन सर्वोत्तम कहा गया है, इससे मन पर पूरा नियन्त्रण रहता है।

6. बद्ध पद्मासन

पद्मासन लगाकर बैठ जाइये फिर दोनों हाथ पीठ के पीछे ले जाकर बायें हाथ से बायें पैर का तथा दाहिने हाथ से दाहिने पैर का अंगूठा पकड़िये, सिर और रीढ़ की हड्डी सीधी रखिये।

दुबले और कमजोर लोगों को यह पुष्ट, मजबूत और स्वस्थ बनाता है, गर्दन कंधे और पीठ के दर्द से छुटकारा दिलाता है।

7. गोमुखासन

बैठ जाइये बायें पैर को मोड़कर उसकी ऐड़ी और पैर को दाहिने नितम्ब के नीचे रखिये, फिर दाहिना पैर मोड़कर

बायें पैर पर स्थित करें जिससे दाहिने तथा बायें दोनों घुटने एक दूसरे के ऊपर आ जायें।

अब दाहिना हाथ दाहिने कंधे पर से पीठ की ओर ले जाइये बायां हाथ बाई बगल के नीचे से पीठ की ओर ले जाकर परस्पर जोड़ दीजिये।

हाथ पैरों की नाड़ियों की दुर्बलता पीठ के दर्द, डाइबिटीज, प्रमेह, बहुमूत्र, धातु दुर्बलता तथा लूकोरिया में यह आसन आश्चर्यजनक रूप से सफलता दायक है।

8. चक्रासन

दोनों पैरों के बीच लगभग डेढ़ फीट का फासला रख कर खड़े हो जायं दोनों हाथ उठा लें और फिर पीछे की ओर धीरे-धीरे पीठ और कमर झुकाती चली जाय, जब हाथ जमीन तक पहुंच जाय तब हथेलियों को नीचे जमीन पर टिका दें, इस प्रकार यह चक्र की तरह पूर्ण आसन बन जाता है, शुरू में यदि पूर्ण चक्रासन नहीं बने तो थोड़ा-थोड़ा पीछे की ओर झुकने का प्रयत्न करें, कुछ ही दिनों में आप अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लेंगे।

मानसिक असन्तुलन, मानसिक तनाव, सिर दर्द, आलस्य और रीढ़ की हड्डी से सम्बन्धित रोगों को दूर करने का यह सर्वोत्तम आसन है, बालों के स्वास्थ्य एवं सुषुम्ना जागरण के लिए भी यह श्रेष्ठ आसन कहा गया है।

Any Friday

TRIPUR SUNDARI SADHANA

Gateway to Fortune

Sadhana means to ever keep rising in life. A person who has chosen the path of Sadhanas never has to face defeat or disappointment provided he uses the Sadhanas and their powers for creative purpose and not to harm anyone or to fulfil wrong wishes.

There are thousands forms of Sadhanas of Shakti or the Divine Mother. But among all these rituals the Sadhana of Tripur Bheiravi holds a distinct position. Such is the power of Mother Tripur Sundari that even while accomplishing Sadhana the Sadhak becomes replete with divine energy. Even the ancient Rishis highly acclaimed this wonderful Sadhana. The great Rishi Vashishth once said-Very lucky are those who get to try Tripur Sundari Sadhana.

Maharishi Vishwamitra goes a step forward and states-**Unfortunate are those who overlook this Sadhana and try other small rituals.**

Guru Gorakhanath once commented-My life would have remained unfulfilled if I had missed trying the Tantra form of Tripur Sundari Sadhana.

Jagadguru Shankaracharya said-**The essence of spiritual Sadhanas is Tripur Sundari Sadhana. Through it one could succeed in all other Sadhanas in the world.**

The Goddess Tripur Sundari, one of the ten Mahavidyas, brings good luck, beauty, magnetism, wealth, health and all comforts in life along with spiritual upliftment.

The Sadhana can be tried on any Friday. After 10 pm. in the night take a bath and wear fresh white clothes. Take water in the left palm and sprinkle it with wooden seat covered with white cloth place a betel nut in a copper plate and worship it in the form of Lord Ganpati. Offer on it vermilion, flowers and incense. Light a ghee lamp. Then pray to the Guru for success in the Sadhana. Chant one round of Guru Mantra. Then in another plate place ***Tripur Sundari Yantra.*** On either side of the Yantra place ***Swarnnavati Gutika*** and ***Mrityunjay Rudraksh.***

Take water in the right palm and pledge thus-I (speak your name) am trying this Sadhana of Goddess Tripur Sundari. May the Mother Goddess bestow success upon me.

Then let the water flow to the floor. Next chant thus with the palms joined together and the eyes fixed on the Yantra.

Baalaarkaayutatejasam Trinayanaam RAktaambarollaasinee, Naanaalankritiraaj-maanavpusham Baaloduraatshekhraam. Harateirikshudhanah Srinnim Sumashram Paasham Mudraa Vibhrateem Shree Chakraasthitsundareem Trijagataamaadhaar-bhotaam Smaret.

Next offfer vermilion, rice grains and flowers on the Yantra. Also offer some sweet made from milk. Thereafter chant 21 rounds of the following Mantra with ***Navdurga Tribhuvan Mohini rosary.***

Om Bhagwti Tripur Sundari Sarva Kaarya Siddhi Dehi Dehi Kaameshvaryei Namah.

After Sadhana place the Yantra, Gutika, Rudraksh and rosary in your worship place. Through this Sadhana one can have Dharma (righteousness). Arth (wealth). Kaam (wordly pleasures) and Moksha (spiritual totality) in one's life. If the Sadhana is repeated after 21 days then the results are even better. After the second round of the Sadhana drop all the articles in a river or pond.

Sadhana Articles- 450/-

Any eighth day of Lunar Month

KAALGYAN SADHANA

LIKE TO FORESEE FUTURE PROBLEMS ?

Lakshman did and waiting for the most propitious moment Ravan pierced the seven leaves placed one over the other. To his surprise Lakshman found that the top leaf had transformed into gold. second into silver. third into copper and so forth and the last leaf remained as it was.

Who would not like to do so ? How easy life would become once one could know what is in store forone in the near future !

Time has its own value and those who do not care to respect time are not respected by time. Fame and success fall to the share of those who know how to recognise the correct moment and make the best use of it.

But it is extremely difficult to be able to have the capability to recognise time. It is mostly an inborn capability and few people do have the uncanny knack of choosing just the right moment.

But it would also be wrong to think that this capability cannot be acquired. Through a capable Guru one sure can gain this amazing power.

Both Lord Ram and Ravan had gained the same from their Guru Vishwamitra. Ravan misused the power and used it only for selfish gains while Lord Ram used it for good ends.

When Ravan was about to die Lord Ram asked Lakshman to go and acquire the knowledge of Kaal Gyaan (science of recognising value of each moment) from Ravan.

Lakshman obeyed his brother and went to Ravan. Ravan explained to him the importance of each moment and to demonstrate the fact he asked Lakshman to bring seven leaves and a needle.

Lakshman did and waiting for the most propitious moment Ravan pierced the seven leaves placed one over the other. To his surprise Lakshman found that the top leaf had transformed into gold, second into silver, third into copper and so forth and the last leaf remained as it was.

Ravan thus explained that even the hundredth fraction of a second has its importance.

One can very well gain a similar power to distinguish the importance of each moment by performing the following ritual. It is a very powerful Sadhana that can simply change one's life for then one could use the power to take decisions at the right moment and even avoid dangerous moments.

This is basically a Sadhana of Mahakaal, one of the forms of Lord Shiva and hence one should meditate on the divine form of the lord whey trying the Sadhana.

On *the eighth day of the lunar month* try this ritual late in the night. Have a bath and wear clothes which are white.

Then sit facing North on a white mat. Cover a wooden seat with a white cloth and on a mound of rice grains place of *Mahakaal Yantra.*

On the right side of the Yantra place *Mahakaal Gutika* and then light a ghee lamp. Offer flowers and rice grains on the Gutika and Yantra.

Then chant 21 rounds of the following Mantra with *Hakeek rosary.*

Om Hloum Hleem Kaal-tatvaay Phat

After Sadhana wear the Gutika in a thread around your neck. Then for 21 days chant five round of the Mantra daily in the night before the Yantra. Light a ghee lamp daily. After 22 days drop the Yantra and rosary and also the Gutika in a river or pond.

Sadhna articles -540/-

किसी भी व्यक्ति का चेहरा उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यदि आपके मुख पर तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वत: सामने वाला व्यक्ति आपसे प्रभावित होगा ही। शरीर यदि दुर्बल भी हो, परंतु यदि मुख पर आभा है, सौन्दर्य है तो कोई भी आपसे बात करने को लालायित होता है। सौन्दर्य आकर्षण दीक्षा द्वारा जहां स्त्रियों के सौन्दर्य में गजब का निखार आने लगता है, काया कंचन हो जाती है, वहीं पुरुषों के मुखमण्डल पर तेजस्विता और रौब आ जाता है। बड़े-बड़े नेताओं अफसरों, सुन्दरियों में यह गुण प्राकृतिक रूप से व्याप्त होता है। यदि आप व्यापारी या कर्मचारी हैं और सामने वाले से अपनी बात मनवाना चाहते हैं या आप इण्टरव्यू में या अफसर के सामने घबराते हैं, तो इस दीक्षा के माध्यम से स्वयं अपने चेहरे पर आकर्षण और सम्मोहन ला सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को हर किसी से अनुकूलता ही प्राप्त होती है। इसके साथ ही आपके व्यक्तित्व में निखार आता है, और सौन्दर्य प्राप्त होता है।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

सौन्दर्य आकर्षण दीक्षा

योजना केवल 16, 17, 23 एवं 24 जनवरी 2021 इन चार दिन के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 64 पर देखें।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमालीजी

के विभिन्न शहरों में दीक्षा कार्यक्रम के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पटना में 10 जनवरी 2021

पता महाराणा प्रताप भवन, दिनकर चौराहा, राजेन्द्र नगर, टेम्पो स्टेण्ड, पटना

आयोजक-8210257911, 9199409003, 9304931127, 9572394221, 9934682563, 9905022385, 9661666982, 9608241284, 9934236464, 8809219458, 8757794141, 9334738354, 9955255788, 9934583245, 9934967343

नागपुर में 26 जनवरी 2021

पता संताजी सभागृह, बुधवार बाजार, सोमवारी क्वार्टर, नागपुर

आयोजक-नरेंद्र काटेखाये-9403419979, छत्रपाल सिंघ गौर-9422673269, सारंग चौधरी-9921672114, किशोर वैद्य-9552590383, गणेश भोयर, गुलाबसिंघ बैस, प्रेमसिंघ बघेल, अशोक पांडे, आकाश गुप्ता-9028798373, शामलालजी, चन्द्रकान्त दोड, शिवा गवाने, वतन कोकास-9422114621, पंकज घाटे, वासुदेव ठाकरे-9764662006

सूरत में 30 जनवरी 2021

पता श्री सूरती मोध वानिक वादी, लाल दरवाजा मेन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-395003

आयोजक-विजय पटेल-9925104035, विवेक कापड़े-7984064374, तरंग पटेल-9898965511, नीरज पटेल-9624159779, प्रियंका-9374012333, दिव्येश-9374716532

मुम्बई में 31 जनवरी 2021

पता श्री वल्लभ शिक्षण संगीत आश्रम, वल्लभ विद्यालय, प्लॉट नं. 6, स्वामी श्री वल्लभदास मार्ग, गुरू कृपा बिल्डिंग के पास, सिओन वेस्ट, मुम्बई-400022

आयोजक- तुलसी महतो-9967163865, शान्तिलाल पाल-9768076888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार-9867621153

सभी शिष्य दीक्षा प्रोग्राम में आने से पूर्व आयोजकों से सम्पर्क कर समय लेकर ही आयें

अहं ब्रह्मास्मि
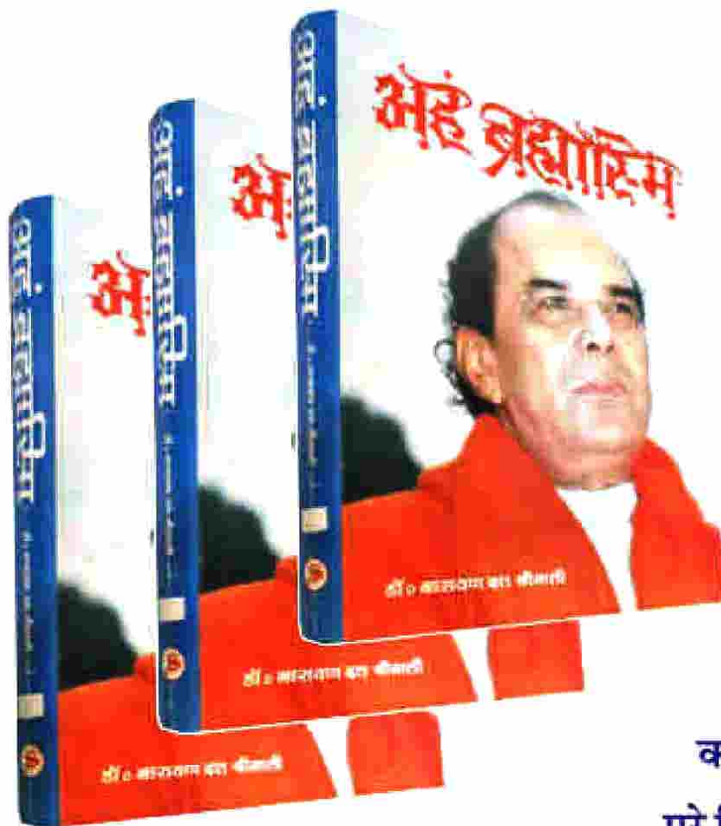
न्यौछावर- 330/-

मनुष्य और पशु में इतना ही अंतर है कि पशु अपने आपको समझने का भाव नहीं रखता, जबकि मनुष्य सद्‌गुरु की सहायता से पशुत्व से ऊपर उठकर आत्मा की गहराई तक उतर कर, उस विराट सत्ता के दर्शन कर सकता है जिसे ब्रह्म कहा गया है। उस स्थिति तक पहुंच सकता है जिसे '**पूर्ण मदः पूर्ण मिदं**' कहा गया है, उस स्थिति से एकाकार हो सकता है, जिसे '**ब्रह्माण्ड**' कहा गया है।

पूरे विश्व में इतनी सहज गति से, इतने जटिल रहस्य को सरल भाषा में स्पष्ट करने वाला यह पहला ग्रंथ है जो संत प्रवर योगीराज तत्ववेत्ता सद्‌गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की सशक्त लेखनी से उभर कर हमारे सामने प्रस्तुत है '**अहं ब्रह्मास्मि**' ग्रन्थ के रूप में।

एक जीवन्त, सशक्त कृति, पशुत्व से ऊपर उठकर मनुष्यत्व तक पहुंचने का सरल सोपान, मल-मूत्र से भरी देह को ब्रह्ममय बना देने की श्रेष्ठ क्रिया, एक अनमोल ग्रन्थ।

यह ग्रन्थ अभी सीमित संख्या में ही प्रिंट हुआ है अतः शीघ्र प्राप्त करने के लिए आप 330 + 70 (डाक खर्च) = 400/- (चार सौ रुपये मात्र) 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' जोधपुर के निम्नलिखित खाते में जमा करा दें और वाट्स अप नं. 8890543002 पर पैसे जमा कराने की रसीद एवं अपना नाम व पूरा पता, पिन कोड नं. के साथ शीघ्र भेजें जिससे आप यह अनमोल ग्रन्थ शीघ्र प्राप्त कर सकें।

खाते का विवरण

- खाते का नाम : नारायण मंत्र साधना विज्ञान
- बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
- खाता संख्या : 31469672061
- IFSC CODE : SBIN0000659

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 December, 2020
Posting Date : 21-22 December, 2020
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : जनवरी एवं फरवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
23-24 जनवरी
27-28 फरवरी

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
16-17 जनवरी
06-07 फरवरी

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002